A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 433 Subject Kavya

Name of MSS Kavi Priya

Author Kesavadasa

Period Folios 184

Script Devnagiri Source Balasahai Shastri, Alwar, Rajasthan

Missing Folios

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कविप्रिया

केशवदास

[illegible]

P.U.L.

433

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

Form 13.

PANJAB
UNIVERSITY
LIBRARY

Class No..............................

Author No..........................

Hindi MS.
4 H 6
K 21
433

कविप्रिया ; केशवदास कृत ;
गोविंद नरवण पु० चूनी लाल भट्ट
लिपिकार से राजगढ़ में २ भादों सुदी
१८८६ वि० लि०
६२ पत्रांक ॥ लं० [illegible] २० पं० प्र० पृ०

ह० लि०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

433

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

(6)

53

433

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

433

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative.

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

PUNJAB UNIVERSITY LIBRARY

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नरस्त्रमतन्त्रमीनिवाजि १०॥ अथकुटिलवव
र्णनं॥दोहा॥ अलकअलिकभ्रूकुंचिका किं
सुकसुकमुषदेषि अहिकटाक्षधनुवीजरी
केदनभग्नविसाष १० बालचंद्रिकाबाल
ससि हरिनषसूकरदंत कुद्दालादिकचंद्रि
ये कपटीकुटिलअनंत ११॥ कु ल हा र
म या॥ भोरजवीवृषभांनसुताअलसी
विलसीनिसिकुंजविहारी केसवपोंछति
अंचलवारविपीकसुलीकगाईमिटिकारी
वंकलगेकुचवीचनषक्षतदेषिभईदृगदूनी
लजारी मानोंवियोगवराकुंहन्योंजुगमैल
कीसंधिनइन्नवेडारी १२ अ त्रि ण हा
र म या॥ लोचनत्रिलोचनकेकेसवविलो
कविधिपावककेकुंडसीत्रिकोणकीनीधर
नी सोधीहैसुधारिपृथुपरमपुनीतरूपकरि
करिपूरनदसकुंदिसिकरनी वालैसोजगत
जगसुभगासुमेरुतामेंजाकीजोतिहोतिलो
कलोकमनहरनी थरूचरूजीवहविहोमि
यतजुगजुगहोताहोतकालुनजुगनजाड्व
रनी १३॥ अथसुवर्तवर्ननं॥ दोहा॥

श्रीगणेशायनमः॥ ॥अथकविप्रिया
लिष्यते॥ ॥गणेशस्तुतिप्रथमदोहा
गजमुषसनमुषहोतहीं॥ विघनविमुष
ह्वैजात॥ ज्योंपगपरतपयागमग॥ पापप
हारविलात॥ १॥ वांनीजूकेवरनजुग॥
सुवरनकनिपरिमान॥ सुकविसुमुषकुरु
षेतपर॥ होतसुमेरुसमान॥ २॥ गण
पतिदंतवर्ननसवैयाइकतीसा॥ श्री
सचसत्वगुणकोकिसत्यहीकीसत्याशु
तसिद्धकीप्रसिद्धिकिसुबुद्धिवृद्धिमांनिये
ग्यांनहीकीगरिमाकिमहिमाविवेकहो।
कीदरसनहीकोदरससरउरश्रांनिये॥
पुण्यकोप्रकासवेदविद्याकोविलासकि।
धौंजसकोनिवासकेसोदासजगिजांनिये
मदनकदनसुतवदनरदनकिधौंविघ
नविनासवकीविधिपहिचांनिये॥ २॥ दो
हा प्रगटपंचमीकोभयो॥ कविप्रियाअ
वतार॥ सोरहसैअठावना॥ फागुनसु
दिबुधवार॥ ३॥ नृपकुलवरनौंप्रथमहीं
अरुकविकेसववंस॥ प्रगटकरीजिनि

कविप्रिया ॥ कवितानौ अवतंस ॥ ४ ॥
अथनृप वर्णनंदोहरा ॥ ब्रह्मादिककै।
विनयतैं हरनसकलभुवभार ॥ सूरज
वंसकर्यौप्रगटरामचंद्रअवतार ॥ ५
तिनकेकुलकलिकालरिपु ॥ कहिकेस
वरनधीर। गहिरवारविरमानजुत। प्रग
ट्यौनृपवीर ॥ ६ ॥ कर्णनृपतितिनकेभ
यौ ॥ धरनीधर्मप्रकास ॥ जीतिसबैजगती
कर्यौ। वाराणसीनिवास ॥ ७ ॥ प्रगटक
र्नतीरथभयौ। जगमैंजिनकेनाम। तिनके
अर्जुनपालनृप ॥ भेयमहोनीग्राम ॥ ८ ॥
गढकुंडारतिनकेंभये। राजासाहिनुपाल
महजइंद्रतिनकैंभये। कहिकेसवरिपुका
लु ॥ ९ ॥ राजाम्यौंनगढ्योभये। तिनकेपूरन
माजु ॥ न्योनगढ्योकेसुतभये। तिनकेस
रमसान ॥ १० ॥ रामसिंहराजाभये। तिन
केसूरसमान ॥ रामचंद्रतिनकैंभये। राजा
चंद्रप्रमान ॥ ११ ॥ राजामेदिनिमल्लुभये
तिनकेकेसवदास ॥ अरिमदमर्दनमेद
नी। कीनोधर्मप्रकास ॥ १२ ॥ राजाअर्जुन

ह्यौ भये । राजा अर्जुन रूप । श्री नारायण कौ
मषा । कहे सकल भुव भूप ॥ १३ ॥ महा दान
षोडस दये । जीती जगत दिसि चारि । चारौं वेद
अगारहौं । सुने पुरान बिचारि ॥ १४ ॥ रिपुषंड
न तिनके भये । राजा श्री मल्लषानु । जुद्ध जुरें
न मुरे कहूं । जानत सकल जहानु ॥ १५ ॥ नृ
प प्रताप रुद्र सम भये । तिनके रुद्र अर्जुन सुरुद्र
स्या दान कौ कल्पतरु । गुननिधि सील समु
द्र ॥ १६ ॥ नगर बौड़छो जिन रच्यौ । जग मैं जाग
ति किति । रू सरत्न मि अहि दई । जिन पुरा
न की हृति ॥ १७ ॥ भरथषंड मंडनु भयौ । ति
नके भार थचंद्रु । देस रसान तजा न जिहिं ।
फेर्यो ज्यों हरिचंद्रु ॥ १८ ॥ मरमा हि अस लेम
कैं । उर माली अमममर । एक चत्रुभुज दीन
यौ । ताकौ मिरू तिहि वर ॥ १९ ॥ उपजन पा
यो पुत्र नहिं । गयौ सु प्रभु सुरलोक । मारदरम
धुकर साहित ब । भुप भये भुव लोक ॥ २० ॥
जिनके राज रमावसैं । केसव कुमत्ल कि सा
न । सिंधु दिसा जहिं वार हूं । पार बजाय नि
सांन ॥ २१ ॥ तिन पर चढ़ि आये जु रिपु । केस

कवि० २

5

वगयेनेहारि। जिनपरिचढिआपुनुगये। आयेतिनहिसिंहारि॥२२॥ मबरमाहिअकबरअवनि। जीतिलईदिमचारि। मधुकरसाहिनरेसगढ। तिनकेलीनेमारि॥२३॥ षानगानैंसुलतानकों। राजारावतिबाढि। हाय्योमधुकरसाहिसों। आपुनमाहिमुगाढि॥२४॥ माध्योस्वारथमाथहीं। परमारथसोंनेहगयेसुषभुवैकुंठमग। ब्रह्मरंध्रतजिदेह॥२५॥ तिनकेकूलहरामसुत। लकुरेहोरिलराउ। रिपुषंडनकुलमंडनौ। पूरनपुहरिपनाव॥२६॥ रनस्योरनसिंहपुनि। रतनसेंनसुनिईस। बांध्योआसुजलालदी। बांनोंजाकेसीस॥२७॥ इंद्रजीजरनजीतपुनि। शत्रुजीतबलबीर। वरसिंहदेवप्रसिद्धपुनि। हरिसिंघद्योरनधीर॥२८॥ मधुकरसाहिनरेसके। इतनेंनयकुमार। रामसाहराजाभये। तिनमेंबुद्धिअपार॥२९॥ घरबाहिरजहंइतहां। केसवदेसविदेस। सबकोकृयहहीकहे। जीत्योरामनरेस॥३०॥ रामसाहिसोंमरता। धर्मनपूजेआनु। जाहिमरावततसवेदा। अकबरसोंसुलतानु॥३१॥ करजोरैं

॥२॥

गढ़ जहां । आगैं हिमसिकेई स । ताहित हां बैठक
रई । अकबर से अवनीस । ३२ । जाके दरसन ।
कों गये । उघरे रव किंवार । उपजी दीपति दीप की
देषत एक ही वार ॥ ३३ । ता राजा कौ राज अब । राज
त जगति मांहि । राजा रांनां राउ सब । सेवत ताकी
छांह । ३४ । तिनके सुत ग्यारह भये । जे रहसाहिसं
ग्राम । दहन दहन राज में । जिन जीते संग्राम ।
३५ । भरतषंड मंडनु भये । तिनके भारथ मांहि ।
भारथ भगीरथ पारथहि । उनमांन तस व तांहि ।
३६ । सुत सोदर नृपराम के । यद्यपि बहु परिवा ।
रु । तद्यपि सब इंद्रजीत सिर । राजकाज को भारु ।
३७ । कल्पवृक्ष सौ दांनि दिनि । सागर सौ गंभीर । के
सव सूरौ सूर सौ । अर्जुन सौ रनधीर ॥ ३८ । ता हिकों
छोवा कमल सौ । गढ़ दीनौ नृप रांम । विधि ज्यौं ।
साधत बेगि कैं । नृपति वांम अबांम । ३९ । कस्यो
अथो रोराज कैं । सा मन सब संगीत । ता कों देष
त ईंद्र ज्यौं । इंद्रजीत रनजीत । ४० । बाल विहित
म बाल सब । सील रूप गुन वृद्ध । यदपि भस्यो
अवरोध षट । पातर परम प्रसिद्ध । ४१ । राइप्रवी
न प्रवीन अति । नव रंग राय सुवेस । आति वि

कवि·
॥२॥
7

चित्रनयनानिपुन। लोचनललितसुदेस॥४२
मोहतिमागररागकी। नानितरंगतरंग। रंगराय
रंगवलितगति। रंगमूरति अंगअंग॥४३॥ तंत्री
नुवरिसारिका। सुरसुरनसौं लीन। देवसभासी
सोभियै। राइप्रवीनप्रवीन॥४४॥ सत्याराइप्रवी
नजुत। सुरतरुसुरतसनेह। इंद्रजीततासौं बधे
केसवदाससनेह॥४५॥ नरीकिंनरीआसुरी॥सु
रीरहतसिरनाइ। नवरसनवधाभगतिसौं। सोभि
तनवरंगराइ॥४६॥ हावभावसंभावना। देत्या
ससुषदाइ। पीयमनेरंतकुलाइगति। नवरं
गनवरंगरायइ॥४७॥ भैरोंजुतगौरीसंयुत। सुरत
रंगनिलेषि। चंद्रकलासीदेषियै। नैंनविचित्रा
देषि॥४८॥ नयनवयनरतिमयनसम्। नैंनवि
चित्रानांम। जयनसीलपतिमयनमनैनी। ससिक
रतबिश्राम॥४९॥ नागरिसागरिरागकी। सोह
तितानतरंगि। परिपूरनप्रापिदरसदिन। वार
नजांभअनंगि॥५०॥ तानेतानतरंगकी। ततु
ननुबंधतधांन। कलाकुसमरससरतिकी।
अतिअयानततनत्रांन॥५१॥ संगायकरअंगु
ली। सकलगुननैंनकीमूरि। लागतमूढमगार

॥२

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गमुष। सबदरहतिमरपूरि॥ ५२॥ रंगराइकार
मुरजमुष। रंगमूरतिमदचारु। मनौपटैहैसा।
थही। सबसंगीतबिचारु॥ ५३॥ अंगराजीनसं
गीतके। गावनगुनीअनंत। रंगमूरतिअंगरंग
गश्रति। राजतिमूरतिवंत॥ ५४॥ नाचतिगाव
तिपढतिसब। सबैवजावतिवीन। तिनमैंक
रैकवित्तइक। राइप्रवीनप्रवीन॥ ५६॥ प्रवीन
राइपरवीनसौं। पराविननिमनसुरक। अपर
वीनकेसवकहा। पराविननिमनदुरक॥ ५७॥
रतनाकरलालतिमदा। परमानंदहिलीन॥
अमलकमलकनीयकर। रमाकिराइप्रवीन
॥ ५८॥ राइप्रवीनकिसारदा। सुचिरुचिरंजितअं
ग॥ वीनापुस्तकधारनी। राजहंससुतअंग
॥ ५९॥ वृषभवाहनीअंगउरु। वासुकिलस
तनवीन। सिवसंगसोहैसरवदा। सिवाकिरा
इप्रवीन॥ ६०॥ सविताजूकविताद ई। ताकंकु
परमप्रकास। ताकेकाजेकविप्रिया। कीनीके
सवदास॥ ६१॥ इतीश्रीमहिविधभूषनभूषि।
तायांकविप्रीयायांराजवंसवर्णनानामप्रथ
मप्रभावः॥ १॥ ॥ अथकविवंसवर्णनंदोहरा

ब्रह्मादिककेचित्ततें।प्रगटभयेसनकादि
उपजेतिनकेचित्ततें।सकलसनाढ्यजाति
॥१॥परसरामभृगुनंदतब।तिनकेपायपषा
रि।दयेबहत्तरग्रामसब।उत्तमविप्रविचारि
॥२॥जगपावनवैकुंठपति।रामचंद्रइहिनां
म।मथुरामंडलमेंदये।तिन्हेंसातसैग्राम
॥३॥सोमवंसयदुकुलकलस।त्रिभुवनपा
लनरेस।फेरिदयेकलिकालपुर।तेईतिन
हिसुदेस॥४॥कुंभवारउद्देसकुल।प्रगटेति
नकेबंस।तिनकेदेवानंदसुत।उपजेकुल
अवतंस॥५॥तिनकेसुतजयदेवजग।थापे
पृथ्वीराज।तिनकेदिनकरसुकलसुत।प्रग
टेपंडितराज॥६॥दिल्लीपतिअल्लावदी॥
कीनीकृपाअपार।तीरथगयासमेतजिन
अकरकरेबहुवार॥७॥गयागयाधरसुतभ
ए।तिनकेआनंदकंद।जयानंदतिनकेभ
ये।विद्याजुतजगवंद॥८॥भयेत्रिविक्रम।
मिश्रतब।तिनकेपंडितराइ।गोपाचलग
ढगोपति।जिनकेपूजेपाइ॥९॥भावशर्मे
तिनकेभये।तिनकेबुद्धिअपार।भयेसरो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तमभिश्रनब षटदरसनश्रवतार ॥१०॥ मान
सिंहसौंगेसकरि । जिनेजीतीरिसिचारि । ग्राम ।
वीसतिनकोदए राजापाइपषारि ॥११॥ तिनके
पुत्रप्रसिद्धजग । कीनहरिहरिनाथ । तोवरयति
तजिश्रोरसों । मृत्तिनबाड्योहाथ ॥१२॥ पुत्रभय
हरिनाथके । कृष्णदत्तसुतवेष । सभामाहिसंग्रा
मकी । जीतीगदीश्रसेष ॥१३॥ तिनकोहत्तिपुरं
नकी । दीनीराजारुद्र । तिनकेकासीनाथसुत । सो
मैबुद्धिसमुद्र ॥१४॥ जिनकौंमक्षकरमाहिनृप ।
बकुतकस्योसनमान । तिनकेसुतबलिभद्रज
ग । प्रगटबुद्धिनिधान ॥१५॥ बालकतेंमक्षमाहि
नृप । जिनपैंसुन्योपुरान । तिनकेसोदरहैभये
केसवदासकल्यान ॥१६॥ भाषाबोलिनजांनहीं
जिनकेकुलकेदास । भाषाकविभोमंदमति । ति
हिंकुलकेसवदास ॥१७॥ इंद्रजीततासोंकह्योमा
गनमध्यप्रयाग । मांगौंसवदिनएरस । कीजेकृपा
सभाग ॥१८॥ यांहीकह्योजवीरवर । मागिजुमनमैं
होइ । मांग्योपानुवदरबारमैं । माहिनरोकैकोइ ॥१
९॥ गुरुकरिमांन्योंइंद्रजित । तनमनकृपाविचार
ग्रामदएइकतीसतब । ताकेपायपषारि ॥२०॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

इंद्रजीतकेंहेतुपुनि॥राजारामसुजांन॥मांन्योंमीत्रीमित्रकै॥केसवदासप्रमांन॥२१॥इतिश्रीमद्विविषभुषणभूषितायांकविप्रियायां॥कविवंशवर्णनंनांमद्वितीयप्रभाव॥२॥

समुझैंबालाबालकनि॥वरननपंथअगाध॥कविप्रियाकेसवकरी॥छमजकुकविअपराध॥१॥अलंकारकरतानिको॥सुनिसुनिविवधविचार॥कविप्रियाकेसवकरी॥कविताकोसिंगार॥२॥सुगुनपदारथअर्थजुत॥सुवरनमयसुभसाज॥कंठमालज्यौंकविप्रिया॥कंठकरकुकविराज॥३॥राजनरंचनदोषजुत॥कवितावनितामित्र॥बुंदकिमंदिरापरतज्यौं॥गंगाघटअपवित्र॥४॥विप्रनरंगीकीजइं॥मूठनकीजेमित्र॥प्रभुनकृतघ्रीसइजे॥दूषनसहितकवित्त॥५॥अथकवित्तदोष॥बधिर१अंध२अरुपंग३नजि॥नग्न४मृतकपमतिसुद्ध॥अंधविरोधीपंथकों॥बधिरतिसप्दविरुद्ध॥६॥छंद॥विरोधीपंग३गानि॥नग्नध्जुभूषनहीन॥मृतक कहावैअर्थविनु॥केसवसुनकुपवीन॥७॥

अथअधकवित्तवर्णनं॥कोमलकंजसफू

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

12

लरहेकुचदेषतहीपतिचंदविमोहे। वानरमे चलचारुविलोचनकोयरुचेरुचिरोवनकोहे माषनमोमधकैशेअधरामृतकेसवकोउपमा कविहाहे। गहीहेकामिनदामिनसीमृगभा मिनसीगजगामिनमोहे॥१॥ अथप्राकृविरो धीवर्णनं सिद्धिसिरोमनिसंकरसृष्टिसंहारत साकसमूहभरीहे। सुंदरमूरतिआनमभूति कीजारिघरीकमेंछारिकरीहे। शुत्रचिरूप विलोचनमोंमतिकेसवदामकीध्यानअरी हे। वंदततेदवअदेवसबैमुनिगोत्रसुताअर धंगधरीहे॥२॥ दोहरा॥ तोलनतूलरहेनज्यो कनकतुलातिलआध। त्योंहीछंदोभंगको सहिनसकेश्रुतिसाध॥३॥ अथछंदविरोधीपं ण धीरजमोचनलोचनलोलचलोविलोकिके लोककीलीकतिछूटी। फाटिगयश्रुति ग्यानकेकेसवआषिअनेकविवेककीफूटे छोडिदईसरितासरकांममनोरथकेरथकी गतिषूटी। त्योनकहेकरतारवेवारकज्यो। चितयोउहिवारवधूटी॥३॥ नग्नवर्णनंसवै या॥ तोरितनीटकटोरिकपोलनिजोरिर हे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कवि
॥ ३॥
13

करत्यौंन रहौंगी। पांनषवाइ सुधारस पाइगहे
श्रमैं हैं नग हौंगी। केसव चूक सवै सहिहौं मु
खचूंबि चलेयह पैंन सहौंगी। कैफिरि चूंबन
देमुष मोहि के आपनी धाइ सौं जाइ कहौंगी
५॥ अथ मृतक जाति वर्णनं॥ सवैया॥ कील
कमाल कलाल कराल निमाल चिसाल नि
चालि चलीहै। हाल विहाल नितालत माल
प्रवाल कवाल कवाल ललीहै। लोलवि।
लोलक लोल अमाल किबालक मालकि।
कालक लीहै। बालनि वालक पालनि काल
कगाल गलाल गराल गलीहै॥ ५॥ अथक
वित्तदूषनवर्णनं॥ दोहरा॥ आगनुन कीजहीन
रसु। अरु केसव जतिभंग। वर्नप्रयोग न कर्न।
कटसुन कुसकल कविराज। सवै अर्थ पुनरु
क्ति के। छाडकुमिगरसा ज॥ ८॥ देस विरोध वं
रनिये। कालकलानि निहारि। लोक न्याइ
आगमनि के। तजो विरोध विचारि॥ १०॥ अ
गनागन कथनं दोहरा॥ केसवगन सुभ।
सर्वदा। अगन असुभ उर आंनि॥ चारि चारि
विधि चारु मति। गनु अरु अगनु वषांनु॥ ११

न

६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

14

जो

मगनगनगनभनिमगानपुनियगनसदासुभजा
निः। जगनरगनअरुसगनसुनितगनहिअ
सुभवषानि॥२२॥ मगनत्रिगुरुत्रिलघुमय। के
सवनगमयमान। भगनआदिगुरुआदिलघु
यगनवषांनिसुंन॥२३॥ जगनमध्यगुरुजानियें
रगनमध्यलघुहोय। सगनअंतगुरुअंतलघु।
तगनकहैंबकोय॥२४॥ अथगनदेवताकथ
नदोहरा॥ महीदेवतामगनकी। नागनगनके
देषि॥२५॥ सुरजजांनकुजगनको। रगनुसिषी
मयमांनि। वायुसमुझियेसगनको। तगनआ
कासवषांनि॥२६॥ अथगनदेवताफलछपय
कथन॥ भूमिभूरिसुषदेइनीरनितआनंदका
री। आगिअंगदिनुदहे। सुरसुषसोषभारी। के
केसवअफलअकास। वायुकिलेदसउदा
स। मंगलचंदअनेकनागबकुबुधिप्रकास। इहि
विधिकवित्तसवजांनियो। कवितआरुजा
कोंकरै। नजिप्रबंधसवदेषिगन। सदाशुभा
शुभफलपरै॥२७॥ अथद्विगुनविचारदोहरा
जोकछुआदिकवित्तकी। अगनहोयवडभा
ग। तातेंद्विगुनविचारचित। कीनोवासुकीना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ग॥२५॥सवैया॥मित्रतैंजुहोइमित्रबाढैब
कुबुद्धिसिद्धिमित्रतैंजुदासमशासयुद्धतैंनजा
नियै।मित्रतैंउदासमगनहोतगोतकुषदोऊ
मित्रतैंजोसत्रुहोइमित्रबंधहानियै।दासतैं
जुमित्रगकाजसिद्धिकेसोदासदासतैंजोदा
सवसजीवसबमांनियै॥दासतैंउदासहोत
धननासत्रासपासदासतैंजुशत्रुमित्रशत्रु
सोबषांनियै॥२६॥जोनियैंउदासतैंजुमित्रगन
तुछफलप्रगटउदासतैंजुदासप्रभुताइयै॥
होइजोउदासतैंउदासतैंतोनफलाफलजोउ
दासहीतैंशत्रुतौनफलपाइयै।शत्रुतैंजो।
मित्रगनताहिअफलगनिशत्रुतैंजोदास।
त्रासुवनितानसइयै।शत्रुतैंउदासकुलना
सहोइकेसोदासशत्रुतैंजोशत्रुनासनायक
कोंगाइयै॥२८॥अथगनकोउदाहरनदोहरा
राधाराधारमनके।मनपठयोहेसाथ।ऊधोइ
हतुमकोंनसोकहतगपानकीगाथ॥२९॥अ
थअगनकोउदाहरनदोहरा॥कैहोकहातु
मपाठुने।प्रांननाथकेमित्र।फिरिपीछेपछता
कुगऊधोसमुझोचित्त॥३०॥दोहाकुंउदा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दरण आंगें आ रुकुपाइ। केसव गन अरु अग
नकें। समुझौ सुबुध सुभाइ॥ २१॥ अथ गुरु ल
घु भेद दोहा॥ संयोगी की आदि जुत। बिंदु सु
दीरघ होय॥ सोइ गुरु लघु और सब। कहें स
याने लोइ॥ २२॥ दीरघ हूं लघु करि पढे। सुष ही
मुष तिहि ठौर। सोई लघु करि देषिये। केसव क
वि सिरिमौर॥ २३॥ उदाहरन सवैया॥ पहिलें सुषु
दे सब ही कों सषी उन ही हरि कें जु हरी मति मे
री। दूजें ले जीवन मूरि अकूर गयो अंग अंग
लगाइ अंगीठी। अब धौं कहि कारन केसव एक
उठि आप हैं ऊधव आए गीव सी ठी। माथुर लोग
नि कें संग की यह बैर कतो हिं अजों न उबीठी
२४॥ दोहा॥ संयोगी की आदि कों। कब कुं कव
रन विचार। केसवदास प्रकास ही। लघु करि मा
हि निहारि॥ २५॥ अपल जु न्हाई चंद सुष। ग
ही भई अकाइ॥ मोतिन के मुष कमल ज्यों। दे
षि रहे सुरमाइ॥ २६॥ बरनत केसव दास रस। ज
हां विरस ह्वै जाइ। ताहि कवित में हीन रस।
कहें सकल कविराइ॥ २७॥ अथ हीन रस वर्न
न सवैया॥ देह धरी नी उधारी होकसव दानु

कवि० ॥८॥
17

कहाअरुमाललैपैहोरीनैबिनातोगईजुगई
हैंगईनगईघरहीफिरिजेहो॥गाहितुवैरुकि
याहितुहौंकबबैरुकिवयेंवरुनीकेकैरहा
वेरुकेगारमवचकुगीअहावचयोंनबैच्यो।
तोटारिनिदहो॥३८॥दोहरा॥ओरुचरननिकुं।
औरचरनमांलीन॥मोजनितिभंगकवित्तकवि
केसवदासप्रवीन॥यथा॥३९॥हरिहरके
सवमदनमोहनघनस्यामसुजांन।योंव्रज
वारीद्वारिकानाथरटतदिनमांन॥४०॥अ
थअर्थव्यर्थवर्नंनदोहरा॥एककवित्तप्रबंध
मेंअर्थविरोधजुहोयइ।पूरवपरअनमिलस
दाव्यर्थकहेसबकोइ॥४१॥अथव्यर्थउदाह
रनमहवाछंद॥सबप्रातुसिंघारकुजीजनिमा
रकुसजिजोधाउमगारु॥बकुवसुमतिलीजे
मामनुकीजेदीजेअपनोदानु।कोऊनरिपु
तेरोसबजगुहेरातुमकहियतअतिसाधक
छूदकुमगावकुनृपभगावकुहौंपुनिधनी।
अगाध॥४२॥अपारथलछनदोहरा॥अर
थनजाकोसमुझियेताहिअपारथुजांनि।म
तवारउनमत्तासिसुकेसववचनवषांनि॥४३॥

कवचन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

18

पीयेंलेतनरसिंधकों। हेअतिसवरदेह। एरा
वतहरिमावेतो देष्पागजेतमेह॥ ५४॥ अ
थक्रमहीनलछनदोहरा॥ क्रमहिंगुननिव
षांनिये। गुनीगनेक्रमहीन। सोकहिये क्रमही
नजग। केसवरायप्रवीन॥ ५५॥ यथा॥ जग।
कीरचनाकहिकोंनेंकरी। किनराषनकीजि
यपंजधरी॥ अतिकोपकोंनुसिंहारकरे॥ हरि
जूहरिजूविधिबुधिरे॥ ५६॥ अथकर्नेकटु
लछनदोहरा॥ कहततननीकोलागहीं। सोक
हियेकटुकर्न। केसवदासकवित्तमें। भूलिन
ताकोंवर्न॥ ५७॥ यथा॥ बासनुबन्योंबनावत
नि। सुवरनबलीविलासमाल॥ वहिजेगजमगा
इकें। मांनोंगाजतकाल॥ ५८॥ अथपुनरुक्ति
लछनदोहरा॥ एकवारकहियेकछू। वहुरि
जुकहियेसोइ। अर्थहोयकेशब्दअबसु।
निपुनिरुक्तसुहोइ॥ ५९॥ यथा॥ मघवाघ
नआरूढ। इंद्रआजुअतिसोहिये। ब्रजपर
कोप्योमूढ। मघवरमोंदिषिरदपिये॥ ६०॥ हा
वनहीपुनरुक्तको। एककहतकविराज। छा
डिअर्थपुनरुक्तको। शब्दकेहोंइहिंसाज

कवि०
॥१९॥
19

५२ ॥ अथ यथा ॥ लोचन पैंने सरनि तें । है कहूं तो
कहूं मुषि तें न वेध्यो के नेवधीयो । वेधी मन
की बुद्धि ॥ ५२ ॥ अथ देसविरोधलछन दो
हरा ॥ मलयानिल मनु हरत हगि । सुषद न बै
कूल । सुवन सघन घनसारमय । तरवर तरल
सफल ॥ ५३ ॥ मरुत देस मोहन महा । देष कुस
कल सभाग । अमल कमल कुल कलित त
ह । पूरन सलित तडाग ॥ ५४ ॥ अथ कालवि
रोधलछन दोहरा ॥ प्रफुलित नव नीरज रज
नि । वासुर कुमुद समाल ॥ कोकिल सरद मयू
र मधु । वरषा मुदित मराल ॥ ५५ ॥ अथ लोक
विरोधलछन दोहरा ॥ स्याई वीर सिंगार के । करु
ना धिनाप्रमान । मान अरु मंदोदरी । कहत स
ती निसमान ॥ ५६ ॥ अथ आगमविरोधलछन
दोहरा ॥ पूजिये तीनो वर्न जग । कर विप्र नै मोंभे
द । पुनि लीयो उपवीत हम सुनि लीजे सब
वेद ॥ ५७ ॥ इहि विधि औरजो जानियो । कवि कुल
सकल विरोध । केसव कहै कहूं कस्यों । मूढ
न के अवरोध ॥ ५८ ॥ केसव नीरस विरस अरु ।
पुनि संधानु विधानु । पातरदुष्टादिकनि कों

20

रसिकप्रियातैंजानु॥इतिश्रीमहाविविधभूष
णभूषितायांकविप्रियाव्यांनवर्नंनंनामत्रतीय
प्रभावः॥३॥अथकविभेदवर्नंनंदोहरा॥श्री
केसवतीनोंकुलोककैंमैं।त्रिविधकविनकेराइ
मतिपुनितीनिप्रकारकी।वरननसबसुषपाइ
॥१॥उत्तममध्यमअधमकवि॥उत्तमहरिरस
लीन।मध्यममांनतमांनसनि।दोषनिअधम
प्रवीन॥२॥सवैया॥हैंअतिउत्तमतेपुरुषार
थभाजेपरमारथकेपथसोहे।केसवदासअ
नुत्तमतेनरसंनतस्वारथसंयुतजोहे।स्वारथ।
रूपरमारथभोगनिमध्यमलोगनिकेमनमो
है।भारथपारथमित्तकैहेपरमारथस्वारथ
हीनतिकोहै॥३॥अथकविरीतिवर्नंनंदोह
रा॥सांचीयवातनवरनहीं।झूठिवरनैंबानि
एकनिवरनैंनियमकै।कविमतित्रिविधिव
षांनि॥४॥अथसत्यवातवर्नंनं॥दोहरा॥स
पुरनिफूलीमालती।चंदनकेफलफूल।ह
सपदकीजोन्हज्यों॥अकलपद्रुतमतूल
५॥अथमिथ्यावातवर्नंनंदोहरा॥जहंजहंवर
ननसिंधुसब।तहंतहंरतननिरेषि सहिमा।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सखरकुंकहै। केसवहंसविसेषि॥६॥ तैसैन
कहैनरिमंछितम। सुजनीसियनिबनाइ॥
अंजलीभरिपीवनकहै॥ चंडिचंडिकापाइ
॥७॥ सबकेकरत्तउदाहरन। बाढैग्रंथअपार
कहुंकहुंतातेंकहौं कविकुलचतुरविचार॥८

॥अथतमकोउदाहरन॥ सवैया॥ कंटकन
अटकैनफाटतचरनचपिवानतेंनजातउ
डिअंगगनउघारियै। नैंकहौंनभीजतिसुस
लधारवरसतकीचनरचतरंचचितमेंविचा
रियै। केसौ[illegible]दासससावकापरमप्रकासनउ
सारियैपसारियैनपीयपैंविसारियै। चलीयै
जुवोढिपटुतसुंदीकोगाढौतसुपानतेपछो
रासतपाटकोउतारियै॥९॥ अथचंद्रिकाको
उदाहरनसवैया॥ भूषनसकलघनसारहीं
केघनस्यामकुसमकलितकेसरहीछविछा
ईसी। मोतिनकीसरिसिरकंठिकंठमालहा
रअरुरूपजोतिहेरतिहिराईसी। चंदनुचढ
इचारुसुंदरसरीरसबराषीसुभ्रसोभासुनि
वसनवसाईसी। सारदासीदेषियतिदेषौ।
जाइकेसोराइचाढीवहकुंवरिजुन्हाईसी

अज्ञाईसी ॥१०॥ अथकविनमवर्णभेदनं

वरननचंदनमलयहीं। हिमगिरिहीभुजपान वरननदेवनिचरननैं सिरतैंमानुषगानि ॥११ अतिलज्जाजुनकुलवधू। गनिकागनिनिर लज्ज। कुलटनिसोंकोविदकहत। अंगअ लज्जसलज्ज ॥१२ बरननतनारिननरननेलाज चौगुनीचित्त ॥ भूषदुगनसाहसछगुनकामु अष्टगुनमित्त ॥१३ कोकिलकोकलबोलि बो। वरनतहैमधुमासवरषाहीहरषितकहैं। के कीकेसवदास ॥१४ दनुजनिसोंदितिसुतनि सों। असुरोकरनवषांनि ईससीसशशिवृद्धि की। वरननबालकवांनि ॥१५ सहजसिंगारनि सुंदरी। जदपिसिंगारअपार। नदपिवषांनन सकलकवि। सोरहईसिंगार ॥१६॥ अथसोरह सिंगारवर्न्नन ॥ सवैयारसिकप्रियायां ॥ प्रथम सकलसुचिमंजनअमलवासजावकसुदे सकेसवपासकोसुधारिवो। अंगरागभूषनवि विधमुषवासरागकज्जलकलितलोललो। चननिहारिवो। बोलनिहसनिमृदुचातुरीच। तिनिचारुपलपलप्रतिपति व्रतुप्रतिपारिवो

केसोदाससविलासकारकुंऊवरिराधेइहिवि
धिसोरहसिंगारनिसिंगारिवो ॥१७॥ दोहरा ॥ म
हापुरषकोंप्रगटहीं। वरनतहृषभसमान॥
दीपथंभगिरिगजकलस सागरसिंहप्रमान
॥१८॥ कवित्त ॥ गुनमनिवैरागरूधिरजकोसाग
रुउजागरूषवलधरिधर्मधुरिधाएजू। पत्न
तरुतारिवकोंराजेगजराजसमअरिगजराजि
निकोंसिंहसमगाएजू। वामनिकोंवामदेउ
कांमिनकोंकामदेववरनुजयथंभुरामदेवम
नभाएजू। कासीसकुलकलसजंबूदीपदी
पकेसोदासकोंकलापतरुइंद्रजीतआएजू
॥१९॥ दोहरा ॥ हृषभकंधसुरमेधसम। भुजधु
जअहिपरिमांन। उर समसिलाकपाटअं
ग। अवरित्रियानिसमांन ॥२०॥ कवित्त ॥ म
घज्योंगंभीरवांनीसुनतसषासिषीउरअरिनि
जवासज्योंजरतहै। जाकेभुजदंडभुवलो
ककोंअभयधुजदेषिदषिदुजननभुजंगज्यों
डरतहैं। तारिवकोंगढतरुहोतहैसिलासरु
परापिवकोंदारिनकपाटज्योंअरतहै। भू
तलकोंइंद्रजीतराजरामचंद्रकेसोदासजा

24

२

केंराजराजसोकरतहै २१॥इतिश्रीमद्विवि
धभूषणभूषितायांकविप्रियायांकविव्यव
स्थावर्णननामचतुर्थप्रभावः॥४॥अथकवि
तालंकारवर्णनंदोहरा॥जदपिसुजातिसुल
छिनी।सुवरनसरससुवृत्त॥भूषनुविनुनवि
राजईकवितावनितामित्त॥१॥कविनिकहे
कवितानिके॥अलंकारद्वयरूप।एककहैंसा
धारनै एकविशिष्टसुरूप॥२॥अथसामान्या
लंकारवर्णनंदोहरा॥सामान्यालंकारकों
चारिप्रकारप्रकास॥वरनवरनभूराजश्री
भूषनकेसवदास॥३॥अथवर्णालंकारल
छनदोहरा॥स्वेतपीतकालेअरुन॥धूम्रसु
नीलेवर्न॥मिश्रितकेसवदासकहि।सातभां
तिसुभकर्न ४॥स्वेतवर्णन॥दोहरा॥कीर
तिहरिहयसरदघन॥जौंहूजरामंदार।हरिह
रहरगिरसुरसरिसि।सुधासौधघनसार॥५॥
वलवकहीराकेवरा।कौडीकरकाकासुकुं
दकंचुरीकमलहिम॥सिलाभस्मकपासु॥
६ पांडहांडनिर्झरचवर।चंदनहंससुरार।
छत्रमतिजुगहधबुध॥संषसिधउडमार॥७॥

सषसुकृत्तिसुचिसत्वगुन॥ मंतनकेमनहासु
सीपचूनमोडरफटिक।षटिकाफेनुप्रकासु
॥८॥सुकैसुदरसनसुरसरित्त।वारनवाजिस
मेत॥नारदपारदसनसुरसरित्त वारनवाजि
समेत्त श्रमलजल।रवसारदादिसत॥९॥स
वैया॥ कीनछत्रछितिएतिकेसोदासगनप
तिदसनवसनवसुमतिकवैयोचारुहै।वि
धिकीनाश्रासनुसरासनुश्रममसरश्रासनु
कोकीनापाकसासनुउषारहै।हरिकौसि
जहरिप्रियाकस्योनकमातीहरकस्योतिल
कुहगाकूकस्योहारुहै।राजादसरथसुतसु
नोराजारामचंद्रराउरोसुजसुसबजगको
सिगारहै॥१०॥देहदुतिहलधरकीनेनिस
करकरजगकरवानीवरविमलचिचारुहै
मुनिगनमनमांनिद्विजनिजेनऊंजांनिसंष
संषपांनिजांनिसुषरश्रपारुहै॥केसोदास
विलासचिलैसचिलासिनीनिसुषसुषमऊ
हासउदयउदारुहै।राजादसरथसुनोराजा
रामचंद्रराउरोसुजससबजगकोसिंगारुहै
॥११॥नारायनकीनीमनिउरश्रवदांगनिक ॥१२॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मल्लाकीवीनभनिमोभासुभसारूहै केसवसु
केसमारदासुदेसवेसनारदकेउपदेसविम
लविचारूहै। सौनकरिषिविसेषिसीरषसि-
षांनिलेषगंगाकीतरंगदेषिविमलविचारू-
है राजादसरथसुतसुनोराजारामचंदरावरो
सुजसमबजगकोसिंगारूहै॥१२॥ विलोकि
तनूरूहसेनतसेमनसिरोरूहकेसवय्योंगुनगा
यो। उठकिधौंआयुकेआधिकेअंकुरसूल
किसुष्पसमूलुनसायो। लिष्योकिधौंरूपकेपां
नीपराजयरूपकोभूपकुरूपुलपायो। जरास
यंजरजीउजम्योकिजराजरकंमरसोपहि
रायो॥१३॥ अतिरामसचिक्कणस्यामसुगंधके
धामकुतेजसुभाइककेप्रतिरूलभयदगस-
लसेबकिधोसाल्लसिंगारकेपाइककेके। निजद-
तअनतजराकेकिधोअवनालीजराजन-
लाइककेमितकेसहियेइहिभेसलसेजनु
माइकअंतकनाइककेछा।१४॥ लसेमितलो
मसरीरसवेकिजराजसुरूपकेपांनीलिषा
यो। सुरूपकोदेसउदासकैकीलनिकीलनु
केकिकुरूपनसायो। जरेकिधौंकेसवव्या-

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

धिनिकी किधौं आधिके अंकुर अंतन पायो
जरासरपं जरजी ॐ जस्यो कि जराज अंबर
सोपहिरायो ॥ १५ ॥ अथ पीत वर्णन ॥ दोहा
हरिवाहनु हरि विधि जटा । हरी हरद हरता
लु चंपक दीपक वीरसु । सुरगुरु मधु सुर ।
पालु ॥ १६ ॥ सुरगिरि भृंगारचना गंधन गोधन
मूत । चक्रवाक मन मिलसदा । द्वापर वानर ।
पूत ॥ १७ ॥ कमलके कोस केसव सनके सरक
नकसभाग ॥ मोरा मुषचपला दिसव पीतर
पीतपराग ॥ १८ ॥ पीतवर्णनं उदाहरनसवे
या ॥ मंगलही जकरी रजनी विधिना हीतें मंग
लीनामधर्यो है । दूसरें दामिनि देहसवारि
उडाइदई घनु जाइ वर्यो है । रोचनकी रुचि
केतुकी चंपक फूलनि में अंगवासु भर्यो है
मोरी गुराई कोमेलमलकर हाटकले कर
हाटुकर्यो है ॥ १९ ॥ अथ स्याम वर्णन दोह
रा ॥ त्रिंभुव हरू आकास असि अर्जुन पंजन
संप । नीलकंठ को कंठ मुनि व्यास विसासी
पाप । २० । राषस अगर लगूर मुष । गरहछांह
महराहु । रामचंद्र घन जोपरी सिंध असरतम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥कलहंसकुंडल आदि दे कोरक मसरूप ए

28

चोरू॥२१॥जामुनिजमुनातेलतिल।लषमनि
सिरिसिज वीर॥नीलकरीवननरकमसि।मृ
गमदकज्जलनीर॥२२॥मधुपनिमासिंगार
रस।कालीकुंत्याकाल॥अपजसरीछकलं
ककलि लोचनतोरलोल॥२३॥मारगआ
निकिसांननर।लोमछोमकुषमाह।विरहय
सादागापिका।कोकिलमहिषीलोकु॥२४॥
काचुकीचकचकोममृल केकीकाककरू
पॅ॥२५॥स्यामवर्णउदारनसवैया॥वैरिनि
केबकुभांतिदेषतहीलागिजाँकालिमाक
मलमुषसबजगजानीहे।जतनअनेककरि
जघापिजनमभरिधावतकूहूटतनकेस
ववषांनिहे।निजदलजागजोतिदिनदि
नदूनीहोतिअचलाचलतयहअकहक
हानिहे।पूरनप्र[illegible]तापदीपअंजनकीराजे
राजिराजतश्रीरामचंद्रमॉनकृपानीहे॥
२६॥हंसनिकेअवतंसरचेरंचकीचकरि
सुधासोसुधारमठकाचकेकलसमसो।गं
गाजूकेअंगमेंगजमुनातरंगबलिदेव
कोवदनरस्योवारुनीकेरसमसो।कस

ति

नि

वकपालीकेंगकूलकालकूरजेसेंअसल
कमलमोहेअलिमसिसमसो॥राजारामचंद
जूकेत्रासवसभारेभूपभूमिछाडिभागफिरे
असेअपजससो॥२७॥अथरक्तवर्णनेदाह
रा॥इंद्रगोपषद्योतकुंजकेसरिक्तमसमविसें य
केसवगजमुषव्यंदरविताबोतक्रूकलेष
॥२८॥रसनाअधरहगंतपल्ल॥कुंकटमिषास
मान॥मानिकसारससीससुक॥वानरवदन
प्रमान॥२९॥कोकिलचारुचकोरपिक॥पा
गवतनषनेंन॥चंचुचरनकलहंसके॥पकी
कंदूरीअंन॥३०॥जयाकुसमदाडिमकुसु
म॥किंशुककंजअसोक॥पावकपल्लववी
टिका॥रंगरुचिरसबलोक॥३१॥गनोचंदन
राइस॥रुचीधर्ममजीव॥अरुनमहावररू
धिरनष॥गेरूसंध्याईव॥३२॥रक्तवर्णउदा
हरनसवैया॥फूलेपलासविलासथलीक
हिकेसवदासकुलासनथोरे॥मेषअसेषष
षानलकीजनोंज्वालविसालचलीदिबि
ओरे॥किंशुकश्रीसुकतुंडनिकीरुचिरा
चेरमालमेंचितुचोरे॥चंचुनचापिचकुरि ॥२४॥

सिंदूरलनचारुचंको आगाहनिमौरे ॥२३॥ अ
थ धूम्रवर्णनं दोहरा ॥ काककंठषरमुषका
ग्रहगोधमनिभूरि ॥ करभकपोतनिआदिदे
धूमधूमरीधूरि ॥२४॥ अथधूम्रवर्णनंउदाहर
नसवैया ॥ रामचंद्रिचंद्रिकायांयथा ॥ राघवकी
चतुरंगचमूचमिधूरिउठीजलहूथलछाई ॥
मानोंप्रतापहुताशनधूमसुकेसवदासअ
कासनमाई ॥ मेटिकैंपंचप्रभूतकिधौंविधिरे
नुमईनवरीतिचलाई ॥ दुषनिवेदनकोभूअ
भारकिभूमिकिधौंसुरलोकमिधाई ॥२५॥ अ
नीलवर्णवर्णनंदोहरा ॥ दूबवंसऊबलयनलि
न अनिलमामत्रिणगल । मरकमनिहयस
रके नीलवनेसैंवाल ॥२६॥ नीलवर्णउदाह
रनसवैया ॥ केंठहूकूलदुकूलसुवोरहुकुंरि
सियाउरमैंबलकैंबलदाई । केसवअंबरजा
अंसनिमंडिमनोजमुनाजलधारधसाई ॥
संकरसैलसिलातलमध्यकिधौंसुककी ।
पिरिआवलिआई । नारदबुद्धिविसारदहो
यकिधौंतुलसीदलमालसुहाई ॥२७॥ अथ
मिश्रितस्वेतकृष्णवर्णनंदोहरा ॥ सिंधकम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हरिप्राहूगानि। चंद्रबिंबसुविधुदेषि। अत्रके
धातुअकासपुनि। रूपस्यामसितलेषि॥ ४
८॥ घनकपूरघनमेघअरु। नागराजगजसे
ष पयोरासिकहिसिंधुसों। अरु रूततहीरा
हिलेषि॥ ४९॥ राकुसिंघसिंघीजुभनि हरिब
लभद्रअनंत। अर्जुनकहियेसतसों। अरुपा
रथबलवंत॥ ५०॥ हरिगजसुरगजसमुफिये
हरिहरिगजगजजांनि। कोकिलसोंकहि
कंचकहि। अरुकलहंसवषांनि॥ ५१॥ रूप
नदीवरप्राहूसों। गंगासिंधुवृषांनि। नीरद।
निकसदंतसों। अरुजुनीरकोदांनि॥ ५२॥ अ
थस्वेतपीतवर्णनंदोहरा॥ शिवविरंचिसों
शंभुभनि। रजरजतअरुहेम। स्वर्णसरभसों
कहतहैं। अष्टापदकांपेम॥ ५३॥ सोमस्वर्ण
कहिचंद्रसों। कलधोतरजतरूहेम। तारूकू
टरूपोरुचिर। पीतरिकहिकेरिनेम॥ ५४॥
अथस्वेतरक्तवर्णनदोहरा॥ स्वेतवस्तुसुबे
सूरअगानिसुचि। मरमामहरिहोई। पुष्क
रतीरथसोंकहत। पंकजसोंसबलोइ॥ ५५
हंसहंसरविविवर्निये। अर्कफटिकरविसों

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

न। अंबुजसंषसिरसिज दुवो कमलकमलज
लजांन॥५६॥इतिश्रीमहिविधभूषनभूषि
तायांकविप्रियायांसामान्यालंकारवर्णन
नामपंचमप्रभावः॥अथवर्न्यवर्णनंदोहा
संपूरनआवर्तकहि॥कुटिलत्रिकोणिसुहृति
तीछणगुरुकोमलकठिन। निश्चलचंचल
चित्त॥१॥सुषदुषदअरुमंद। गतिसीतल
तपतिसरूप। क्रूरसुरससमधुर। अबलब
लिष्टअनूप॥२॥सत्यगूढकेसववरनि। अ
गतिसदागतिदानि। सत्रुविसबिधिमेंकहे
वर्नेअनेकचषानि॥३॥इतनेसंपूरनसदा॥
वरनैकेसवदास अंबुजआननआरसी।
संततप्रेमप्रकास ४॥कवित्त॥हरिकरमंड
नसकलदुष। षंडनमुकरमहिमंडलकों।
कहतअषंडमति। परमसुवासपुनिपीयूष
निवासपरिपूरनप्रकासकेसोदासभूअका
सगति। वदनमदनकेसश्रीजूकेमदनय
हिमोदरसुभोदरादिनसजूकेमित्रअति
सीताजूकेमुषसुषमाकीउपमाकोंकाम
लकमलनअमलरयनपति॥५॥अथ

मंडलवर्णनं॥दोहरा॥केसवकुंडलमुद्रिका
वलयावलयवषांनि।आलवालपरिवेषरवि
मंडलमंडलजांनि॥६॥सवैया॥मनिमय
आलबालथलजलजरविमंडलमैंजैसेंम
तिमोहकवितानिकी।जैसेंसविसेषपरिवेष
मेंअसेषरेषसोभितसुवेषसोमसीमासुषदा
नकी।जैसेंवंकलोचनिकलितकरकंकन
निवलितललितदुतीप्रकटप्रभांनिकी।के
सोदासतैसेंराजेरासमैंरसिकलालआसपा
समंडलीविराजेगोपिकानकी॥७॥अथआ
वर्त्तवर्णनदोहरा॥यहआवर्त्तवषांनियैंके
सवदाससुजांन।चकरीचक्रअलातअरु॥
आतपत्रपरमांन॥८॥आवर्त्तउदाहरनस
वैया॥कुंकुंरूपमुषमांनोंपलटनजांनीजाति
देषिकेअलातनगातजातिहोतिमंदलाजि॥
केसोदासकुसलकुलालचक्रचक्रमनिचा
तुरीचितैकैंचारुआतुरीचलतिभांजि।चंद्रजू
कीकांचकुंकोरवेषपरवेषकैसोदेषतहीं
रहीयेनकहियैवचनमांजि।धापछांडिआ
पनिधिजानिदिसिदिसिरघुनाथजूकेछत्र

तरन्त्रमत न्रमीनिचाजि ॥ ९ ॥ अथ कुटिलव
र्णनं दोहा ॥ अलक अलिक न्टकुंचिका । किं
सुकसुकमुषलेषि । अहिकटा रूधनुवीज
री कंकनभग्नविसेषि ॥ १० ॥ बालचंद्रिकाबा
लससि । हरिनष सूकरदंत । कुद्दालादिकव
न्नियै । कपटी कुटिल अनंत ॥ ११ ॥ कुटिल उदा
हरन सवैया ॥ गोरज गीहषभांनसुता अलसी
विलसी निसिकुंजवीहारी । केसविपोछति ।
अंचलवारनिपीकमुलीकगाईमिटिकारी । वं
कलगेकुवचीचनषछतदेषिनईदृगपूनील
जारी । मानौंवियोगबराकुहन्यौजुगसेलकी
संधिनइज्ञवेडारी ॥ १२ ॥ अथ त्रिकोणवर्णनं
दोहरा ॥ सकटसिंघारेवजूदल । हरकेनैंननि
हारि केसोदासत्रिकोणमहि । पावककुंडवि
चारि ॥ १३ ॥ अथ त्रिकोणउदाहरसवैया ॥ लो
चनत्रिलोचनकेकेसवविलोकविधिपाव
ककेकुंडसीत्रिकोणकीनीधरनी । सोधीदेस
धारिपृथुपरमपुनीतनृपकरिकपिपूरदस
कुंदिसिकरनी । बालसोजगतजगभगभग ।
सुमेरुतामेंजाकीजोतिहोतिलोकलोकम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नहरनी। थरुवरुन्नीवहहविहोमियतजुगजु
गहोत्ताहोतकालुनजुगतजाइवरनी॥ २४॥
अथसुवर्तवर्णनदोहरा॥ दृत्तवेलभनिगु
छअरु। कक्कुदकंधरथअंग। कुंभिकुंभकुं
चअडमनि। कंडुककलसमुरंग॥ २५ सुवृत्त
उदाहरनसवैया॥ परमप्रवीनअतिकाम
लरूपाललतेरउरसैंगुदितनितचितहित।
कारीहै। केसोगाइकीसोंअतिसुंदरउदार
शुनसत्लजमुसीलविधिमूरतिसुधारीहै।
काकूसोंनजानैहमिबोलिनविलोकिमें
नेकुंचुकीसहीतसाधसूधीचेमिवारीहै। अ
सैहोंऊचविसऊचनिनमकतिवृमिदरिदी
यहरपकतिकोनुपारीहै॥ २६॥ अथतीक्ष्ण
गुरुवर्णनसवैया॥ नषकटाक्षसरकुवेचन
मलसुतीक्ष्णनजानि। कुचनितंबगुरुलार
जमति रतिअतिगुरुकरिमांनि॥ २७॥ तीक्ष्
णउदाहरनसवैया॥ सेहथीहथ्यारअैना।
अन्योअरुकेकामसरकूतैंपरयललवचनव
मषिय। चोटनवचतचोटकीनेंकूकपाट
कोटमोंनमोहरेउचारेभयअवेरषिये॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

केसोदासमंत्रगदयंत्रउनप्रतिपदृरदृा।
लद्रुलछवज्रूरकुकनलेषियै॥ मेदीयत
मर्मुबर्मकूपरकेसडेरहेंपीरघनीघाइलि
निघाइपैंनदेषिये॥१८॥ अथगुरुलाजउदा
हरन॥सवैया॥रसिकप्रियायांयथा॥ पहि
लैंतजिआरसआरसीदेषिवौंघसघनसारही
लै पुनिआछिगुलाबतिचोछिछिफुलेल
अंगाछैमेंआछेअंगाछिनिके। केसववेसद
[illegible]जवादिसोंमाजिइतेपरआंजीमैंअंजनु
दे वकुस्यौंदुरिदेषोंतोदेअलीयहलीजतो
लोचनिलागीहै॥१९॥ अथकोमलउदाहर
ना॥ पल्लवकुसुमदयालमनुमांषनमृदुल
मुरारि। पांटपामरीजीभपदप्रेमसुपुन्यवि।
चारि॥२०॥सवैया॥ मैंनुकैसोमनुमृदुमृदु
लमृनालिकाकेसूतकैसेंसुरधुनिमननि
हरनिहैं। दाम्योंकेसेबीजदांतपातसेअरु
नचोठकेसोदासदेषिहगआनंदभरतिहै
एरीमेरीतेरीमोहिभावतिभलाईतातेंवूझ
तिहोंतोहिऔरवूझतिडरतिहैं। माषनुसी
जीभमुषकं[illegible]सोंकावरिकहिकाउसी।

केठगीचातेंकैसैंनिकसतिहै॥२१॥अथक
ठोरवर्णनं॥दोहरा॥ऊचककठोरभुजमूलम
नि।वारनिवज्रककुंमित्त।धातुहाडहीरादि
यो।विरहीजिनकोचित्त॥२२॥मूरनिकेत
नसममनि।काठकमठकीपीठ केसवस
बचमेंअरु।हठसठदुजनडीठि॥२३॥कठो
रउदाहरनसवैया॥कैसोहामहीधंत्रसा
मनिकोमहागतिआवकोअकामहेप्रका
सपापभागीकोरूपारूपा॥॥कोकरूपवि
कवासरसंयोगीको।बुधिनिकीवोजुरीहै
नेनकोधामाधरूछातीकोवस्याकघनघाइ
नप्रयोगीको।उदरकोवाडवाआगनिगहम
ननहांजाननहोहीरादीयोकाकूपुत्रसोगी
को॥२४॥अथनिश्चलवर्णनं॥दोहरा॥सती
समरभटसंतमन॥धर्मअधर्मनिमित्त जहां
तहांएववर्नियें केसवनिश्चलचित्त॥२५॥नि
श्चलउदाहरनसवैया॥कायम[illegible]वचका
मनलोभनमोहै।नमोकुमहाभयजेता॥
केसवबालवहिकमहृद्धिविपत्तिनकुंआ
तिधीर[illegible]जैचता।हेकहिंमेंकरूणावरूणा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लयकौंनुगनैंकृतवारत्रेता। ऐईतौसूरज
मंडलभेदतूसूरमतीअरुऊरधरेता॥२
६॥ अथचंचलवर्नेनंदोहरा॥ तरलतुरंग
कुरंगगन। वानरचलदलपान। लोभिनके
मनस्यारजन। बालककालविधांन॥२७॥
कुलटाकुटिलकटाछमन। सपनोजोव
नमीन। षंजनअलिगजस्रवनश्री। दामि
निपवनप्रवीन॥२८॥ चंचलउदाहरा॥ स
वैया॥ मौरज्यों भवतलोललललनालनमनि
प्रतिषंजनसेथलमीनमांनौंजांहांजलुहै
सपनोकहेतकहूंआपनोनआनेनूली।
येनअनवेनआकेकोमोफलुहै। गहिये
धोकोंनगुनदेषतहीरहीयेरीकहियेकहूं
नरूपमादकोमहलुहै। चपलासोचम
कतिमोहेचारुचकूदिसिकांन्हकोसने।
हचलदलकोसोदलुहै॥२९॥ अथसुर
वरवर्नेनं॥दोहरा॥पंडितपुत्रपतिव्रता
विद्यावपुहिनीरोग। सुषदीफलअभिला
षकोसंपतिमित्रसंजोग॥३०॥ दांनमांन
धनजोगजय रागवागग्रहरूप। मका।

कवित्र
॥ श्लो॥
39

ति सोमसर्वेज्ञता। ऐसुषदांन अनूप ॥ ३१ ॥ सुष
दउदाहरन सवैया ॥ पंडित पूत सपूत सुधी।
पतिनी पतिप्रेमपरायन नारी। जांने सबै गुन
मांने सबै जन दांन विधांन दयाउरधारी। के
के सबै सगनिहीं सों वियोग संयोग सुभोग।
नि सुषकारी। सांचु कहै जगमांहि लहै जसु
मुक्ति यहै चहूं वेद वीचारी ॥ ३२ ॥ अथ दुष
रवर्णन दोहरा ॥ पापपराजय कृव [illegible] सग
तामूरय मित्र। बांमन रेगी रूप वितु। असह
नसील पित्र ॥ ३३ ॥ आधिव्याधि अपमान रिन
परघर भोजनु वासु। कंन्या संतति हद्वता। वर
षाकाल प्रवासु ॥ ३४ ॥ कुजन कुस्वामी कुगति
हय। कुपुरु निवास कुनारि। परवस दारिद
आदि दै अरि दुषदांनि विचारि ॥ ३५ ॥ दुषद
उदाहरन सवैया ॥ वाहन कुचालि चोर चाक
रचपल चित्त मित्र मतिहीन सुस्वामी उर
आनिये। परघर भोजनु निवास कुपुरनि के
सो दास वरषा प्रवास दुषदांनिये। पापिनि
के अंग संग अंगना अनंग वस अपजस जु
तसुत वित्त हित हांनिये। मूढ़ता मूढ़ाई व्या

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ध्रिदारिदकुगई आधिइहंहीनरकनरलोक। निवयांनिये॥३७॥ अथमंदगतिवर्णनंदोहा कुलत्रियहासविलासबुधि॥ कामक्रोधमंदमा नि। शनिगुरुसारसहंसगज॥त्रियगतिमंदबषा नि॥३७॥ अथमंदगतिवर्ननउदाहरनसवेया रसिकप्रि॥ कोमलविमलमनविमलासीसषी। साथिकमलाज्यौंलीनेहाथकमलसनालके नूपरकीधुनिसुनिभोरकलहंसनिकेचौंकिचौं किपरैंचारुचेदुवामरालके। कचनिकैभारकु। चभारनिसकुमारलकिलचकिजातकटितर बालकेहरैंहरैंबोलतिविलोकतिहसतिहरैं हरैंहरैंबोलतिहि[illegible]तकिमनलाके॥३८॥ अथसीतलवर्ननंदोहरा॥ मलयजराषकालिंदमु ष वारामिश्रीमीत। प्रियसंयोगघनसारससि जलजलरुहहिमसीत॥३९॥ सीतलउदाहर नसवैया॥ रसिकप्रियायांयथा॥ सीतलसमी रटारुचंद्रचंद्रिकानिवारुकेसोदासऐसंहीतो हरषहिरातुहै। फूलनिफेलाइडारुफारिडा। रुघनसारुचंदनुकौंटारुचितचौगुनोपिरातुहै। नीरहीनमीनमुरझाइजीवैनीरहीपैछीरके।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कहाधीरजधिराउहै। पाईहैं तैं पीरिकिधौंयोंही
उपचारुकैरआगिकौतोडाढ्यौआगुआगिही
सिरानुहै॥४०॥अथतप्तवर्णनंदोहरा॥रिपुवृत्ता
पकुबचनतप॥तप्तविरहसंताप॥सुराजिआगि
वजागिदुष।त्रिष्मापापविलाप॥४१॥तप्तउदाह
रनसवैया॥रामचंद्रचंद्रिकायांयथा॥केसौदा
सनीरभूषप्यासउपहासत्रासदुषकेनिवास
विषमुषफूगह्योपरै।वायुकौवहनुबनुदाह
कौरहनुवडीवाडवाअनिलज्वालजालमर
ह्योपरै।जीरनजनमजातजोरजुरघोरपरिपूर
नअराटपरितापक्योंकह्योपरै।सहिहांतपन।
तापपरकैप्रतापरघुवीरकोविरहवीरमोपैंनस
ह्योपरै।४२॥अथक्रूरस्वरवर्नेनंदोहा॥सौंगुरु
सांपउल्लूकअज।महिषीकौलवषानि।काल
काकव्रककरभषरस्वांनक्रूरषुरजांनि॥४३॥
क्रूरस्वरउदाहरनसवैया॥दीलीतैंरसीलीजीली
गटकूकीरटलीलीस्याररेतैंसवाईभूतभावती
तैंआगरी।केसोदासभैंमानिकीभांमिनीसीभा
सभासषरीतैषरीसीधुनिऊंटतैंउजागरी।मेंड
निकीमींडीमेंडअेंडनोरानारिनिरिनकीबाक॥२०॥

कुंतैं वांकी वांनी कागनि की कागरी। रूकरी मकु
चि संककरी यौं मूक भई घूह की घरनिकौं है
मोहै नाग नागरी ॥४४॥ अथ सुस्वर वर्नने दोहरा
कलवर केकी कोकिला। सुक सारो कलहंस। तं
त्री केंकिन आदिकै। सुभ सुर कुंदभिवंस ४५॥
सुस्वर उदाहरन सवैया॥ केकिनि की केका सुनि
काके न मथत मन मन मथ मनोरथ रथ पथ सो॥
हियै। कोकिला की काकली निकलित ललित
वागदेयतं ही अनुराग उर आवेरा हियै। कोकिनि
की कारिका कहत सुक सारिका निके सौदास॥
नारिका कुमारिका कुमा हियै। हंसमाल बोलत
ही मांन की माला उतारि बोलैं नंदलाल सौं न आ
सी बाल को हियै॥४६॥ अथ स्वरूप वर्नने दोहरा॥
नल नलकूबर सुरभिय ज॥ हरिसुत मदन निहा
रि दमयंती सीतादि त्रिय। सुंदर रूप विचारि ४७
सुरूप उदाहरन सवैया॥ कोहै दमयंती इंदुमती
रति राति दिन हौं दिन छबीली छिन छबि जो सिंगा
रियै। केस वल जात जल जात जातवेद वा पजा
त रूप वा पुरा विरूप सी निहारियै। मदन सरूप नि जो
रूप तो निरूप भयौ चंद्रु वकु रूप अनुरूप कै वि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चारियै। सीताजूकेरूपपरदेवताऊरूपसेहैंरू
पकूकरूपकैनोवारिवारिडारियै॥४८॥ अथ
मधुरवर्न्नेनंदोहरा॥ मधुरप्रियाधरसोमकरमा
षनुदाषसमांन। बालकवातैंतोतरीववि कुल
उक्तिप्रमांन॥४९॥ मेवामिश्रीदुधधृत अति
श्रृंगारसमिष्ट। ऊषमकूषपीयूषगनि केसव
सांचेईष्ट॥५०॥ मधुरउदाहरनसवैयारसिक
प्रियायां॥ षारिकषातनदास्योंऊंदाषनमांषडूं
सकूमेटिइगाई। केसवऊषमहूषफूहूषनआ
ईहैांनापहिछाडिजिगाई। तोरदछदकोरसुर न
चकुचाषिगएकरिकैपांफूंटिगाई। तादिनतेउनि
राषिउगाइसमेतसुधावसुधाकीमिगाई॥५१॥
अथनिबलबर्न्नेनं॥दोहरा॥ पंगुगुंगरोगीवनिक
मीतभषजुतजांनि। अंधअनाथअजादिसि
सु। अबलाअबलबषांनि॥५२॥ निर्बल उदा
हरनसवैया॥ षातनअघातसवजगतउषवाव
तुहैद्रोपदीकेसाकपातषातहीअघानेहौ। के
सौदासमनृपतिसुताकेसतभाइभयचोरतैंच
उरमुडचक्रचक्रजांनेहौ। मांगनेऊदारपा
लदासफ्तसतसुनैंकाहमंहिकोंनपारवेद ॥२१॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

निवपांनिहां ॥ श्रोरहैं अनाथनिकेनाथकोऊरघुना
थतुमतो अनाथनिकेहाथंदीविकानेहो ॥५३॥
अथलिष्टवर्न्नंन ॥ दोहरा ॥ पवनपवनकोपूत अ
रु । परमेसरसुरपाल कांमभीमबालीहली ब
लिराजापृथुकाल ॥५४॥ सिंघवराहगयंदगुरु । स
षसतीसवनारि गुरुडवैद्यमातापिता । बली अ
रिष्टविचारि ॥५५॥ बलिष्टउदाहरसवैया ॥ बालि
बध्यौबलिराउबंध्यौकरसलीकेसलकपाल ।
थलीहै । कांमजस्यौजगुकालपस्यौबरिमषुधौ
विप्पुहालाहलीहै । सिंधुमथ्यौकलिकालीनथ्यौ
कहिकेसवइंद्रकुचालिचलीहै रामहूंकीहरी
रावनवांमवरूंदिसिएकअरिष्टबलीहै ॥५६॥
अथसाचकूवर्न्नंन ॥ दोहरा ॥ केसवचारिहूंवेदकौ
मनक्रमवचनविचार । सांचोएकअरिष्टहरिझूठे
सवसंसार ॥५७॥ यथा ॥ हाथीनसाथीनघोरनचेरन
गांवकोनांवनगंववित्तैहैताउनमउनतनपूतना ।
मितुनवित्तनअंगअोसंगनरहै । केसवकांमकौ
रामविसारउऔरनकोमनकांमहीअैहै ॥ चेति
रेचेतिअजौचितअधसुअंतःकेतंतअकेलोईजेहै ॥५८॥ अनहीगिऊकौरगुजांनैंनऊगैरगै

रनाहीपरगावेरुजारीकौंरगतुहै। याकैतौ
डरुनिडरुडगुनडिगतडरिडरकेडरनिडिगि
ग्रीडीज्यौंडगतुहै। ऐसैंवसवामैंतउदामकृ।
जेकेमोदासकेमैनभगतकहिकादैकोंषगतु
है कृमैरेरकृगजगुरामकीदुहाईकाकृसांचे
कोकियोहैतातेंमाचुसोलगतुहै॥५१॥ अथ
अगमदागतवर्नेनंदोहरा॥ अगतसिंधुगिरता
लतरु। वापीकूपवषांनि। महानदीनदयैंथज
गु। पवनमहागतिजांनि॥६०॥ अगातुमदागत
उदाहरनसवैयारसिकप्रियायांयथा पंथनथकि
तपल्लुमनागथ्रस्थनिकेकेमोदासजगमगजैसैं
गायेगीतैमें पवनविचारचक्रचक्रमनिचितच
हिभूतलअकासभ्रमैंधांमजलसीतलमैं। कौ।
लैंराषेथिरवपुवापीकूपसरसमहरिविनुकी
नेवकृचासरविनीतमैं। ग्यांनिगिरफारितारिला
जतरुजाइमिलैंआपहीतैंआपगाज्यौंआप
निधिप्रीतमैं॥६१॥ अथदांनवर्णनं॥दोहा॥ गो
गिगिरीमगणमविधि। गिरागहनिकोईस। चिं
तामनिसुरहैरुगा। जगमाताजगदीस॥६२॥
रामचंदहरिचंदनुनु। परसरामकुयहर्न। को।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

46

सवदासरधीचप्रभु। वलिसुवभीषनकर्न। ६३
भोजविक्रमाजीतनृप। जगदेवरसधीर दांन
निदीकेदांनदिन। इंद्रजीतवरवीर। ६४। अथ
गौरिकोदांन॥दोहरा॥ पावकफनिविषभसमसु
ख। हरपवेर्गमयमानि। देतजुहैअपवर्गको। पा
रवतीपतिजानि। ६५। अथगणपतिदानउदाह
रनसवैया॥ कांपिउठेग्रीअापनिधितपनदीना
पचढीसीरियेशरीरगतिभईरजनीसकी। अज
हूंनऊंचोचादेअनलमलिनमुषलागिरहीला
कलाजमांनेंमनवीसकी। छबिसौंछबीलीछ
बिछातीमेंछिपाईहरि छूटिगईदांनछबिकोटि
हूंतेतीसकी। केसोदासमतिदिकालकोगेईहै।
आयाकालसुनतअवनबकसीसएकईसकी
६७॥ अथविधिदानउदाहरनसवैया॥ आसीवि
षराकसनिदयतनिदेपतालसुरनिनरनिदीनो।
दिविभूनिकेतुदे। थिरचरजीवनिकोदीनीहत्ति
केसोदासदीवकहूंकदोकराअोरकोऊदेतुदे
सीतवाततायतेजअावतिसमयपायकाहूपेंन
नाकीजाइअैसीसकसदेहे। अवतवजवकव
जहांतहांदपियतिविधिदीकोदियोसवसब।

दीकौंदेतुहे॥६८॥गिराकौंदानउदाहरनसवैया
वांनीजगरांनीकीउदारतावषांनीजाइऐसीम
तिऊदितउदारकौनकीभई। देवताप्रसिद्धसि
द्धिरिषिराजतपवृद्धिकहिकहिहारेसबकहिन
काकूलई। भावीभूतवर्तमानजगतुवषांनतुहे
तउपिनकसबबषांनीकाहूंपैगई। बरनेंपति
चारिमुषपूतपांचमुषनातीबरनेंषटमुष
तदपिनईनई॥६९॥सूर्यदांनउदाहरनसवैया
वाधककविविधव्याधित्रिविधिअधिकआधिवे
दउपवेदवंदबंधनुविधानुहे॥जगपारावारपा
रकरनअपारनरपूजकपरमपदपावनप्रमानु
हे। पुरुषपुरांनकहेंपुरुषपुरानसबपूरनपुरां
नसुबैनेंनिगमनिदांनुहे। भोगवानभागवांन
भगतिनभगवांनकरिवेकोंकेसोदासभानभग
वांनहे॥७०॥परसरामकोदानउदाहरनसवैया॥
जोधरनीहरनीछहरीवरजग्यवराहछिडाइल
ईजू। नमांवदांनवदेवनिकेजुतपोबलकेंकहूं
नहाथभईजू। जोलगिकेसवभारथभौभवा
पारथजीवनहीजुवईजू। मातौंसमुद्रनिमु
द्रितरामसुविप्रनिवारअनेकदईजू॥७१॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

48

रघुनाथकोदांनउदाहरनसवैया॥पूरनपुरांनअरु पुरुषपुरांनपरिपूरनबतावैंश्रीरउक्तिकों।द रसनदेतुजिन्हैंदरसनसमुझैननेतिनेतकहैंवे दछांडिभेदयुक्तिकों॥जांनियहकेसोदासअनु दिनुरामरामकहतरततनडरतपुनरुक्तिकोंरू पदेइअनुमांहिगुनदेइगरिमांहिभक्तिदेइमहि मांहिनामदेइमुक्तिकों॥७२॥अन्यच॥जोसतज ज्ञकरैंकैंस्योइन्द्रकोंसोप्रियताकपिपुजकोंदी। नी।ईसुदईजुदेयदससीससुलंकबभीषनअ्वे सेंहीदीनी।दांनकथारघुनाथकीकेसवकोवर नैरसअद्भुतभीनी।जोगतिउरधरैनुकीसुतोंओ धिकेकूकरसूकरलीनी॥७३॥बलिकोदांनउदा हरनसवैया॥केटभसोनरकासुरसोपलमैंमधु सोंमुरसोंजिनमारयो।लोकचउदहरक्षककै सवपूरनवेदपुरानविचारयो।श्रीकमलाकुच कुंकुममंडितपंडितवेदअदेवनिहारयो।सोक रूमांगनुकोंबलिपैंकरतारहूकोकरताहिपसा रयो॥७४॥अथअमरसिंघकवित्त॥वारकोरत्तम केसप्रीतमसुधारविधिवारिवारिडारगिरिके सोदासभाषैदे।थोरैथोरेमदनकपोलफूले।

त

थूलेथलडोलैंजलथलबलथांनसुत्तेनाषेहैं घंटाघननातिघनिनातघनैंघूंघरानिमोरमना। तिसुवपनिअभिलाषेहैं। दुज्जनदलनिदल मल्लनअमरसिंहकेसोहाथीयेहथ्यारकेरा षेहैं॥७५॥अथनीरवरकोहांनउदाहरनसवैया पापकेंपुंजपषावजकेमवसोककेसंषसुनैसुष मांमें। कूचकेंमालरगांफअलोकिकेंआवरुज्ञू थनजांनेजमांमें। नेहिकेमेरवडेडरकेंडफू कोतकमोकलिकेऊरमांमें॥ कूनहींबेबी रवजेबकृहारिदकेदरबारहमांमें॥७६॥इति श्रीमद्विविधभूषनभूषितायांकविप्रियायांसं पूर्णादिकवर्णननामषष्टमप्रभावः॥६॥अथ नमिभूषणवर्णनंदोहरा॥देशनगरवनबाग गिर। आश्रमसरितातालं॥रविशशिसागरभू मिके। भूषनरितुसबकाल॥१॥अथदेसवर्ण नादोहरा॥रत्नषांनिपसुपंषिवसु॥वसनसुगं धसुदेस। नदीनगरगढवर्न्नियै॥भाषाभूषित देस॥२॥देसवर्णन॥उदाहरनसवैया॥आछे आछेअसनवसनवसुवासुपसुदांनसनमां नजांनवाहनवषांनियें। लोगभोमजोगमा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गचागरागरूपजुत भूषननि भूषितसुभाषासु
षज्ञांनियें। सातीपुरीतीरथसरितसबगंगादि
ककेसोदासषूरनपुरांनगुनगानियें गाथान्न
लश्रेसेगढराजामांनसिंहजूसेदेसनिकिमनि
महिमध्यदेसमांनियें॥३॥ अथनगरवर्णदोहा
षाईकोटअटाधुजा। वापीकूपतडाग। वारिना
रिअसतीसती। वरनहुनगरसभाग। ४॥ नगर
उदाहरनसवैया॥ चहूंभागबागवनमांनकुस।
घनघनसाभाकीसीमालाहंसमालासीसरित
वर। ऊंचेऊंचेअटानिपताका अतिऊंचीजानु
कोप्राककीकीनीगंगपैलेषरतरलतर। आपने
सुषनिआगेनिंदतनरिंदऔरूघरघरदेषियत
देवतासेनारीनर। केसोदासत्रासजहांकेवल
अदृष्टहीकोंवारियेनगरसबआगरेनगरपर
५। अथवनवर्णनंदोहा॥ सुरभीइभवनजीव
बहु। भूतप्रेतभयभीर। भिल्लभवनवल्लीरवि
टप। दवनलवरनहुधीर॥६॥ वनउदाहरनस
वैया॥ केसोदासअैंडछेके आसपासतीसको
सतुगारन्युनामवनवेरीकोअजीतुहै। विंधि।
कोसोबंधुवहवारनवलितवाघवानरवराह
वरभिल्लकैंअभीतुहै। जमकीजमातिसीकि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुतनरजुतनगिरिवरवरनि। ओषदिनिकरपातु ५

जमवंतकौसोदत्तुमहिषसुषदसुछरिछनि।
कौमीतुहै। अचलअनलवंतसिंधुसीसरित।
जुतशंभुकौसोजटाजूटपरमेघुनीतुहै॥६॥वा
गवर्णनदोहरा॥ललितलतातरवरकुसुम॥
कोकिलकलवैरेमोर। वरनिवागअनुरागसों
भवरभवतचहुंओर॥७॥वागवर्णनउदाहर
नसवैया॥सहितसुदरसनकलितकमलास
नविलासमधुवनमीतमांनियें। माहियेअप
नोरूपमंजरीओनीलकंठकेसोदासप्रगटअ
सोकउरआंनियै। रंभासोंसदंभबोलेमंजुघो
घोतरूवसीहंसफूलेसुमनसुसुषववषांनि
यै। देवकोदिवांनसोप्रवीनराइजूकोवागुइं
द्रजीतइंद्रकेसमांनतहांजांनियै॥८॥अथगि
रिवर्णनदोहरा॥शृंगतुंगदरीघदरी। सिघसुंद
री धातु।१०॥रामचंदतेरकीनें अरिकुलअकु
लाइमेरकेसवमांनआंनअचलघरीनिमें
मोरासुकहंसपिककेकीओकपोतमृगकेसो
दामकहूंहयकलभकरीनिमें। डारकहूंहार
टूटगातपीरपटछूटेफूटेहैंसुगंधघटअवत
भरीनिमें॥देषियतसुषदसिषरप्रतिदेवता
ससुंदरऊवरअरुसुंदरीदरीदरीनिमें॥११॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रिषिआश्रमवर्णनदोहरा॥होमधूमजुतवरनि
ये।ब्रह्मघोषमुनिवास।सिंहादिकमृगमारखेहि
इभसुभवैरविनास॥१२॥आश्रमउदाहरनसवै
या॥केसरीसमम्रगजवछेरूचषेंवाघनीनिचाह
तसुरभिवाघबालकवदनुहैं।सिंघनिकीसटा
अेंचैकलभकरनिकरिहिंघनिकोंआसनुग
यंदकोवदनुहै।फनीकेफननिपरनाचतमुदि
तमोरक्रोधनुविरोधजहांमदनमदनुहै।वान
रफिरडोरैंडोरैंअंधतापसनिरिषिकोनिवास
किधौंशिवकोसदनुहै॥१३॥अथसरितावर्णन
दोहरा॥जलचरहयगयजलजटतयज्ञकुंड।
मुनिवास।स्नानदानपावननदीवरनतकेसव
दास॥१४॥नदीवर्णनउदाहरनसवैया॥अेंडछे
तीरतरंगनिवैनतवैताहितिरैरिपुकेसवकोहै
अर्जुनबाहुप्रवाहुप्रबोधितरेवाज्यौंराजनि।
कीरजमोहै।जातिजगैजमुनासीलसेजगलो
चनलालितपापविपोहै।सुरसुतासुभसंगम
तुंगतरंगतरंगितिगंगासीसोहै॥१५॥तालवर्णन
दोहा॥ललितलहरिखगपुहपपसु॥सुरभिस
मीरतमाल।करतकेलिपछीप्रगट॥जलचर
वरनहुताल॥१६॥तालउदाहरनसवैया॥॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

आयुधरैमल्लश्चोरनिकेसवनिर्मलैकायकरै।
चकुवैरि। पंथिनिकेपरितापहरैहठिजेतरत्न
लनतरुरुदतोरै। देषिकुएणकसुनाखवडोबड
भागतडागनिकोवितथोरै। ज्यावतजीवनसा
रिकौनिजबंधककेजगबंधनछोरै॥१७॥ सूर्यो
दयवर्णनं॥दोहरा॥ सूर्येउदैतेंअरुनता। पयपा
वनताहोय। संषेवदफनिमुक्तिकैरैं। पंथचलैंस
बकोइ॥१८॥ कोकसोकनदसोकदत। कुयकुव
लयकुलटानितारात्रोषदिदीपप्रभाछि। हक
चोरनमहानि॥१९॥ कोकनदमोदकरुवदन
मदनकिपीडसमुखसुखकुवलयदुपदाई
है। रोधकअसाधजनसाधनिअसाधनकिउ
दिप्रबोधबुद्धिकेमोदामपाईहै॥ पावनकर
नपयहरिपदपंकजकिजगमैगेमनुजगमग
दरसाईहै। तापतितेजअरुत्तारिकाकोतार
ककिप्रगटप्रभाकरहीकीप्रभुताईहै॥२०॥
अथचंद्रोदयवर्णनंदोहरा॥ कोककोकनदवि
रहतम। मांननिकुलटनिदुष्य। चंद्रोदयतें
कुवलयनिजलधिचकोरनिसुरक्ष॥२१॥ चंद्रो
दयउदाहरनसवैया॥ केसोदासदेउदासकम
लाकरसोकरसोषकप्रदोषतापतमोगुनता।

रीये। अमृतअसेषकेविसेषभाववरयनकोकनर
मादचंदषडनुविचारियैं। परमपुरूषपदविमुषपु
रूषरूषसुमुषसुषदविदुषनउरधारियै। हरिहै
री हियेमैंनहरिनहरिननैंनीचंद्रमांनचंद्रमुखी।
नारदनिहारियै॥२२॥समुद्रवर्णनंदोहरा॥ उंगत
रंगगभीरता। रतनजलजबहुजंत गंगासंगमस्व
त्रिय। जांनविमांनअनंत॥२३॥गिरिवडवानलहै
छिवकु चंद्राद्यतेजांनि। पंन्नगदेवअदेवगृह।
असोसिंधुबषांनि॥२४॥समुद्रउदाहरनसवैया॥
सेषधरैंधरनीधरनीधरैकेसवजीवरचेविधिजे
ते। चौदहलोकसमेततिन्हैंहरिकेप्रतिरोमनिरो
मनिचेते। सोवततेऊसुनेइनहींमहिमादिअनं
तअगाधिहेंएते। अद्भुतसागरकीगतिदेषकुसा
गरहीमहिमागरकेते॥२५॥भूतिविभूतिपीयूषा
कुकविषईसमरीरकियापविपोहै। हैकिधोंके
सवैंतहियाकिवसेहरिसंततिसोभअनंतकरै
कविकोहै। चंदननीरतरंगतरंगितनागरकोऊ
किसागरसोहै॥२६॥वसंतरितुवर्णनं॥दोहरा॥
वरनिवसंतसुपुष्पअलि। विरहविदारनवीर
कोकिलकलरवकलितवन। कोमलसुरभि
समीर॥२७॥वसंतरितवर्णनउदाहरनसवैया

कस्यपकोघरदेवअदेवनिकोमनुमोहै संतर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सं

सीतलसमीरसुभगंगाकेतरंगजुतअंबरविही
नवपुवासुकिलसंतुहै। सेवतमधुपगणगजमु
षपरभृतबोलसुनिहोनमुषीसंतश्री अंसंतुहै
अमध्यहूअदलरूपमंजरीसुषदरजरंजितअं
गाकदुपदेषतनंतुहै। जाकेराजधिमिदिसिफू।
लेहैसुमनसबसिवकोसमाजुकिधौकेसवसंतु
है।२८॥ग्रीषमरितुवर्णनं॥दोहरा॥तातेतरलस
मीरसुष। रूषसरितानाल। जीवअबलजल
थलविकल। ग्रीषमवरनिरसाल॥२९॥ग्रीषम
उदाहरनसवैया॥चंडकरकलितवलितवरस
दागतिकंदमूलफूलफलदलनिकोनासुहै॥
कीचवीचबचेमीनेव्यालचिलकोलऊलकुर
दरीनिदिनकउकोविलासुहै॥थिरचरजीव
नहरनवनवनप्रतिकेसोदासमृगमिरअवनु
निवासुहै। धावनबलधनुषसोहतिनिपांनसर
समरसमूहकिधौंग्रीषमप्रकासुहै॥३०॥व
र्षारितुदोहरावर्णनं॥वरषाहंसप्रयानबक
चातकदादुरमोर। केतकिपुंजकदंबजलसो
दांमिनिघनघोर॥३१॥वर्षाउदाहरनसवैया॥
सोहेंसुरचापचरूप्रमुदितपयोधरभूषनजरा
यजोतितडितरलाईहै। शिकरीसुषसुषउ ॥२७॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

षमुषमासमीकीनैंनअमलकमलदलदलित
निकाईहै।केसोदासप्रबलकरीनुकोगवनह
रमुकतसुहंसकसबदडुषदाईहै।अंबरबलि
तमतिमोहैनीलकंठजूकीकालिकाकिवरषा
हराषिहियआईहै॥३२॥शारदरितुवर्णनदोहरा
अमलअकासप्रकासशशि।मुदितकमलकुल
कास।पंथीपीतरपयाननृप।सरदसुकेसोदास
३३॥शारदउदाहरनसवैया॥सोनाकोसरदनुस
सिवदनमदनुकरवंदैनरदेवकुवलयबलदा
ईहै॥पावनपदउदारलसतहंसकुमारदीप
तिजलजहारदिसिदिसिधाईहै॥तिलकचिल
कचारुलोचनकमलरुचिवउरचउरमुषजग
जियभाईहै॥अमलअंबरलीनलीनपीनपयोर
केसोदाससमारदाकिसरदमुहाईहै॥३४॥अ
थहेमंतरितुवर्नंनदोहरा॥तलतूलततबोलत्रि।
य।तापतपनरतिवंत।दीहरयनिलघुद्योसुसुनि
सीतसहितहेमंत॥३५॥हेमंतउदाहरनसवैया
अमलकमलदललोचनललिगतिजारतस
मीरसीतभीरदीहदुरककी॥चंदकुनषायोजा
इचंदनुनलायोजाइचंदचितयोजाइप्रकृतिव
पुषकी॥घटकीघटतजाइघटनाघटीकुघटी।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

छिनुछिनुछीनछबिरविमुषमुषकी। सीकर
तुसारस्वेदसोहतहेमंतरितकिधौंकेसोदास
प्रियप्रीतमविमुषकी॥२६॥अथशिशिररितुवर्न्न
नंदोहा॥शिशिरसरसमनवरनिसबकेसवराजारंक। नाचतगावतरैनदिनुषेलतहसततनिसंक॥२७॥सिसरउदाहरनसवैया॥सरसअसमशरसरिसजलोचनबिलोकलोकलीकलाजलापिवेकोआगरी। ललितलतासुबाकूजानिज्ञनहानबालविटपउरनिलोगेउमगिउजागरी। पल्लवअधरमधुमक्षपनिपीवतहीरचितरुचिरपिकरुतसुखसागरी। इहविधिसदागतिवासविगलितगातशिशिरकीसाभाकिधौंवारिनारीनागरी॥२८॥इतिश्रीमहिविधिभूषण भूषितायांकविप्रियायांसामान्यालंकारवर्णनंनामसप्तमप्रभावः॥७॥अथराजश्रीभूषनवर्णनंदोहरा॥राजारानीराजसुतप्रोहितदलपतिदूत। मंत्रीमंत्रप्रयानहयगयसंग्रामअभूत॥१॥आषेटकजलकेलिपुनिविरहस्वयंवरजानि॥भूषितसरतादिकनेकरिराजश्रीछिबषानि॥२॥राजावर्णनदोहरा॥प्रजाप्रतिज्ञापुण्यपनपरमप्रतापप्रसिद्धसासननासन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

शत्रुके।बलविवेककीवृद्धि॥४॥दंडअनुग्रह
धारना।सत्यसूरतादांन।कोमदेमजुतवर्नियै
उपमांछिमानिधांन॥४॥राजाउदाहरनसवैया
॥नगरनगरपरघनईतोगाजैंधारिईतिकीनभी
भीतिभीतिअधनअधीरअकीरिनगरीनिप्रत्ति।
होतहैअगम्यगौंनभावेजहांविभचारीचोरीपर
पीरकी।सासनकैंनासनकरतएकगंधासनके
मोदासदुर्गनिदंीदुर्गतीशरीरकी दशादिशिजी
तिपैंअजीतिद्विजदीनहीसौंअसीरीतिरानीति
राजैरघुवीरकी॥५॥राजस्त्रीवर्ननंदोहरा॥सुंदर
सुपदपतिव्रता।सुचिरुचिसीलवमांन।इहिवि
धिरांनीवर्नियै।सलजसुबुद्धिनिधांन॥६॥राज
पत्नीउदाहरनसवैया॥मातानजिमपोषतपिताज्यें
प्रतिपालुकरैप्रभुजिमसासनुकरतहैरदीयैसें
भैयाज्यैंसहायकरैदेवीज्यैंप्रसन्नकैसुधारैप
रलोककौंननातेनाकाहूबियसें।दासीज्यैंटह
लकरैदेनेहसषाज्यैंसुषगुरुज्यैंसिषावैसि
षहतजारिजियसेंछाकेहैअयानमदछिति
केछिनकछुडआरसेंसनहूकरैछाडिअसी।
त्रियसें॥७॥कामकेहैआपनेहीकामरतिकाम
माथरतिनरतीकाजरीकैसेंताहिजांनियै॥अ।

धिकअसधइंद्रइंद्रानीअनेकइंद्रभोगवतनके
सोदासवेदनवषांनियैं। विधिहूंअविधिकी
नीसावित्रीहूंआपदीनीअैसैंसबजुवतिपु।
रूषउनमांनिये। राजारामचंद्रजूसेराजतनअ
नकूलसीतासीनपतिव्रतानारिउरआनियैं॥
८॥राजकुमारवर्णनदोहरा॥विद्याविविधवि
नोदयुत। सीलसहितआचार। सुंदरसूरउदा
रचितु। बरनहुराजकुमार॥९॥राजकुमारउ
दाहरनसवैया॥दाननिकेसीलपरदानकेप्र।
हारीदिनदांनवारिज्योंनदांनदेषियेसुभाइके
दीपदीपहूकेअवनीपनकेअवनीपपृथुसम
केसोदासदिजगाइके। आनंदकेकंदसुरपा
लकेसबालकेतेपरदारप्रियसाधमनवच।
काइके। देहधर्मधारीयैविदेहराजजूसेराज
राजतकुंवरअैसेदसरथरायके॥१०॥प्रोहि
तवर्णनदोहरा॥प्रोहितनृपहितबरणियै। सी।
लसत्यसुचिअंग। उपकारीब्रह्मन्यरिपु जी।
तैजगतअनंग॥११॥प्रोहितउदाहरनसवैया।
कीनेपुरहूतमीतलोकलोकगायगीतिपा
येजूअभूतपूतआरिउरत्रासहे। जीतेजुअ।
जीतभूपदेसदेसबहुरूपअरुकौनकेसो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दासबलकैकोविलासहै। तास्योहरकोधनुषनृप
कुलगोविमुषदेष्यो जबधूंकौमुषसुषमाकौवा
सुहै। कैगएप्रसंन्नरामवाटैयोधनधर्म्मधामकेव
लवसिष्टकेप्रसादकैपकासहै ॥ १२ ॥ दलपतिव
र्णन ॥ दोहरा ॥ स्वामीभक्तश्रमजितसुधी। सेनाप
तीश्रभीति। श्रनालसीजनहितजसी। सुषसंग्रा
मश्रजीति ॥ १३ ॥ दलपतिउदाहरनसवैया ॥ छा
डिदयौश्रतिश्रारसुपारसकेसवस्वारथसाथ।
सुमूरौ। माहसमिद्धप्रसिद्धसदाजललंथलकूं
श्रतिविक्रमपूरौ। साहियेएकश्रनेकनिमांहि।
श्रनेकनएकविनारनरूरौ। राजनुहैतिहिराज
कोराजसुजाकीचमूंमेचमूंपतिसूरौ ॥ १४ दूतव
र्णनदोहरा ॥ तेजवहैनिजराजके। श्ररिउरिउप
जेछोम। श्रंगितजानेंसमयगुन। वरनकूडदश्र
लोभ ॥ १५ ॥ दूतउदाहरनसवैया ॥ स्वारथरहित
हितसहितविहतमतिकामक्रोधमाहछोनलो
भमदहीनहैं। मीतिकृश्रमीतिपहिचानिवैकौं
देसकालबुद्धिबलजांनिवैकोंपरमप्रवीनहैं।
श्रपनीउकतिश्रतिउपरीदैश्रोरनिकौंडूरिडूरि
डुरीमतिलैलैवसिकीनेहैं। केसोदासपरदल
देसदेसरामदेवराजिनिकेदेषिवेकौंदूतद्रग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कं॰प्रि
॥ ३० ॥
61

दीनहै ॥ २६ ॥ मंत्रीवर्ननंदोहरा ॥ राजनीतिरति राजरति। सुचिसर्वज्ञकुलीन। छमीसूरजस सीलजुत मंत्रीमंत्रप्रवीन ॥ २७ ॥ मंत्रीवरननं उदाहरनसवैया ॥ केसवकैसेंहोंवारिधबांधि कहा भयारीछिनजोछितिछाई। सूरिजकोसु तबालकेबालकुंकेनलनीलनीलकदीय हगाई होहनुवंतकितोकिबलीजमकुंपहि। जोरलईजुनजाई ॥ भूषन भूषनदूषनदूषन लंकबभीषनकेमतपाई ॥ २८ ॥ जुद्धजुरैंजुरजो धनसोंकहिकोनकरीजमलोकवसीतो। कर्न कपाडुजेशनसोंबेरुकेकालवचेवरकीजेप्र तीतो। भीमकहाबपुमध्यरुमज्जेनुनारिनप्प वनदीबलुरीतो। केवलकेसवकसवकेमत भूतलभारथपारथजीतो ॥ २९ ॥ अथमंत्रमतिब र्ननंदोहरा ॥ पंचअंगगमुन अंगुषट। विद्याजुतद सचारि। आगमसंगमनिगममति। एसमंत्रबि चारि ॥ ३० ॥ मंत्रीउदाहरसवैया ॥ केसवमार ककोधविरोधतजीमवस्वारथसिद्धिअनेसी भेदअभेदअनुग्रहविग्रहसंधिअसंधिकरी विधिजेसी। बेरिनकोविपदापृभुकोप्रभुताक रिमंत्रनिकीमतिऐसी ॥ गपतराजनिदेवनि।

॥ ३० ॥

62

ज्यों दिन दिव्य विचार विमान निवेसी ॥ २१ ॥ अथ प्रयान वर्णनं दोहरा ॥ चौंर पताका छत्र छबि । दुंदभि धुनि बहु जानि । जल थल मय भूकंप रज रंजित वरनि प्रयान ॥ २२ ॥ प्रयान उदाहरन सवैया ॥ राघव की चतुरंग चमू चय को गनै केसव राज समाज नि । सूर तुरंगनि के उरझें पग तुंग पताकनि के पट साजनि । टूटि परैं मुगता त्तिनतें धरनी उपमा वरनी कविराजनि । बिंदु मनों मुष फेनन के किधौं राज श्री श्रवै मंगल लाजनि ॥ २३ ॥ नाद पूरि धूरि पूरि तोरि वन चूरि गिरि सोषि सोषि जल भूरि भूरि थल गाथ की । केसोदास आसपास ठौर ठौर राषि जन तिनकी संपति सब आपनै ही हाथ की । उन्नत नवाइ नत उन्नत बनाइ भूप सत्रुन की जीविका सुमित्रनि के साथ की । मुद्रित समुद्र सात मुद्रा निज मुद्रित कै आई दिसा दिसि जीति सेना रघुनाथ की ॥ २४ ॥ हय वर्णनं दोहरा ॥ तरलतताई तेज गति । मुष सुष कल धुनि दोषि । देस सुबेस सुलछने । बरनौं बाजि विसेषि ॥ २५ ॥ हय उदाहरन सवैया ॥ वामन ही की कुपद्दुज ना ष्यो न भूतादिक हानी षेप दचारि थिरु । होत हि हत हैं । छेकी छिति छीरनिधि छाडि धा

पछत्रतरऊंडलीकरतलोलचित्तमोललेत
है। मनकेसमीतवरवादनसमीरकेसेनैंननि
ज्योंनैंनीनोंनिनिहकेनिकेतहैं। गुपनगवा
लितललितगतिकेसोदासऋसवाजिरंमरि
नदीननिकोदेतहैं ॥ २६ ॥ अथगजवर्णनंदोह
रा ॥ मत्तमाहावत्तहाथमे। मंदचलनिचलकर्ण
मुकतामययमुकंभसुभ। सुंदरसूरसुवर्ण ॥
॥ २७ ॥ यथा ॥ जलकेपगारनिजदलकेसिंगार
परदलकेविगारकरिपारेपरशेरिटाहेंगढजे
सेंघनमटज्योंमिरतनरनरदेषिदेतआसिका
गनप्राज्ञकेभोरंगोमी। विंधकेसबंधचकवि
दनंदसेअमंदवंदनकीभूंडभरेचंदनकीचा
रुपारि। मूरकेउदोतउदेगिरिसेउदितअति
ऐसेगजराजराजेंराजाहसरथपोरि ॥ २८ ॥
सेनाखांनसनाहरज। सोंहसमसस्त्रप्रहार। अं
गभंगसंघटभट। अधकवंधअपार ॥ २९ ॥ केस
ववरनकुजुद्धमे। जोगनिजनजुतरुद्र। भूमि
भयानकरूधिरमय। मानितमरितसमुद्र ॥ ३० ॥
संग्रामउदाहरनसवैया ॥ आनितसलिलन
रवानरमलिलचरगिरहनचंतविषविभीष
नडारपोहि ॥ चवरपताकावडीवाडवाअन ॥ ३१ ॥

लसमरोगरिपुजामवंतकेसवविचारियोहै। वाजिसुखाजिसुरगजेसअनेकगजभरथसेंबंधइंदुभ्रमतनिहारियोहै। सोहतसहितरामचंद्रकुलसमलवजीतिकैंसमरसिंधसाचेहीसुधारियोहै। २२। अथआषेटकवर्णनंदोहरा। जुरराबहिरीबाजबकु। चीतेस्वानसिचान। सदरबहिलियामिल्लजुत। नीलनिचोलनिधांन। २३। वानरवाघवराहमृग। मीनादिकवनजंत। बधबंधनवेधनअवर मृगयापेटअनेंत। २४। आषेटकवर्णनसवैया। तीतरकपोतपिककेकीकोकपारावतकुररकुलंगकलहंसपाहिलायेहै। केसवसरवस्याहगोससीहरोसहतिकूकरिनिपामसकस्करगहायेहैं। मकरानिकखधिबाधिगजराजमृगसुंदरीदरीनिभीलनीमिनीनिभायेहैं। रीझिरीझिरीझिगुंजिनिकेहारपहिरायेदेपौकामअसेरामकेकुमारदोकुआयेहैं। २५। जलकेलिवर्णनंदोहरा। सरसराजसुभसोभनि। हियसोंपियमनकेलिगहिबोगतभूषनिनिको। जलचरज्योंजलकेलि। २६। जलकेलिउदाहरनसवैया। एकदमयंतीअसीहरेहसिहंसवसएकहंसिनीसीवि

क०वि०

॥३२॥

65

महाराहियेराहिये। भूषनगिरतएकलेतबूडि
वीचिविचिमीनगतिलीनहीनउपमांनरोहिये
एकहरिकंठलागिलागिबूडिबूडिजातजा
लदेषवतासीदृगदेषवताविमोहिये केसोदास।
आसपासभवतभवरजलकेतिमेंजलजमु
षीजलजसीमोहिये॥३७॥ अथविरहवर्णनं
स्वासनिसाचिंतावढे। रुदनपरेषेवांत कोरपी
रेहोतकृस। तातेसीरेगात॥३८॥ भूषप्याससु
धिबुधिघटे। सुषनिद्राद्युतिअंग। दुःषहोतसुष
देसवै केसवविरहप्रसंग॥३९॥ विरहउदाह
रनसवैया॥ वारेसकवरजीमेंसारससरसमुषी
आरसीलेदेषिमुषयारसमेंवारिहे। सोभाके
निहारेंप्यांनिहारतनैनकहूंहारीहे निहा
रिसबकहाकहूंपारिहे। मुषकोनिहारोजुन
मांनोसुनलीकरीबकेमारायकीसोंतोहिजो
तूमनमारिहे। नाहकेंनिहारेकिनमांनतिनि
होरानिसोनरकेंनिहारेफिरिमाहिजुनिहारि
हे॥४०॥ हरिनहरिनहाररोगेतहियोहरतहा
रीहेहरिननेंनिहरिनकहूंलहों। वनमाली
व्रजपरवरषतवनमालीवनमालीदूरिदुष
दासवकेसेसहो। हृदयकमलनेंनदेषिकें ॥३२॥

ष

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कमलनैनंनहोऊंगीकमलनैनंनश्रोरहौंकहाक
हौं।श्रापघनघनस्यामघनहीमेहोनघनघनन।
केहोसघनस्यामविनुकेयोंरहो॥४१॥मेसकेहीस
कैंश्रासउसाससनिसाथनिसासविसाससनिवारी
हासगयोउडिहंसनिज्योंचपलासमनीदनईग
तिकाढी।चातकज्योंपीउपीउरटीचढिनापनर
गिनित्योंतनगाढी।केसववाकीदसासुनिहो।
अबआगिबिनाअंगअंगनिडाढी॥४२॥भूलि
गयोसबसोंरसरोसमिटभयकेभ्रमरोनिविभा
तो।कोअपनेपरकोपहिचाननजांननिनाहिनै
सीतलतातो।नैंऊहींमेंवृषभांनललीकोंभई
सुनिजाकीकहीपरवातो।एकहीवारनजांनि
येकेसवकोहतेछूटिगईसुधिसातो॥४३॥अ
थस्वयंबरवर्णनंदोहरा॥सचीस्वयंवररचियेमं
डलमंचवनाउ।रूपपराक्रमवंसगुन।वरनोरा
जाराउ॥४४॥स्वयंवरउदाहरणसवैया॥मंडली
मंचनिकीनृपमंडलमंडितदेषियेदेवसभासी
दंतिनिदुतिदेहकीदीपतिभूषनिजानिअनेक
अभासी।फूलनिकीछविअंबरकीछविछत्र।
निकीछविनैछनभासी।मोहतहैअतिसीयस्व
यंवरआंननचंदप्रवेषप्रभासी॥४५॥अथसुर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नवर्णनदोहा॥ सुरतमात्तकीभावभनि। मनि
तरनितमजीर॥ हावभावबहिअंतरत। अल
जमलहूसरीर॥५६॥ सुरतउदाहरनसवैया
केसोदासप्रथमहींउपजतभयभीरोमरुचि
स्वेदकंपनीगहतहै। प्रानपियबाजीक्र
तवारनपदातिक्रमविविधसबदहुजदान।
निलहतहै। कलितहूपानकरसंकतिसुमा
रतनत्रानसजिकरजप्रहारनिसहतहै। भू
षनसुदेसहारहूषनसकलहोतसषीनसुर
तरीतिसमरुकहतहैं॥५७॥ इतिश्रीमद्विविध
भूषणभूषितायांकविप्रियायांसामान्यालंका
रवर्णनेनामअष्टमप्रभाव॥८॥ अष्टमवसिष्टा
लंकारवर्णन॥दोहरा॥ जातिसुभावविभाव
ना हेतविरोधविसेष॥ उत्प्रेक्षाआछेपक्रम॥
आसिषप्रेमश्लेष॥१॥ युक्तअयुक्तवषानिये॥
जुक्ताजुक्तसमांन। औरअजुक्तजुजुक्तकवि
केसवदासनिधांन॥२॥ सूछिमलेसनिदरस
निनबरनोबुद्धिनिधांन॥ अहंकारउपजेक
रूं। कहिरसवंतप्रमांन॥३॥ व्यतिरेकाअन्य
थेके। न्यासअपकुतिउक्ति॥ व्याजस्तुतिनिंदा
अमितपर्याजुक्तायुक्त॥४॥ सहितसमाहित

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

समुझिके। वरनिसुसिद्धसमीति केसवदासप्र
कासवसि। कहिप्रसिद्धविपरीति ॥५॥ रूपकदी
पकहेलिका। परिब्रत्तउपमाचित्र। भाषाश्लेते
भूषननि। भूषितकीजेमित्र ॥६॥ अथजातिल
छनदोहरा॥ ॥जाकोजैसोरूपगुन। कहिजैते
हीसांज। तासोंजातिसुभावसब। कहिवरनत
कविराज॥७॥ जातिउदाहरनसवैया॥इकती।
सा॥पीरीपीरीपाटकीपिछौरीकटिकैसोदास
पीरीपीरीपागपगपीरीयेपनहीयां। बडेबडे।
मोतिनकीमालाबडेबडेनैननान्हीनान्हीभृ
कुटीकुटिलवघनहीयां। बालनिहसनिमृदु
चलिनचितौनिचारुदेषतहीपलवैनेपैनक
हतबनहीयां। सरजूकेतीरतीरयेलैवारघु
वीरहाथदैदैतीरगातीरातीयेधनुहीया॥८॥
अथप्रभुभाववर्न्ननं॥सवैया॥गोरेगातपातरीन
लोचनसमानसुषउरउजातनेकीवातअवरो
हिये। हसतकहतवातफूलसेझरतजातवो
लअवदातरातीरेषमनमोहिये। स्यामलक
पूरिधूरिकीउडनीढेकडिधूरिअसीलागी।
कैसोउपमानरोहिये। कामहीकीदुलहीसी
काकेकुलहीमुलहलदीललितलतासी।

लालमोहियै ॥ ९ ॥ अथविभावनालछनदोह
रा ॥ कारिजकौविनुकारनहि । उदौहोतजिहि
ठौर ॥ तासोकहतविभावना । केसवकवि
सिरमोर ॥ १० ॥ विभावउदाहरनसवैया ॥ पूर
नकपूरपानषायेकेसोसुषवासअधरुनरु
चिसधरसुधारेहैं ॥ चित्रनिकपोलनलो
चननिकरुनैननअमलफलकझलनिमोहि
मोरहैं ॥ भृकुटीकुटिलजैसीतैसीनकरैंहुं
हौंयहिआनियेसीआंषेकेमोरायहेरिहारे
हैं ॥ काहेकोंसिंगारकैविगारतिहैमेरीआली
तेरेअंगसहजसिंगारहीसिंगारहैं ॥ ११ ॥ द्वती
यं ॥ कारनकोनकुंआनतैं । कारजहोंहिजा
सिद्ध । जानौयहैविभावना । कारिनछांडिप्र
सिद्ध ॥ १२ ॥ सयथा ॥ नेकनभौंहनवाईचढा
ईनवेलीबनावतवंकभईहै ॥ लोचनश्रीवि
धुकायेविनाविसुकीसीफिरैचितुरागमईहै
केसवकौंनकीसीषदईइहचंदमुखीगति
मंदलईहै ॥ बोलीनकूहीगईकटिछीनसु
आवनकीयहरीतिनईहै ॥ १३ ॥ अथहेतल
छनदोहरा ॥ हेतहोतहैभांतिद्वै । वरनतसव
कविराव ॥ केसवदासप्रकासकरि । वरनि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सभा अ्रुभाव ॥ १४ ॥ सभावहेतसवैया ॥ केसवचं
दनहूं दघनैअरविंदनिकेमकरंदपूरारीरो। मल
तीवल्लिगुलालसुकेतकीकेतकिचंपककोव
नपीरो। रंभनिकेपरिरंभनसंभ्रमगमेघनाघ
नसारकोजीरो। सीतलमंदसुगंधसमीरह्यैयो
इनिसैंमिलिधीरजधीरो ॥ १५ ॥ अभावहेतउदा
हर ॥ जान्यौनमैंमदजोवनकोउतस्योकबका
मकोकामगयोई। छोडनचाहतजीवकलेवर
जीवकलेवरछाडिदयोई। आवनजांतजुरा
दिनलीलतरूपजरासबलीललयोई। केस
वरामरेनरेअनसाधेहीसाधनसाधभयोई ॥
१६ ॥ अथसभाअभावहेतसवैया ॥ जादिनतेंदृ
षभानललीहिअलीमिलिईमुरलीधरतेंदी
साधनेसाधअगाधिसबैसुधिसाधिजहूतअ
भूतनिमेंदी। तादिनतेंदिनमाडुकूंनकीकेस
वआवतवातकहेंहंदी। पीछेअकासप्रकास
ससीचढिप्रेमसमुद्रहदैपहिलेंदी १७ ॥ अथ
विरोधलछनं ॥ दोहरा ॥ वर्नतलगैविरोधसो। अ
र्थसबैअविरोध। प्रगटविरोधाभासयह। समझ
तसबैसुबोध ॥ १८ ॥ विरोधउदाहरनसवैया ॥
परमपुरूषऊपुरषसंगसोभियतदिनदाना।

सीलपेऊदांनहीसौंरतिहै॥ सुरिजऊलक
मराहकैरहतसुषसाधककैहैसाधपरदार।
प्रियअतिहै। अकरकहावतधनुषधरैदेषि
यतपरमक्रियालैपेक्रियांनकरघतिहै॥ वि
द्यमानलोचनवैहीनवामलोचनसुकेसोद
मराजारामअरभुगतिहै॥१९॥ आपसिता।
सितरूपचित्तचिस्यामसरीररगेरंगरातें। के
सवकाननिहींनसुनैसुकैहेरसकीरसबिनु
वातें। नैनकिधौंकोऊअंतरजामीहैजानत।
नाहिनैबूझतितातें। हरिलोंदोरतिहैनिनुपाइ
निहरिपुरीदरसैंमतजातें॥२०॥ सोभनुसुवा
सहाससोसुधास्यौविधविषकोनिवासुजे
सीतैसोमाहकारीहै। केसोदासपावनपरम
हंसगतितेरीपगहियहरनप्रकृतिकोनेपारी
है। एरीमेरीसषीतेरीकैसकैप्रतीतकीजेहरि
अनुरागीहैगकरुनानुसारीहै। बारकबिलो
किबरबबीरसबलीनिकऊकरतिबिरहब
सव्यासीबेसबारीहै॥२१॥ अथविसषलछन
दोहरा॥ साधनकारनविकलजहां। होइसा
धिकैसिद्धि। केसवदासवषांनिजे। सोविस
षपरसिद्धि॥२२॥ विसेषक्ष उदाहरन॥सवै०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सपकोंकंकनमाल्लकपालजटानिकेजू
टगहीजरसिग्रोतें। षालपुरानीपुरानोइबे
लुरुखोरकीग्रोरकेहैविषमानें। पारबती
पतिपतिसंपतिदेषिकेहयहकेसवसंभ्र
मनातें। ग्रापुनमागगनभीषनिषारानिदेन
हईमुहमांगपोकहोंतें।।२३।।नमागुनपतनवो
पतनेवरूपैनेनलोकनविलोपकरिकोपके
निकेतहे। मुषविषभरैविषधरैधरैमुंडमा
लभूषितविभूतिवतनसमेतहे। पातकपि
कैंजुतपातकहीकोतिलकभावैगीतकाम
हीकेकामिनिकेहेतहे। जागनिकीसिद्धिस
बजगकीसकलासिधिकेमोदासदासनि
ज्योंदासनिकोंदेतहे।।२४।।वाजिनहीगज
गनहीरथपत्तिनहीवलगातविहीनो।के
सवदासकठोरनतिछनभालिहोंहाथहा
थ्यारनलीनो। जोगुनजाननमंत्रनपागप
पठ्यानरध्योकरिजंत्रप्रवीनो।।२६।।कलोक
निकोसुगवारनिएकविलोकनिहींवकि
नो।।२५।। ग्रथपुन्यपयथावा।।दोहरा।।वांचिन
ग्रोवेलिखिकछू। देषतछोंहनघाम। ग्रर्थ
सुनारीवेहई। करिजानतपतिराम।।२६।।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

क० ॥३६॥ 73

पुनिरसिकप्रयायोयथा॥ ब्रजकी ऊमारि। वेल्ली निसुकसारिकापढावैंकोककारिकानिकेसवसबैनिवारिहिगोरीगोरीभोरीभारीथोरीवेसिफिरैवनामीदोरीदोरीआईचोरीचोराचाहि॥ विनगुनतरीआनभ्रकुटीकवानतानिनयनकटाक्षबानयहअचोरजआहिएतमोनिटीठईवतेरकीआडीगमनुपीछितुदैमारतियेचूकतनिएकौतारि॥२७॥ अथउन्नोछालछन॥ दोहा॥ केसवन्नादीवस्तमें। औरेकीजेतर्क। उन्नज्ञातासोंकहै। जिनकेबुद्धिसपर्क॥२७॥ हरकोधनुषतारिलंकातारिरावनकोवसनोस्यातोगेजसेंइहहसवानहै। सतुनकेसूलफूलसमसहरामदेवकेसोदास जाकेसुनेदियहहरातहै। कामतीरक्षतेछतारतरुनीनिकेलागिलागिउचटिपरतअसगाततहै। भैरजानजानुकीतुंजानतहैंजोनकछूदेषतहीतेरेनैनमैनसेफेजातहै॥२०॥ अकनप्राप्तकनपयाधकूकीपकनमेअंजननरंजउरजनिनिजुनारीको॥ नांहिनिर्ककमलक ॥३६॥

ल

74

ततमपानकीनछितिछांहछाईछबुनोदी
सुषकारिकों। केसवकेपाननिधांनदेषयै
विराजमानमानियेप्रमांनरामवेनुवन
चारीको। लागतहेजायकंठनागदिक
पालिकेमैरेजानुसोईऋतुकीरतितिदा
रीको॥१२॥इतीश्रीमकविविधभूरवनभूषिता
यांकविप्रियायांवषिष्टालंकारवर्णनंना
नवमप्रभावः॥९॥आक्षेपालंकारवर्णनं
दोहरा॥ करिजकेआरंभही जहकीजतु
प्रतिषेधः। आक्षेपकतासोंकहत। बहुवि
धिबरनिसुमेध॥१॥तीनकुलोकवषांनि
जे।भावीभयोजुहोइ। कविकुलकोऊय
हकहत। प्रतिप्रतिषेधउहोइ॥२॥ बरजेंपोंहो
हरतिपरकु बारककरिभ्रुभंग।३।तोतेना
रिनकीजई कानकुंमयभ्रुभंग कोजों।
नेधोहेकहां।प्राणनाथकोअंग॥४॥कोवि
दकपरनकारमर। लगतनअहजानउ
छाकु। प्रतिपलनातननेहको। पहिरैना
कुसुनाकु॥५॥अथआक्षेपनांमा॥दोहरा
प्रेमअधीरजधीरजन। संसेमरणप्रकास
आसिषधर्मउपायकहि। सिछाकेसवदा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स॥६॥ प्रेमाक्षेपलछनं॥दोहरा॥ प्रेमबषांन
नतही जहां। उपजतु काजिबाधक। कह
त प्रेमआक्षेपयह। तासो केसव साधक॥७॥
सवैया॥ ज्यौंबकुवरजेमसरेपांनप्रानना
थआगिनलगाइयेजुआगउयपाआइवो
त्यांत्यांहासहासिअतिउरपरेधरिकरिकौ
वोकरे आपिनेकउपरिपिलाइवो। एकोप
लश्ततउतसाथतेनजांनहीनलीनुफिर
हाथहीकहालोगुनगाइवो। तुम्हतोकह
तइन्हैछाडिकेचलनअबछाडतएकैस
तुम्है आगेउठिधाइवो॥१॥ अथअधैर्याक्षे
पलछनदोहरा॥ प्रेम भंगभयसुनतजह
उपजतसात्विकभाव। कहतअधीरज
कौसुकवि। यह आक्षेपसुभाव:॥८॥ अथै
र्योदाहरनसवैया॥ केसवप्रातवडेही
विदाकउआयप्रियापहिनहनेहरी
आऊंमहावनकेजुकहाहासिबालहे
असेवराइकहेरी। सुकोपप्रतिउतरदे
इसषीसुनिलोलविलोचनयोंउमहे।
रीसोहैकेहैहरिहारहेअधरातक
लोंअसुवांनुरहेरी॥२॥ अथधैर्योक्षे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

76

दोहरा ॥ कारिजकरकहियतवयन का
जनिवारन अर्थ ॥ धीरजको आक्षेपयह ॥
वरनतबुधसामर्थ ॥ १० ॥ चलनचहतदिन
वकुविनीतभयसऊविनकंतचितुचलन
चलाएही । जातहैतकहोकहानांहिनेमि
लतआनिजानियहछाडोमाहवटनव
हाएही । मरीसांउमहिहहिरहीयासुषही ।
सुषमाकुहेतिहारीमोहिहैहोसुषपाएही
चलेहीवनतुजीतोचलीयवउरपीवमाव
तहीछाडिजैयेजागोगीहौंआएही ॥ ३ ॥
अथसंसयाक्षेपदोहरा ॥ उपजायेसंदेह
कछु । उपजतकाजविरोध । यहसंसयआ
क्षेपकहि । वरनतसबसुबोध ॥ १२ ॥ गुननि
वलितकलसुरनिकालितगायललिता
ललितगीतश्रवनरवाइहे ॥ चित्रतिहैचि
त्रनिमैंपरमविचित्रतुमचित्रनीज्योंदेषि
देषिनैननिनवाइहै । केमोराइकीसोंमा
हियहहीकहिनवाकीरमनैंरसिकला
लपानकोषवाइहै ॥ ४ कांमकीविरोधी
मतिमाधिसाधिसाधकसिषीबाधिबाधि ।
क्रोधनिकेवासुरगवाइहै ॥ ५ मरनाक्षे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

परोहरा॥ मरननिवारनकरतजह का
जनिवारनहोत। जानकुमरनाछेपयह
जोजियबुद्धिउदोत॥११॥ मरनाछेपउदाहर
नसवैया॥ नीकेकिवारदैहौंद्वारद्वार
दरबारकेसोदासआसपासस्वैजन
छावैगो। छिनमेंछवाइलैहौंउपरिछ
अगानिआजुआंगनपटाइलैहौंजे
सोमोहिभावैगो। न्यारेन्यारेनारिदौन
मूंदृगीझरोषाजोनिजाइहैनपांनीपो
नआवननपावैगो। माधौ*जीतिहा
रेपाछैमोपहमरनमूढआवनकद
नसुधाकोनुपैंडोआवैगो॥५॥ आ
सिकाछेपदोहरा॥ आसिषपीयकेंपं
थको। दीजैदुरकदुराइ। आसिषको
आछेपयह। वरनतहैकविराइ॥१२॥
आसिकआछेपउदाहरसवैया॥ मं
त्रीमित्रपुत्रजनकेसवकलत्रगनसो
दरसजनजनभटसुषसाजसो॥ ऐतो
सबदोनजातजोपहेकुसलगातत्र
वहीचलोकिप्रातसगुनसमाजसो।
कीनोजुप्रयानबाधकछमीयेसुत्र्प

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

राधरहीयेनपलुआधकहं[illegible]येसुलाज
सों।हैंनकहौंकहतनिगमसबअबत
बराजनपरमहितअपनेहीकाजसों।
६॥धर्माक्षेपलछनदोहरा॥राषतअप
नैंधर्मकों।जहांकाजिरहिजाइ।धर्मा
क्षेपसदायहै।बरनतसबकविराइ॥३॥
धर्माक्षेपउदाहरनसवैया॥जैहौंकहौंर
हीयेतोप्रभुताप्रगटहोइवतकहतहित
होनिनाहींसहनैं।भावेसुकरकंतोउदा
सभावप्राननाथसाथहींचलौतोसैलो
कलाजवहनैं।केसोराइकीसोंतुमसुन
कुछबीलेलालचलैंहींवनतजोपैंना।
हीराजरहनैं।तैसीयसिषावोसीषतुम
हींसुजांनपियतुमहिचलनमाहिजैसें
कछुकहनैं॥७॥उपायाक्षेपदोहरा॥को
नकुएकउपायकरि।राकीयेपीयप्रस्था
नु।तासोंकहतउपायकवि केसवदास
बषानु॥१५॥प्रयावआक्षेपउदाहरनस
वैया॥मोकौंब्रजकीयुवतीहरिगोरिस
मासुहागिनिजानैं।औसीकोगापीगुपा

सवैं

कवि॰ ३९॥
79

लतुम्हेंविनुगोकुलमेंवसिबोउरत्र्प्रानें॥ मूरतिमेरीत्र्पडीठकैईठचलोकिहीजु कह्मनमानें। पमनिछैमनिन्र्पादिदैके सवकोऊनमोहिकहुंपहिचानें॥८॥ शिष्याहेपलछनदोहरा॥ सुषहीसुषजहा रापिजे। सिषहीसिषसुषदानि। शिष्या हेपकह्योवरनि। छपदवारहवानि॥९॥ शिष्याउदाहरन॥छप्पय॥ फूलीलति काललित। तरूनतनफूलेतरवर। फू लीकामिनिकामरूपकरिकंतनपूजहि सुकसारीकुलकलितचितकोकिल कलकूजहि। कहिकेसवऐसीफूलम हिफूलहिमूलनलाईयै। पियत्र्पोपच लनकीकाचलेविनुनचैनचलाईये॥ केसवसवदासत्र्पकास। त्र्पवनिवासि तसुवासकरू। वहतिपवनगतिरंगगा तमकरंदविंदुधरू। दिशिविदिशिनिछ विलागिभागपूजतिपरागवरू। होतगं धहीत्र्पधवधिरबोराविदसनर॥ सुनि सुषदसुषदशिषशिष्यपतिरतिसिषई

फूलीसलितासुभगसरसफूलेसबसरवर १२

३९

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुषसाषमें। वरविरहनिवषनुविसेष
करिकामविसरवैवेप्राषमें॥ ७॥ एकउ
तमयहोत॥ भूतभजिपंचषतत्रम। अ
निलअंबुआकास। अवनिअकंजात
अगनिसम। पंथथकितमदमुक्तित मु
षितसरसिंधरजोवत। काकोदरकर
कोसउदरतरकेहरसोवत। प्रियप्रव
लजीवरहिविधिअबलसकलवि
कलजलथलरहत। तजिकेसवदा
सउदासमतिजेउमासजेठकहत॥ ११
पवनचक्रपरचंडचलतचहुंवोरचप
लगति। भवनभामिनीतजतभ्रमतमा
नहुतिनकीमति। संन्यासीइहमासहो
तइकआसनवासी। पुरषनकीकोक
है। भयपंषीयोनिवासी। यहसमयसे
जसोवनलीयोश्रीहिसाथश्रीनाथ
हूं। कहिकेसवदाससअसाढचलमेंन
सुन्योंश्रुतगाथहूं॥ १२॥ केसवसरि
तासकल। मिलितसागरमनमोहे
ललितलतालपटाति। तरुनतमतर

बरमोहै। चितचपलामितिमेघ।च
पलचमकतचहूंवोरनि। मनभावन
कहमोहि। भूमिकेजातिमिसिमोरनि
इहरीतिरमनरमनीनिसव। रमनतन्य
हलोगरमावन। पीयगमनकरनकों
कहै। गवनसुनीयेनहिमावन॥४८॥
घोरतघनचहुंवोरघोषनिरघोषनि
मंडहि। धाराधरधरनिमुसलधार
निजलछंडहि। झिल्लीगनझंकारप
वनझुकिझुकिझकझोरे। सिंघवाघ
गजातिपुंजकुंजरबलतोरे। निसि
दिनविसषनिसेषमिटिजातुसुवा
लीबोडीयै। देसपियूषविदेसविष
भादोभवननबोडियै॥४९॥ प्रथमपिं
डहितप्रगटपितरपावनघरआवे
छत्रनिदैछत्रपतिलेतभुवलेसगपं
डित। केसवदासअकासअमल
जलजलजनिमंडित रमनीयरम
नरजनीसरु। चिरमारमनकुरास
रासि। कलिकेलिकलपतरक्वारम ॥८०॥

हूकंतनकरकुचिदेसमति ॥ ९५ ॥ वनउप
वनजलथलअकासदोसंनिदीपग
नसुयहीसुषदिनरात ॥ जुबोषलतदं
पतिजनदेवचरित्रविचित्रचित्रचितत
अंगनघरजगतजगतजगदीस ॥ जो
तिजगमगतिनारिनर। दिनदानहूंन
गुनगांनहरि। जनमसफलकरिलि
झीयै ॥ ॥ जसिकेसवदासविदेसम
मति कंतनकातिगकिझीयै ॥ ९६ ॥
मासनिमैंहरिअसकहतयासौंसब
कोऊ। स्वारथपरमारथनिदेतभारथ
महिदोऊकेसवसलितासकलफू
लफूलेसुगंधगुरु। कुंजनिकलक
लहंसकलितकलहंसनिकेसुरु ॥
दिनपरमनरमसीनगरमकरमकर
मयहपाइरति। करिप्राननाथपरदे
सककुमारगसिरमारगनिचित ॥ ९७ ॥
सीतलजलथलवसनअसनसीत
लअनरोचककेसवदासअकास
अवनिसीतलअसुमोचक। सेलत

लतेबोलतपनननवनारी।राजरंकसब
छोडि।करतइनदीअधिकारी।लघु
दीपकेहथ्यौसरजनीनिसुनि।होतदु
सहदुषरूसमैं॥२८॥वनउपवनकेकी
कपोतकोकिलकलबोलत।केसव
फूलेभमरभरेबकुभाइनडोलत।मृ
गमदमलयकपूरधूरिइसरितिदसौं
दिसि।तालमृदंगउपंगसुनतसंगीत
गीतनिसि।षेलतवसंतसंततसुघर
संतअसंतअनंतगति।घरूनाहनबा
डकुमाथबैंजोमनमाहसनेहमति॥
॥२९॥लोकलाजतजिराजरंकनिर
संकविराजति।जोईभावतसोइक
हतहसतपुनिकरतनेलाजत।घरि
घरजुवतीजुवनिजोरगहिंगंगनिजो
रहि वसनछीनसुषमांजिआंजिलो
चनततनतोरहि।परवासरसुवासअ
कासउठि।नवमंडलिसबमंडिये क
हिकेसवदासविलासनिधिफागुन
फागनछंडिये॥३०॥इतिश्रीमदिविधि

मखवनभूषितायां कविप्रियायां आक्षेपा
लंकारवर्णनं नाम दसमप्रभावः १० अ
थ क्रमालंकारलछन दोहरा ॥ ॥आ
दि अंत भरि वरनियै सो क्रम केसवदास
अरु गननासों कहत हैं जिनके बुधिप्र
कास ॥१॥ छप्पय ॥धिक मंगन विनु गुनहि
गुन सु धिक सुनत न रिझय रिझ क धि
क विनु मोज मोज धिक देत जु षिझय ॥
दीवो धिक विसाच ।सा च धिक धर्म न भा
वै ।धर्म सु धिक विनु दया । दया धिक अ
रिक हं आवे । अरि धिक चित्त न सालई
चित धिक जहां न उदार मन । मति धिक
सु केसव ज्ञान विन । ग्यान सु धिक विनु
हरिभगत ॥१॥ सवैय्या ॥ सो मित मान सभा
जहां वृद्धन वृद्धन सो जु पढे कछु नांही ॥
ते न पढे जिन साधन साधत दीन दयान
दिपे जिय मांही ॥ सो न दया जु न धर्म धरे
धर धर्म न सो जहां दान वृथा ही ॥ दानु न
सो जहां सांच न केसव सांचु न सो जु व
से छल छांही ॥२॥ छप्पय ॥ न जहि जगत

कवि
॥४२॥
85

विनुभुवन॥ भुवनतजित्रियविनुकिन्ह
कु। त्रियतजिजुनसुषदेइ सुषाहितजि
संपतिहीनकु। संपतितजिविनुदान सं
नतजिजहाँनविभ्रमति॥ विप्रनजकुवि
।नुधर्मधर्मतजियहविनभुअपति। न
जिनृपभूमितिनु। दीहदुर्गविनुसेवस
इतजिदुर्गनुकेसवदासकवि। जहाँन
जलपूरनलसेइ॥ अथमननाम॥ दोहरा
एकआत्माचक्ररवि। एकशुक्रकीदि
ष्ट एकद्विरदनगनेसकौ। जानतसिग
रीसृष्टि॥२॥ नदीकूलद्वयरासुत। पक्ष
षड्गकीधार। द्वैलोचनद्विजजनमपर
भुजअश्विनीकुमार॥३॥ लोचनडंकभु
जंगकी। रसनाअयनविसेष। गजरद
सुषचुकैडुकें। कछासिषासुलेष॥ ध
गंगामगगंगजुगडगा। ग्रीवरेषगुनलेष
पावककालत्रिमूलवलि। संध्यातीन
विसेष॥४॥ पुष्करविक्रमरामविधि त्रि
पुरत्रिवेनीचैद। तीननापपरतापपर
त्रुरकेतीनसुषद॥५॥ वेदवदनविधि ॥४२॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वारिनिधि हरिवाहनभुजचारि। संना
अंगउपावजुग। आश्रमवरनविचार
॥७॥ सुरनाइकबारनरदन केसवरि
साव षांनि। चतुर्व्यूहरचनाचमू। चर
नपदारथ जानि॥८॥ पंडहूतइंद्रीकव
ल। रुद्रबदनगनिबान। लछनपंचसु
रांनके। पंचअग्नअरूप्रांन॥९॥ पंचव
रगअरूपंचतनरू। पंचसबदपरिमांन
पंचअंसंधिपंचाग्निभनि। कंन्यापंच
प्रमांन॥१०॥ पंचभूतप्रातकप्रगट। पं
चयज्ञजीयजांनि। पंचगव्यमातापि
ता। पंचाम्रतनिवषांनि॥११॥ कुलिस
कोंनषटतकंषट। दरसरसऋतुअं
ग। चक्रवर्तिशिवपुत्रमुख। सुनिषट
रागग्रसंग॥१२॥ षटमाताषटवदनकी
षटगुनबरनद्रुमित्त। आतताईनर
जुषट। षटपदमधुपकवित्त॥१३॥
सातरसातललोकमुनि दीपस्वर
हयबार। सागरसुरगिरतालतरु॥
ऐनईतकरतार॥१४॥ सातछंदसातो
पुरी। सातकुधासुरसात। चिरंजीव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मुनिमातनर। सप्तमात्रिकातात॥२५॥
जोगअंगदिग्पालवस। सिंकुलाचलसार॥२६॥ अंगहारभूषंडरस। वाधनिकुचनिधिजांनि सुधाकुंडप्रदनाडिका नवधाभागतिवर्षांनि॥२७॥ रावनशिरश्रीरामके। दसअवतारवर्षांनि विश्वेदेवादोषदस। दशादिशारदशाजांनि॥२८॥ **सवैया**॥ एकथलक्षिनपेवसनप्रतिजनजीयदेकेरपेदेसमदेशाकरकोधरतुहै। त्रिगुनकलितवकुचलितललित। गुनगुनीनिकेगुनतरूफलितकरूतुहै। चारकुंपदारथकोलोभूचितनितनितदीवेकोपदारथसमूहकोपरतुहै। केसोदासइंद्रजीतभूतलअभूत। पंचभूतकीवभूतभवभूतकोसरतुहै॥४॥ दसैसेनसरसेनरससिरनावेनिनषटदरसनहीकोसिरनाइतुहै॥ केसोदासपुरीपुरपुजनिकोपालनूपेमाहीपुरीसोपूरीप्रेमपारयतुहै॥ नायकाअनेकनिकोनायकनिगमनवल्लभनारकानि॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

य

हीसौंमनलाईयतुहै। नवधाईहरिकौ
नजनुइंद्रजीतजूकैदशअवतारही
कोगुनगाईतुहै॥५॥ इत्यादि॥ अथ अ
सिषावर्णनं॥ दोहरा॥ मातपितागुरुदे
वमुनि। कहतकछूसुषपाइ। ताहीसौ
सबकहततहै। आसिषकविकविराइ
१९॥ आशिषाउदाहरनसवैया॥ मल
यमलितवासकुंकमकलितजुतजा
वकऊसमनषएजितललितकर॥
जटितजराइकीजंजीरबीचनीलमनि
लागिरहेलोकनिकैनैंनमानौमीन
हर। रूपपरगयपरपालिकसुपीठप
रिअरिउरपरिअवनी॥ सिनिकेसीस
पर। चिरुचिरुसोहैरामचंदकेचरजु
गकेसोरासदीवाकैरआसिषअसे
षनर॥२०॥ अथप्रेमलछनउदाहरन
दोहरा॥ कपटनिपटमिटिजाइजाहे
उपजेपूरनहेम। ताहीसौंसबकहत
है केसवउत्तमप्रेम॥२०॥ प्रेमउदाहर
नसवैया॥ कछुबातसुनैसुपनैहौंवि
योगकीहौंनकहैंबिबिदूकहेयो॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कवि० ॥५५॥

89

मिलिपल्लीयेजासकुंबलकतेकहि
तासोंअबोलेंक्योंजातजीयो। कहि
येकाहाकेसवनेंननिसोंबिनुकाज
हीपावकपुंजपीयो। सषितेवरजेंअ
रुलोगहसेंसबकाहकोंअसोईने
मलियो॥७॥ अथश्लेषालंकारदोह
रा॥ दोइतीनअरुभांतिबकु। आनत॥
जामेंअर्थ। श्लेषनामतासोंकहे। जि
निकेबुद्धिसमर्थ॥२१॥ द्वेअर्थउदाहर
नसवैया॥ धरनिधरनिईसमसीसचर
नोदकनिगावतचतुरमुखसबसुष
दानिये। कोमलकमलकरकमला
करकमलकलितललितगुनकेयान
उरआनियें। हरिनकसिपदानकारी
पहिलादहितद्विजपरउरधारीवद
निबषांनियें। केसोदासमरारदकुरद
केबिदारिबेकोंएकेनरसिंघकिअ
मरसिंहजांनिये॥८॥ त्रिअर्थउदाह
रनसवैया॥ परमविरोधीअवरोधीजे
कहतसबदाननिकेदानदिनिकेस
बप्रमानहे। अधिकअनंतअंगसो
॥५५॥

से

९०

हतञ्चनंततसंगञ्चसरनसरननिरहक
निधांनहै। कृतमुकहितमतिश्रीपतिव
मतिहियभावतुहैगंगाजलजगकोनि
दांनहै॥ केसोदासकीसोंकहैकेसोरा
इदेषिदेषिरुद्रकिसमुद्रकिअमरसिं
घरानुहै॥ ८॥ बारञ्चर्थउदाहरसवैया॥
दीनबारिसुषदजनकजातनानुसरबर
षतधनुमनुसरसमुदायएहैं॥ नरदेव
छयकरकरमहरनषरदूषनकेनखे
छ दूषनसुकेसोदासगाएहै। नागधरि
त्रियमानलोकमातासुषदानसोहरस
हारकनदलगुनभाएहै ञ्चैसराजारा
मब्रजरामकिपरसरामकिधौंबलिरा
मबलहियअञ्चाएहै॥ ९॥ पंचञ्चर्थउदा
हरनसवैया॥ भावनपरमहंसजातिगुन
मुनिसुषपावतसगीतमीतरिवधबषा
निये। सुषदसकतधरसमरसनेहीबकु
वदनविदितजसकेसोदासगानिये। रा
जेद्विजराजपदभूषनविभालकमला
सनप्रकासपरदारप्रियमांनिये ञ्चैस
लोकनाथकित्रिलोकनाथनाकना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

क॰ ४५
९१

थकिधौंरघुनाथजानिये॥११॥ अथ भिन्न उदाहरन सवैया॥ भावतपरम हंसजानिगुनसुनिमुखपावतसमी तमीतविवधपानिये सुषसमक सोहतसुकेसीमंजुघोषारतिउरवसी राजारमनमोहिवेकोसुरतिसुहाईहै कलरवकलितसुरभिरागरंगजुत वदनकमलषटपदछविछाईहै॥ भ्रकुटीकुटिलधनुलोचनकटाछ सरभेदीयतुमंजुतननतनसुषदाई। है प्रमुदितपयोधरदामिनिसीसा थनाथकामकीसीमेनाकामसेना वनिआईहै॥१२॥ भिन्नपदउदाहरन सैया दोहरा हंषभवाहिनीअंगउरवा सुकिलसतप्रवीन। सिवसंगसोहै सदा। सिवाकिरायप्रवीन॥२७॥ सवैया॥ राजारजकेमोदासदूटतअरु नलाप्रतिभटअंकनिनैंअंकप रसतुहै। सेनासुंदरीनिकेविलोक भिरवभूषननिकिलिकिलिकी जाहीताहीकोधरतुहै॥गाढगढष

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

92

नहीपिछौनानिज्योंज्योंनोरिडोरेजगज
यजसचारुचंदकोंअरतुहै। चंडसेनभुव
अपालअंगनविसालतेरकरवालवाल
लीलासीकरतुहै॥ ५२॥ भिन्नपद॥ प्रथमप्र
यागियुतुवाजहिजराजप्रेमभिसुवरन
सहितअंगविक्रमप्रसंगरंमतिसुवरन
सहितनविहितप्रमानहै॥ सजलसहित।
अंगविक्रमप्रसंगरंगकेसबैंप्रकासमान
धीरजनिधानहैं। दीनकोदयालप्रभिभ
टकोसालकैरकीरतिकोप्रतिपालजां
ततजहांनहैं। जानतहैविलीनकैदुनीको
दानदेपिरामचंदजूकोदानकिधौंकेस
वचक्रपानहै॥ ५४॥ अथविरुद्धकर्म॥ सवैया
कछुकाहूसुनौकलबोलतकोकिलक।
मकीकीरतिगावतसी॥ वानैकहैकछुल
भौंतनिभामिनकेलिकलानिवढावतसी
वाजतवीनप्रवीननवीनसुरागहियेंउप
जावतसी॥ कहिकेसवरासप्रकासवि।
लासमबैवनमाभसिषावतसी॥ ५५॥ वि
रुद्ध॥ रोकूमानवंतबलवंतितेजवंतअ
तिदुकूंनिकीबेदनबषांनीवातुअैसी

है। होउ जो नैं पुंनि पापदु कुन के रिषि बाप
दु कुन की हिषियत मूरति सु है सी है। मुनै
देव देव बल देव काम देव प्रिय के सोराइ
की सो नु मक है जे सी ते सी है। वारुनी के
राग है त सूरज करत अस्तु है द्विजरा
ज को जु है त यदके सी है॥१६॥ नियमव
र्णनं॥ सवैया॥ वैरी गाइ ब्राम्हनि के ग्रंथनि
में सुनीयत कवि कुल ही को सुवरन हर
का जु है। गुरु से जगामी एक बालक के वि
लोकियत मातंगनि ही के मतवार को सो
सा जु है। अग्नि गरीनि प्रति करत अग
म्य गौन दुर्गनि ही के सो हा स दुर्गति सी अ
जु है। राजा दसरथ सुनौ सुनौ राजा राम दे
व चिरु चिरु राज करौ जाको असो राज
है॥१७॥ अथ विरोधी वर्णनं सवैया॥ रूसु
हरे हरि औ हरे संपति संभु विपत्त यहै अ
धिकाई॥ जातक काम अकामिनि के हि
त घातक काम सहाई॥ छाती में
लछु रावत वे तो फिरावत ए सब के सं
ग धाई। यद्यपि के सब एक तहै हरि के ह
र सेवक से सत भाई॥१८॥ अथ मरू

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

९५

कारवर्णनं॥सवैया॥कौनहुभावप्रभावतें
जानियेजीयकीवात॥अंगिततैंआकारतें
मुनिसरछिमअवदात॥१८॥सवैया॥बैठी
कुतीवृषभांनिकुमारिसषीनकेमंडलम
ध्यप्रवीनी॥लेकुमिलानोसोकंजपरीइ
कवालनिपाइनिआइनवीनी॥वंदनसौं
छिरकैयावहवाककुंपांनदयेकरूनारस
भीनी॥चंदनचित्रकपालविलोपिकैअं
जनअंजिविदाकरिदीनी॥१९॥लेसालंका
रवर्णनदोहरा॥चतुराइकेलेसतें॥चतुरन
समझतलेस॥वरननतकविकोविदसबै॥ता
कौंकेसवलेस॥२१॥लेसालंकारउदाहर
न॥सवैया॥षेलतिहैहरिवागवनेंजहांबै
ठीप्रियारतितैंअतिलोंनी॥केसवकैसेकुं
पीठमेंडीठिपरीकुचकुंकुमकीरुचिरोंनी
मातुसमीपिदुराइभलेतिनसात्विकभाव
निकीगतिहोनी॥धूरकपूरकीपूरविलोच
नसूंघिसरोरुहवाहिउहोनी॥२०॥अथ॥
निर्दर्शनालंकारवर्णन॥दोहरा॥कोनहु॥
एकप्रकारतें॥सतअसतसमान॥की
जैप्रगटसुनिदरस॥समुझैसकलसुजा

ग्वा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कवि-
॥ ४७ ॥
95

न ॥ २५ ॥ निदर्शनालंकार उदाहरन ॥ सवैया ॥
तेई करै थिर राजराजनि मेरा जे जिनहीं
को लोक लोक लोकनि अटनहैं। जीव
न जन मतिनहीं के धन्य के सोदा सञ्चार
नि को पशुनि ज्यों दिन निघटनु है। तेई प्र
भु परम पसिद्ध पुहमी पति तिवही की प्र
भुप्रभुताई रटनु है। सूरज समान सोम
मित्र कुअमित्र कुमुष दुष आपने उदै
ही प्रगटनु है ॥ २१ ॥ अथ उज्जालंकार वर्णनं
सवैया ॥ को वपुराज मिलो है विभीषन दे
कुल दूषन जीव गो को लों। कुंभकरन म
रयो मघवा रिपु तोरक दानड रों जम सो
लों। श्री रघुनाथ के गात निसुंदर जान न
तूं उमरात न तो लों। सावन सबै दिगपा
लनि के करगवन के करवाल दे जो लों
२२ ॥ रसमह्यालंकार ॥ श्रृंगारस ॥ सवैया ॥
आंनन तिदारी न आन कहो तमैं कछु आ
न त आन न हो कैसो। के सब स्याम सुरूप
सुजांन जाइ कहो मन जानत जैसो। लो
चन सो न हि पीवत जान समात सिहात
अघात नितै सो। जो नर दाविहात तनु मैं हव ॥ ४७ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

९६

लजातसुवातककौरु चेकवेसौं॥ २३॥

रौद्ररसवर्णनं॥ छप्पय॥ जिहिमरमधुमद मर्दिमहासुरमरदनुकीनो। मास्यौककर्कस नर्कसंपहनिसंपज्जलीनो। निक्कंटकसुर कटकस्योकैटभवपुषंडेयौ। षरदूषरत्रि सराक। बंधतरूषंडविहंडेयौ। कुंभकर्णजि हिसंघरनु। परलनथतिज्ञातंटस्योनिहि। गनप्रानदशकंठके ऊंवदश्ग ऊंगितके स्यो॥ २४॥ वीररसवर्णन॥ छप्पय॥ करिआदि समग्रहिरन्नकजमकरौग्रहवसु। रूद्रनिवा रिसमुद्रकरौगंधर्वसर्वपशु। वलितअवे कुबेरबलहिगहिगहिदैतइंद्रअव। विद्या धरनिअविंदकरौविनुसिद्धसिद्धसबले करौदीसदितिकीआदितअनलअनि लमिलिजाहिजल। मनिसरिजसरिजउ वतही। करौअसुरसंमारबल॥ २५॥ अथ करुनारसवर्णन॥ सवैया॥ दूरतेंदुंदमिदी। हमुनीनसुनीगजपुंजकीगुंजरगाटी। तो रनतीरनतूरवजेवरभावटभाटनगावत ठाटी। विप्रनिमंगलमंत्रपढेअरूदविन बालवधूदिगठाटी। केसवताकेगातत

कवि॰ ॥धप

तारवन्न्रोतब्बा॥ रतिमातहीवाढी॥२६॥ अथ्यधानकव॥ र्णनं॥ सवैया॥ रामकी वामजुत्र्यानीचुराइसुलंकमैंमीचकीव लिवईजू। क्योंरनुजीतकुगतितन सोजन कीधनुरेषन नाषीगइजू। वीसविशेवा। लवंनकुतरूकुतीड्गाकेसवरूपरईजू तोरिसरासनसंकरकोपीयमीयमयें वरवेंगनलईजू॥२७॥ बालबलीवचाप रधारहिक्योंवचिदातनुमकेनिजुषार हि। केसवज्ञीरसमुद्रमथ्योजिहिकैमन वाधिहेबारघियोहरहि। श्रीरघुनाथुग नोत्र्रसमर्थनदेषेंविनारथहत्थीयधार हि। तोंरासरासनसंकरकोजिहिसोव कहातुत्र्यलकननोरहि॥२८॥ वीभत्सरस॥ त्रिभंगी॥ सिगोरनरनायकत्र्रसुर विनाइकरकसपतिसबहारिगए। का कूनचढायोथलनछिडायोटरोनटासो भीतभए। इनराजकुमारनिअतिसुक मारनिलेत्र्राएहोपेजकेरे। व्रजभंगभा हमारभएतुम्हारेरषिनपेतजनजानि पेरे॥२९॥ अथअद्भुतरसवर्णनं॥ त्र्रा

॥धप॥

97

98

सी विग्रसिंघ विषपावक मैं नाती कछू कुंतीपहिलादकोपिताकौप्रमछूटोहो। द्रोपदी कौ देह मैं बुधी ही पल दुसासन षस्योई भूषि मानो खलु बसनु न छूटो हो॥ पेट मै परी छकी पारथ बचाई मीचत बसबही को बल विधिवान लूटो हो। केसव अनाथनि को नाथ जौन रघुनाथ हाथी कहा हाथ को दथार करि छूटो हो॥२६॥ अद्भुत उदाहरन सवैया॥ केसोदास वेद विधि माथ ही दनाई विधि व्याधि सबरी कौं कौन सहित तापटाई ही। बपधारी हरि बेष देष्यो हो अमिष जग तारिका कौं कि दिसि षतारिका सिषाई ही। पतितन पावन कर तजोन ने दपूत पूतना कव हि पति दवता कहा ई ही। वारान सी वारनकस्यो हो वस वासुकि वगनिका कब हि मनिकनिका लग्राई ही॥२७॥ अथ हास रस वर्णनं॥ सवैया॥ वेगति है हरिके तिनमें जिनकी उमसौं मति प्रेम पगी है। जानत हौं न कलू रा जहमें ती हून कथा रस रंग रगी है। पूजे गी माध सबे सुष की नव भाग की केसव।

कवि०
॥४६॥
99

ज्योतिजागीहै भेदतेकीबातकहैतेंक
छूबहमासकेतंमुसिकानलगीहै॥३२
अथसांतरसवर्णनं॥सवैया॥देयगो।
जीवनहूतुयदेयमुहेसिगोजगकोजु
रिवैईये। आवतजोअनउद्यमतेंसुष।
स्योंदुषपूरबकृतपईये। राजओरोकस
राजकेरोसबकोदेंकुंकेसबकोफूटरई
ये। मारनहारजिवावनहारसुतोसबके
सिरऊपरिहईये॥३३॥दोहरा॥रसमेंहोंय
सुजांनिये। रसवतकेसबदास। नवरस
कोमेंहेंपरी। कव्योप्रसंगप्रकास॥३४
अर्थांतरन्यासलछनं॥दोहरा॥औरन्या
नियेअर्थजहां। औरैवसुवषांनि। अ
र्थांतरकोन्यासयहै। चारिप्रकारसुजा
नि॥३५॥सवैया॥मोरहों मोहचदाइविने
दुरवाइकैकैमनकेयोहोंकरेरो कैसहे
ताकोंतोकसवकोरिहीयेंदुषदासुक।
दाइतहेरो कैसोहतरोहीयाहरिमेरहि
छोरोनहीनछूट तमेरो बूंदकइधको
मास्योजुबांधिसुजाननहोमाईजायोन
तेरो॥३६॥अथभेदादोहरा॥युक्तअयुक्त

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

100

वषांनिजे। औरसयुक्तअयुक्त। केसवदा-
सवषानिजे। चौथोयुक्तायुक्त॥२७॥ अथयु
क्तार्थांतरन्यास॥ दोहरा॥ जेसोजहांसुबूमी
ये तेसोतहांसुख्यानि। रूपसीलबलयुक्तग
न। ऐसोयुक्तवषांनि॥२८॥ सवैया॥ गरूऐ
गुरकेदोषदुषितकलंककरिभूषिततनिमा
चरीनिअकनिभरतहे। चंडकरमंडलते
लेलेतोप्रचंडकरकेसोदासुमाससमासनि
मरतुहे। विषधरबंधअनाथनिकोप्रति
बंधविषकोविसषबंधहियदहरतहे॥
कमलनयनकीसोंकमलनेंनमेरचंद्रमु
चंद्रमातेंन्याइहीजरतहे॥३५॥ अथअयुक्त
सवैया॥ केसोदाससोतमारसीरीयासुमा
रिसीरीआरसीलेदेहदेषिऐसीऐदेराव
री। अमलवताएऐसेललितकपालते
रेअधरतमारधरेडिगतिलचावरी। एहीछ
बिछकिजातछिनमेछबीलेहरिलोचन।
गवारिछीनलेदेइतआवरी। वारवारवर
जतवारवारजाकितमिलेवारवारोंआनि
वारीहेतुवावरी॥३६॥ अथयुक्तायुक्तकथ
न॥ दोहरा॥ अशुभैसुभव्हैजातजहां॥ केसो

हौं केसवदास। यहै अयुक्तायुक्तवविवरनत बुद्धिविलास॥२७॥पातक हानि पितासकु हारन गर्भके सूलन तैं डरीयै जू।तालिनि कौ बधिबौ बधरार कौ नाथके साथ चिता जरीयै जू।पत्र फटै तें कटै रिण केसव कैसे हूं तीरथ जो मरीयै जू।नीकी सदा लगै गारि दिवैं डंड भलो जगया भरीयैजू॥२७॥आगे कै लीवौ थहै जु चितै इतवैं कितु तै डिग अैं चित्तलई हैं। मानिवे कौं जु नहीं प्रति ऊतर मानियै बात जु मौन मई है। रोष की रेष वै हैरम कौ रूषका है कों केसव छाडि दई है। नां हि जु हां तुम नाही सुनी यह नारिन ई निकी रीति नई है॥२८॥

अथ युक्तायुक्त भाव। दोहरा॥

इष्ट वात अनिष्ट जहां। कैसे हूं हौं जाइ। ता सो युक्तायुक्त कहि वरनत है कविराइ॥२९॥

सवैया॥ सूलसे फूल सुवास कुवास सी भाकसी से भए भौंन सभाग। केसव वाग महावन सो जुर सी चढि ज्यों न्हसबै अंगदाग। नेह लग्यो निसनाहर सो निसि नाह घरी कि कछु अनुराग। गारीसे गीतवि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

102

रीविसुसी सिंगरेई सिंगार अंगार सलोग ॥ ३४ ॥ यापकी सिद्धि सदारिन द्वद्धि सुकीरति आपनी आपकही की ॥ दुखकौ दांनु जस तकन्दां नदासकी संततिसंततफीकी बेटी कौ भोजन भूषन रांड कौं केसव प्रीति सदा परतीकी ॥ जूरु मैं लाज दया अरि कौ अरु बांभन जातिसौं जीति ननीकी ॥ ३५ ॥ अंतरिकालंकार भाव दोहरा ॥ तामहि आनियेन रुकछु दोयजु वस्तु समांन ॥ सो व्यतिरेक सुभांतिदुइ जक सहिज परिमांन ॥ ३७ ॥ युक्तिव्यतरे ॥ सवैया ॥ सुंदर सुघर अति अमल सकल विधि सदल सफल बकुसर समगीत सौं ॥ विविध सुवास युत केसोदास आस पास द्विज राजत न पुर म पुनीतसौं ॥ फूलेई रहत दोऊ दीवे ही प्रतिय लदेत कामना निसम भीत कुअभीत सौं ॥ लोचन वचन गतविनइतनो ई भेद इंद्र तरवर औरइंद्र इन्द्रजीतसौं ॥ ४० ॥ अथ सहज व्यतिरेक ॥ सवैया ॥ गात बराबर धाम सबै धन जीत बराबर दीह लिआई ॥ केसव कंस हि दिवानपितान बराबर ही पहिरावन पाई ॥ वेस बराबर

रीपतिरबबराबरहीविधिबुद्धिवडाई॥
एअलिआजुहीहौंकुगीकेसवडीतुम।
आंपनिरीझिकीवडाई॥४१॥अथअपकु
तभाववर्णनं॥दोहरा॥मनकीवस्तदुराइमु
हऔरैकहिजेवात।कहतअपकुतसक
लकवियासोंबुधअवदात॥२८॥सवैया
सुंदरललितगतिवलितसुवासअतिस
रससुहतमनमेरमनमोनीहै।अमलअ
दूषितसुभूषननिभूषितसुवरनहरनम
नसुरसुषदानीहै।अंगअंगगूढभावके
प्रभावजानेकोसुभावहीकीभावरुचिप
चिपरहिचाहै।केसोदासदेवीकोऊदेषीहै
॥४२॥कारेसटकारेकेसमोनीकछुहौनी
वेसमानेतेमलोनीद्युतिसोभितहैतनकी
आछेआछेलोचननिचवनिचितौनआ।
छीआछीमुखकविनाविमोहैमतिमन
की।केसोदासकेकुंभागपाईयेजुवाग
गहिसोमनउसमेसाधपूजेरतिरनकी
बेटीककूगोपकीविलोकीप्यारेनंदला
लनोंहिलोलनैनीषंडवाईवडपनकी
॥४३॥इतिश्रीमद्विबुधभूषनभूषितायां।

104

कविप्रियायांविशिष्टालंकारवर्णनंनामए
कादशःप्रभावः॥११॥अथउक्तिवर्णनं॥दो
हरा॥बुद्धिविवेकअनेकविधि उपजतत
र्कअपार।तासोंकविकुलउक्तिकहि वर
नतअमितअपार॥१॥अथउक्तिभेदकथ
नं॥दोहरा॥वक्रअन्यविधिकरनकहि बो
रविसेषसमान।सहितसहोगतिमेंकही उ
क्तिसुपंचप्रमान॥२॥अथवक्रोक्तिभावदो
हरा केसवसूधीवातमें।वरननटेढोभाव
वक्रोकतितासोंकहत।उत्तमकविकविरा
व॥३॥सवैया॥ज्यौंज्यौंकुलासमसोकेसव
दासविलासनिवासहीयेअवरेष्यो॥त्यौं त्यौं
वढ्योउरकंपकछूभ्रमभीतिभयोकिधौं।
सीतविसेष्यौ।मुद्रितहोतसषीवरहीमेर
नैनसरोजनिसाचुकैलेष्यौ।तैजुकह्योमु
खमोहनकोअरविंदसोहैसुतोचंदसो
देष्यौ॥४॥अन्योक्तिलछनं दोहरा॥औरहि
प्रतिजुवषांनिजे।कछूवारकीवात॥अ
न्योक्तिसुहजानिवी।वरनतकविनअघा
त ५॥सवैया॥हलरेष्यौनहीजउजाडो
वडोअरुघामघनोजलकेपोहरिहै।का।

विकेसववाउवदैबकुदाउदैहैधरधीरज
कंुधरिहै।फलिदैफलुनांहीकितोसुउ
हीकहितोपदभूषमदीपरिहै।कछुयाह
नहीसुषसोभनहीकीरकहाकरिहै॥२॥
अधिकरनभावी॥दोहरा॥औरहीमेंकीजे
प्रगट।वारहीकोगुनदोष।उक्रयदैव्यधक
रनकी।सुनतहोयसंतोष॥५॥सवैया॥अं
गअलीधरियेअगियाउनआजुतेंनीदन
आवनदीजे।जानतहोजीयनातेसषीनि
केलाजतुतोअवसाथनलीजे।थोरेही।
द्योंसतेंषलननेउलगीजिनकेजीयरष
तजीजे।नाहकेनेहकीमामलेआपनी।
छांहकुकीपरतीतिनकीजे॥३॥सवैया॥
जानुकटनाभिकुलकंचपीविभुजमूल
उरजकरजऋरेयरषीवकुमांतिहै।दलि
तपालरलदललितआधरुचिरसनार
सिंतरसरोमभैरिमातहै।लोटलोटलो
टलपटातवीचवीचहाहाहाहाफूफूने
तिनतिवानीहोतजातहै।आलिंगिनअं
गअंगपीरनिपिसतिहै धडीयतपोमि
नीकेसोतिनकेअंगअंगपीरनिपिरा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

106

तिहे॥ ६॥ राजभारसजभारलाजभाररज
भारभूमिभारभवभारनीकेंहीअटतिहे
प्रेमभारपनभारकेसवसंपतिभारपति
भारजुतअतिजुद्धनिजुटतिहे॥ दांनभार
मांनभारसकलसयानभारभोगभारभा
गभारघटनघटतिहे॥ एतेभारफूलनिज्यों
राजेराजारामसिरनितिहिंदुषशत्रुनकेसी
सईफटतिहे॥ ५॥ पुत्रभयोदशरथकेको
सवहीरघकुंदभिदेववजाई। फूलिकेफू
लनिकोवरषेतरूफूलिफलेसवहीसुष
दाई॥ हीरवहीसरितासवसीतलधीरस
मीरसुगंधसुहाई॥ सर्वसुलोकलुटावत
देषिदेहदगारिनिछाई॥ दोहा॥ होइहा
सीकारनिसुने॥ यहअचरिजकीवात। का
कचढावतचंदनहि॥ मेरनैनसिरात॥ ८॥
विशेषोक्ति॥ दोहा॥ विद्यमानकारनसक
ल। कारजहोहिनसिद्ध। सोईउक्तिविसेष
में केसवदाससप्रसिद्ध॥ १॥ सवैया तेईसा क
हेंसेदुष्टतदुष्टकृतभटपायसपुष्टिनसा
सनटारें। सोदरसैनदुसासनसेसवसाथ
समच्छभुजाउसकारें। हाथीहजारनिकेव

क० ॥५३

107

लकेसवन्मैचथकेपटकौंदुसूडारैद्रोपदी
कैादुरजोधनपैतिलसोउघैसनाहिंभ्रौगु
उघारै ७॥सोरठा॥दएसुनारिनिदाम।राव
रकोसोनोहस्यो दुषपावनपतिराम।ब्रा।
हितकेसवमिश्रसौं॥८॥दोहरा॥तुलतोल
कसिवानवनि कइथलिषतअपार राष
मरतिपतिरामपैं सोनोहरतसुनार ९॥दो
हरा॥सवैया॥रिषेहारीमषीडरपायहारी
कांदंबनिदामिनीदिषाइहारीदिसिअध
रातिकी।मारिमारिहास्यौफुकिफुकिहारी
रतिहारीफिरतत्रिविधगतिवातकी। हुईनि
रहुईहुईयाहिकाहूभैमीमतिजारतजुन्मै
नेरेनदाहहूभ्रैसगातकी।केसैहैंमनाइहा
रीकैसौहामइबातिहारीकोकिलाबुला
इहारीचातकी॥८॥कर्नेकूपहजजानतहीं
जिनकोमनुकूपैजाननटास्यो।भीमगदा
हिधरैधनुअर्जुनजुहजुरैजिनिसोंजम
हास्यो॥केसवदासपितामहभीषमसोचि
करीवसलैहिसिचास्यौं॥देषतहीतिनिकै
दुरजोधनद्रोपदिसोमुहैंहाथपसास्यो॥
१०॥वेइहैबांनविधांननिधानअनेकच

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मृजिनि जोरि हई जू। वेई हैं बाकु वहै धनु।
धीरज दीरहि पुग जिन जू छजई जू। वेई हैं
अर्जुन आपुन ही जग मैं जस की जिनि व
लि वई जू। देषत ही तिन के तब कावनिनी
के ही नारि छिडाइ लई जू॥१७॥ अथ सहो
क्तिलहनं॥ दोहरा॥ हानि वृद्धि सु भ अशुभ।
कछु। कहिजै गूढ प्रकास। होइ सहोक्ति सु
साथ ही। वरनत केसवदास॥१८॥ शिशुभा
समत भई मंद गति लोचन निगुननि सों व
लित ललित गति पाई है। भौंहनि की होडी
होडा कै गई कुटिल अति मेरी रानी तेरी।
बानी सुनत सुहाई है। केसोदास मुखहा
स ही स षेही कटि तट छिनि छिनि सूछम छ
बी ली छबि छाई है। चारु बुद्धि वारनि के स
थ ही वटी है मन कुचनि के साथ ही सकु
चित उर आई है॥१९॥ अथ व्याजस्तुति नि
दा अलंकार॥ दोहरा॥ स्तुति निंदा मिसि होइ
जहां। स्तुति मिसि निंदा जांनि। व्याजस्तुति
निंदा कहै। केसवदास बषांनि॥२०॥ सीत
ल हूं हीतल तिहारै न वसत वह तुमन त
जत तिलता को उर ताप गेह। आपनो जैयों

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हीरासोपराये हाथ ब्रजनाथ के तौ अ-
का थ साथ मैं नु ऐसो मनुले कु। एते परि
कै सोग इतु म्हेन श्रवा रवा हिवहै जगला
गी भागी भूष सुष भूल्यो देकु। मांडो सुषछ्ट
डो छिन छलनि छबीले लाल ऐसो तेगा
वारनि सों तुम हो निवाहो नेकु ॥ ११ ॥ अथ

निंदास्तुति उदाहरन सवैया ॥ केसर कपूर
कंज केतकी गुलाल लाल सुघ तन चंप
कच बेली चारु तोरी है। जिनकी तूं पास वा
न बूझीये ते आसपास ठाढी कैसो हास की
नी भय भ्रमि भोरी है तेरको नौ कितकि
धो सहज सुवात हित वसि गई इहि हेरि
चित कै कूं चोरा चोरी है। सुन हि अचतअ।
ई इहि हिम नाही तरु तौसी कहा गोकुल
गुवारि वाई थोरी है ॥ १२ ॥ जानीयेन जाकी
माया मोह तत्त सिले हो मा मए कहा थपुन्य
एक पाय कौ निवारिए। परदार प्रियमत
मातंग सुता भिगामिनि सचर कौ सो मुष
देषो हह कारिये। आज लौं अ जाहि राषे
वरद विनोद भावे एतै मैं अनाथ अति के
मचनि हीये। राजनि केरा जा छाडि कीज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तुतिल कुतनहि भीष म सौं कादा कहैं पु
रषन नारियै ॥२३॥ अथ अमित लछनं ॥ दो
हरा ॥ जहां साधवै भोगवै । साधक की स
ब सिद्धि । अमित नाम तासौं कहैं । जाकी
अमित प्रसिद्धि ॥२४॥ अमित उदाहरन
सवैया ॥ आनन की करसी ककहा दीय
तो दितते अतिआतुर आई । फीको भयो
सुषहीं मुखराग क्यों तेरपी या बकुभां
ति बकाई । पीतम को पट क्यों पलटो ।
अलि कैवलते री प्रतीत को ल्याइ । के सब
नी कही नाइक सों रमि नाइक वात नि
ही विरमाई ॥२५॥ कोगनें कनें जगाम न
से नृप साथ सवे दल राज निहीकों । जा
रै को षान किते सुलतान सौं आयो सत्र
वटी मांहि दिल्ली को । औं डछे आनिजु
स्यो कहिके सव सही मध करसा सब
जी को दोरि के फूल दराम सजीति कस्यो
अपनें सिरि की रतिटी को ॥२६॥ अथ प
र्यायात्ति लछनं ॥ दोहरा ॥ कौनक कुं एक
प्रकारतें । अनहि कीयेजु होइ । सिद्धि आ
पनें इष्ट की । पर्यायात्ति जु सोइ ॥२७॥ ष

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लनतहीमनरंजआलीनिसौनहांहरिआ
पहीतेआएकिधौंकाहकेबुलाएरी।ला
गेमिलिबेलनमिलेकैमनहरैंदैनला
गहाउआपआपमनभाएरी उठिउठि
गईतितिमिसहिमिसिजितजितकैसोग
इकीसौंहाउरहेछबिछाएरी। चौंकिचौं
किचौंकुंहिसितितिहिछिनराधाजीकेज
लजसेलोचनजलदसेह्वैआएरी॥२६

अथयुक्तालंकार॥दोहरा॥ जैसोजाको
रूपबल कहियेत्योहीरूप।तासौंकवि
कुलयुक्तिकहि।वरनतबकुनसरूप।२७
मदनवदनदेषिलाजकोमदनलेनजर
पिजगतईसमोहिवेकोंहेधनी।कोटि
कोटिचंद्रमासवारिवारिवारिहारोंके
काजब्रजराजआजलगिसंजमी।केसो
दाससविलासनेरमुखकीसुवासमु
नियतआरसहीमारसनिलेरमी।मित्र
देवथितदुर्गपंडदलकोसकुलबाला।
जाकैताकेकहाकौनवातकीकमी॥२८

इतिश्रीमहाकविविविधिभषनभषितायांकवि
प्रियायांवसिष्टालंकारवर्ननंनामअष्टाद

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥ ३ अभावः ॥ १३ ॥ अथसमाहितलछन ॥ दह
रा ॥ दोहा ॥ जतनकियेंफलहोषडाजहां दैवजोगतेंका
ज ताहिसमाहितनामकहि वरनतक
विसिरताज ॥ १ ॥ समाहितउदाहरनसवै
या ॥ छविसोंछबीलीवृषभांनमहछांकि
कें मारफूलसुकुमारनंदकेकुमारताहि
आयरीमनावनावनसयानसबनकि
केंद सिहसिसोंदें करिकरिपायपरिपूरि
केसोराइकीसोंजवरहेजियजकिकेंते
हीसमैंउठघनघोरिघोरिदामिनिसीला
गीलोटस्यामघनउरसोंलपकिके ॥ १ ॥
मानकृदीपनिके अवनीपतिहारिरहेजी
यमेंजबजाने । बीसविसव्रतभंगतभयो
मुकहेअबकेमवकोधनुमानें । सोका
कीलागीलगीपरिपूरनआएगएघन
स्योमविहानें । जानुकिकेजनकादिक
केसवफूलिउठेतरूपुन्यपुरानें ॥ २ ॥ अ
थसुसिद्धालंकारवर्नन ॥ दोहरा ॥ साधि
साधिवौरमरे औरभोगवतसिद्धि । तासों
कहतसुसिद्धजग । जाकेबुद्धिसमृद्धि
॥ २ ॥ सुसिद्धउदाहरन ॥ सवैया ॥ फूलनि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कवि॰ ॥५८॥ 113

सौंफलफूलसवेदलजैसीकछुरमरी॥ तिचली जू॥ भाजनभोजनभूषनभामि निभौंनभरीभवभांतिभली जू॥ डासन आसनवासनवाससुवादानजानिवि मांनथली जू॥ केसवजसैंमादाजनलो कमरैसुचिभोगवैमोगथली जू॥२॥ छ प्पय॥ सरघासचिसोचिमरहि॥ मद्दरम धुपानकरंतमुख॥ पनिपनिमरतगवा रकूपजलपियतपथिकसुख॥ बागबा नवहिमरतफूलबांधतउदारनरपचि मरतसुवारि॥ नृपभोजननिकरतवरभू षनसुनारिगटिगहिमरहिभामिनिभ्र षितकरततन॥ कहिकेसवलेषकलि खिमरतपंडितपढतपुरानगन॥ छ ॥

अथप्रसिद्धालंकारवर्ननं॥ दोहा॥ साध नसाधेएकनव॥ भोगवेसिद्धिअनेक॥ ना मोंकहतप्रसिद्धसव॥ केसवसहितवि वेक॥ १॥ प्रसिद्धिअलंकारउदाहरन॥ स वैया॥ मातकमारपितापरतोषनिकेव भगामनरेरिसभारे॥ औगुनएकहीअ र्जुनकोछितमंडलकेसवछत्रीयमारे ॥५८॥

114

देवपुरी कछु औधिपुरी जन के सब हास
बढे अरवास रकरस्वान समेत तिहै द
रिद्र के सन्तन मेद ह मिधारे। ५॥ अथ वि
परीतालंकार लछनं। दोहरा॥ कारिज सा
धक कौ जहां साधन बाधक होइ। ता सौ
सब विपरीति कहि बरनत बुधि जन लो
इ॥ ६॥ विपरीति उदाहरन। सवैया॥ ना हते
ना हरु त्रियजे बरी ते मापक रै घाल्म घरवी
थिका बसावत बन नि की। छ्रीव छ्रिछ्रिवा
उभेद जानैं बाया माया मनु मानैं सुस क
सिद्धि छलिवतन नि की। राधा जू सौ कह
कहै। अस नि की सुनैं सीष मापिन सहि
त विष रहित फन नि की। कौंन परे वीचि
वीचि आफू न सहि सकै वीचि पारी अंग
ना अनेक अगनन नि की॥ ६॥ साथन सया
ना को कछु हाथन दध्यार रघुनाथ जी को
जन्हे कौ अंग रागहि राप्पाई। का छन कछ्
टी सिर छोटी छोटी का कपहपा चहीव
रष के निज़ुघ अभिलाप्पाई। नल नील
अंगद सहित हनुवंत जामवंत सम्यन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तजिनिनीरनिधिनाघ्याई। केसोदासदीप
दीपनृपनिसौंरघुकुलकुमलवजीति
केविजयरसचाष्याई॥७॥ अथरूपकअ
लंकार॥दोहरा॥ उपमाहीकेरूपसोंमि
लैवरनिरूप। ताहीसोंसबकहतहै। के
सवरूपकरूप॥५॥ ताकेभेदअनेककैं॥
तीन्योंकहेंसुभाइ। अद्भुतरूपकरूपका
ह्विपुनिविरुद्धसतिभाइ॥६॥ सद्वाएक
रसवरनिजै। जाह्विनऔरसमान। अद्भु
तरूपककहतहै। तासोंवुद्धिनिधान॥७॥
सोभासरवरमांझफूलोईरहतसषिरा
जैराजहंसनीसमांनसुषदानिये। केसो
दासआसपासमोरभकेलोभघनेआन
निकेदवभौंरअमतवषानिये। होनजो
तिदिनदूनीनिमिमेंसहसगुनीसरिज
सुफूदचारुदमांनमानिये। रतिकोसद
नछुइसकेनमदनऔसोकमलवदनु
जगजानुकीकोजांनिये॥८॥ अथविरु
द्धरूपकलछनं॥दोहरा॥ जहांकहिजेऔ
नमिलकछूसुमिलसकलविधिअर्थ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

116

सोविरुद्धरूपककहैं। केसवबुद्धिसमर्थ
।८। सोनेकीएकलतातुलसीवनक्यौंवरनौं
सुनिबुद्धिसकैछ्वै। केसवदासमनोजम
नोहरताहिफलेफलश्रीफलसेध्वै। फू
लिसरोजरह्यौतिनऊपरिरूपनिरूपत
चित्तचलैछ्वै। तापरएकसुवासुभतापरिषे
लतबालकषंजनकेध्वै॥९॥ रूपकरूप
कलछन॥दोहरा॥ रूपभावजहांवरनियैं
कौनहुबुद्धिविवेक। रूपकरूपककहत
हैं केसवदासअनेक॥१०॥ रूपकरूप
उदाहरन॥सवैया॥ काछिसितासितका
छिनिकेसवपातरज्यौंपुतरीनिविचारो
कोटिकटाछनचैगतिभेदनचावतनाइ
कनैननप्यारो। वाजुतहैमृदुहासमृदंगग।
सुदीपतिदीपनिकोउजियारो। देषतहैं
हरिदेषितुम्हैयहहोतिहैआंषिनिहीमें
अषारो॥११॥ अथदीपकालंकारल
छन॥दोहरा॥ वंचिक्रीयागुनदर्वबकु
वरनहुकरिइकठौर। दीपकदीपतिहो
तुहै कहिकेसवसिरमौर॥१२॥ दीपक

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कवि·
॥५८॥
117

रूपअनेककहैं मैंवरनोंहैरूप।मनिमाला
नामेंकहै।केसवकविकविभूप॥२१॥म
निदीपक॥वरषासरदवसंतससि।सुभ
तासोभसुगंध।प्रेमपवनभूषनभवन॥
दीपकदीपकबंध॥२२॥इनमैंएकजुवर
नीयै।कौनकुबुद्धिविलास।तासोमन
दीपककहत।सदासुकेसवदास।२३॥
प्रथमहरिनिनैंनहेरिहरहरिकीसों।
हरिषहरषितमतेजनिहरतुहै.केसो
दासअआसयासपरमप्रकासमैंसोविला
सनिविलासकछुकदिनपरतुहै।भां
तिभांतिभामिनीभवनकंभूषभव।
सुभगसुभावसुभसोभाकोंधरतुहै॥
मानिनीसमेतमांनमधिनीनिवसिक
रिमैरोमनुतेरोदीपदीपतिकरतुहै॥२१
दछनपवनदछजछनीरवनुलागिलो
लनकरतलौंगलवलीलीलताकं
कोफरु।केसोदासकेसरकुसमकोस
रसकननतनुतनुतिनहूंकोंसहिनस
कनुभरु।कैयोंहूंकैयोंहूंहोतहवसाह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

118

ह

सविलासवसचंपकचंबेलीमिल्लिमालती
सुगंधअरूसीतलसुगंधमंदगतनंदनंदा
कीसौंपावतकहांतैंतेजंतारिकोंमानतह
१२॥ अथमालादीपकलछनं॥दोहरा॥ सबे
मिलेजहांवरनियेइसकालबुधिवंत मा
लादीपककहतहेतीकेभेदअनंत१३॥दी
पकउदाहरनसवैया॥ दीपकेनहदसासौं
मिलिसुदसामिलितेजहिजोतिजगावे।
जागिकेजोतिसबेसमुझतमसोधिसुतोसु
भतादरसावे।सोसुभतारसेरूपकेरूपक
रूपसुकोंमकलाउपजावे।कोमसुकेस
बप्रेमबढावतप्रेमलेप्रांनपियादिमिला
वे॥१३॥घननिकीघोरसुनिमोरनिकेसो।
रसुनिसुनिसुनिकेसबअलापअलिज
जनको।दामिनीदमकिदेषि॥दी[illegible]सक
दीपतिदेषिसुभसजेदेषिदेषिमदनसुब
नको केसरिकीवासघनसारकीसुवास
भयोफूलनिकीवासमनफूलिकेमिल।
निकों॥१४॥ अथप्रहेलिकालछिनं॥दोहरा
वरनवसुदुराइजहांकोनकुंएकप्रका

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

र नासौं कहत प्रहेलिका । कवि कुल बुद्धि
उदार ॥२५॥ सोभित सताईस सिर । उन सठि
लोचन लेषि । छप्पन पद जानौं जहां वीस
बाकुवर देषि ॥२६॥ सूर्यमंडल जानिबो ॥
चरन अगार ह बाकु दस । लोचन सत्ताईस
मारत है षनि पाल करि । सोभित अपार हसी
स ॥२७॥ हरिहर आत्मक सरीर ॥ नोप सुनौ ।
हीरेवता ॥ है पछी जिहि ग्रह केसव सोई
राषि है ॥ इंद्रजीत की देह ॥२८॥ सूर्यमंडल ॥
देषै सुनैं सषा इ कछु पायन जुवती जाति
केसव तनन हारई वासु रगौ नराति ॥२९॥
वाट ॥ जानत जाकुई आषरनि । नाम कहै
सब कोइ । सधै सुखमुख भाषिये । उल
टै अंबर होइ ॥३०॥ दाष ॥ केसव ताके ना
मके । आषर कहियत दोइ । सधै भूषन
मित्र कौं । उलट दूषन होइ ॥३१॥ राजा ॥
सब सुष चाहै भोगयो । जापियए कदी
वार । चंद मिलै जहां राह कौं । जे जोतिदी
दरवार ॥३२॥ वीरवर को दरवार ॥ अथ
परिवृत्तालंकार ॥ जहां कीजै औरै कछू

उपजिपरैकछुऔर।तासौंहत्तसुकहहतुहै
केसववविसिरमौर॥२३॥हसिबोलतही
जुहसमबकेसववानलावतघरुचलै।
लाजभगावतलोगभंगैमनआनतहीम
नमचजोग।तैंजुकहीसुकुतीमनमेरेकु
जानियैहैनहियोउमगै।हरितेपोंनैकुडी
ठियमारतहीअंगुरीनिपसारिनलोक
लगै॥२५॥हाथगह्योब्रजनाथसभावही
छूटिगईधरधीरजताई।पानभषैमुख
नैनसौरुचिआरसीदेषिकह्योयहग
ई।देपरिरंजनमोहनकेयोमनमाहिली
योसजनीसुषदाई।लालगुपालकपो
लनपछतनतैरदएतैमहाछबिछाई।२६।
जीवदयोजिनिजन्मदयोजगजाहिकि
योजुवडौजगुजानैं।ताहीसौंवैसमना
वचकायकरैकितकेसवकोउरुआंनैं
मूरवकैरिषिसिद्धिकियोरिषहीसकु
मूरषरोषचितानै।औसौकछूयहष्याल
हैजाकोनलोकरियैसुबुरौकरिमानैं।
२७॥इतिश्रीमविदभूषनभूषनभूषिता

यां कविप्रिया यां विंशिष्टालंकार वर्णनं नाम त्रयोदशप्रभाव ॥१३॥ अथ उपमालंकार वर्णनं ॥ दोहा ॥ रूप सील गुन होइ सम जो कैंकुं अनुसार । तासों उपमा कहत कवि केसव बहुत प्रकार ॥१॥ उपमा नाम कथनं संसय हेतु अभूत अति । अद्भुत विक्रय जानि । दूषन भूषन मोह मय नियम गुनाधिक आनि ॥२॥ निहचै उतप्रेक्षित कहो । लमधर्म विपरीत्ति । निर्णय लाछनको उपमा । असंभावितामीत ॥३॥ बुधि विरोध उपमा कहत । और परसपर ईस । उपमा भेद अनेक हैं मैं वरनो इकईस ॥४॥ अथ संसय लछन ॥ दोहा ॥ जहां न दीनिरधार कछु । सब संदेह सरूप । सो संसय उपमा सदा वरनत है कवि भूप ॥५॥ सवैया ॥ षंजन है मनरंजन के सव रंजनैं नकि धौं मनजी की । मीठी सुधा कि सुधाधर की दुति दंतन की कि धौं दाडिम ही की । चंद भलो मुख चंद कि धौं सषि सूरति कामप कि कान्ह की नीकी । कोमल पं

122

कजकैपदपंकजश्रीनपियारेकिमूरतिपी
की॥२॥अथहेतोपमालछन॥सवैया॥अम
लकमलकुलकलितललितगतिबे
लसौंवलितगतिमाधरीकौपानियै।म्रग
मदमरदिकपूरधूरिचूरिपगकेसरिकै।
केसवविलासपछिचानियै।केलिकैचं
वेलीकरचंपकसोंकेलिसइसवतीसम
सेतकेतकीकोजानियें।छिलिमिलिमा
लतीमोश्रावतसमीरजबतबतेरसुप
मुषवासमौंवषानियै॥२॥अथअभूतो
पमा॥दोहरा॥उपमाजाइकछूनकहि।
जाकोरूपनिहारि।सोअभूतउपमाकह
त।केसवदासविचार॥१॥कुरिहकैयोंभूष
नवनवसनदुतिजोवनकीदेहहीकीजो
होतयोंसश्रेसीरातिहै।नादकेसुवास
लगेदेकेसीकेसवसुभावहीकीवा।
सभौंरभीरफेरीषातहै।देषितेरीमूरति
कीमूरतिविसूरतिहौंलालनकेहगद
षिवकौललचातहै।चलिहेकैयोंचंद।
मुखीकुचनिकेभारभयेंकचनिकेभा

कवि० ॥द्दश॥ 123

भारतोल्लचक्रिकटिजातिहै॥ ३॥ अथ॥ अद्भुतोपमा॥ दोहरा॥ जेसीहोतनहैभई। आगेकहैनकोइ। केसवक्योंसेंवरनिये अद्भुतउपमाहोइ। प्रीतमकोपमाननि मांननिगानसयाननरीझरिझावे। वंक विलोनिबोलअमोलनिबोलतकेस वमाटुवटावे। हावकुभावप्रभावसुभा वनिप्रेमप्रयोगनिचित्तचुरावे। श्रेसे। विलासजोहोतसरोजमैतोउपमामुष तरीकापावे॥ ६॥ अथविक्रियोपमा लक्षणं॥ दोहरा॥ क्योंहूंक्योंहूवरनिये कौनौंएकप्रकार। विक्रियउपमांहोत है केसबुद्धिउदार॥ ७॥ रसिकप्रियायां जथा॥ सवैया॥ केसवदासकुंदनकेको सैतप्रकासमानचिंतामनिवोपनासौं वपिकेउनारीसी। इंदुकेउदोततैंउकी रीसीहेकाढीसबसारसमरसमाना मारत्तंनिमारीसी। सोंधेकेसीसोंधीदै हसुधासौंसुधारीपाउधारीदेवलोक तेंकिधुतउधारीसी। आजुयासोंहमि ॥ ६८॥

124

छलिबोलिचालिकुलालकालिऐसी।
ग्वालिन्याउंकामकीकुमारीसी॥५॥अ
थभूषनोपमालछनं॥दोहरा॥जहदुषन
गनवरनिये।भूषनभायदुराइ।दूषनउ
पमाकहतहै।बुधजनताहिवनाई॥६॥ये
रसिकप्रियायायथा॥सवैया॥जोकहौंके
सवसोमसरोजसुधासुरभृंगनिदेहदहै
है।दाडिमकेफलश्रीफलविद्रुमहाट
ककोटिककष्टसदेहहै।कोककपोतक
रीअहिकेहरिकोकिलकीरकुचीलक
हेहै।अंगअनूपमवारयकेउनकीउप
मांकहवोउरहेहैं॥६॥अथभूषनोपमाल
छणं॥दोहरा॥दूषनदूरिदूराइजह।वरन
तभूषनभाव।भूषनउपमाहोतितहके।
सवसुषदसुभाव॥११॥भूषनउदाहरनस
वैया॥सुवरनयुतसुरवरनिवलितपु
निभरैंसोमिलितगतिललितवतानी
है।पावनप्रगटगतिदुजनिकीरषिमा।
तिदीपतिदिपतिअतिपुनसुषदानी
है।सोभासुभमानीपरमारथनिधानी

हीहकलुषछिपोनमांनीसवजगजानी
है॥पूरवकेंपूरेंपुंन्नसुनियेंप्रवीनराइने
रीमांनीमेरीरानीगंगाकोसोपानीहै॥७॥
अथमोहोपमालछ्यणं॥दोहरा॥रूपक
केअनरूपककें।कौनहूंवसमतुलाइ
नाहीसोंमोहोपमां।कहतसवकविरा
इ॥१२॥षलतमेषलुकछुहांसीनहसत
हरिमुनलनकोनगोमतानवांसीवसहे
वोटतनअंबरनिडोलतदिंगंबरसे
संवरज्योंसंवरारिदुष्यदेहकोंदहे॥रू
लिकूंनसुंघेफूलफूलिफूलिकुम्हिला
नजातपातवीराकूनवातकाकूसोंके
है।जोंनिजोंनिचंदुमेंदुकेसवचकोर
समचंदमुषिचंदहोकेचंदत्योंचितेरहे
॥८॥अथनियमोपमालछनं॥दोहरा॥
पकैसुभुजदवरनिये।मनक्रमवचन।
विसेषि।केसवदासघकामवस।निय
मउपमांसुलेषि॥१३॥कलितकलंक
केतुकेतुअरिसेतुगातभोगजोगकों
अजोगरोगहीकोथलसो।पूर्योंही

PUNJAB UNIVERSITY
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कौंपूरनुपैप्रतितिरिनहूमोदीनुछिनुछि-
नुछविछीनछीलरकोजलुसो। चंदुसो
जुवरनतरामचंदकीदुहाईसोइमतिमं
दुकविकेसवकूसलुसो। सुंदरूसुवासु
अरूकोमलुअमलुअतिसीताजूकोमु
षुससिकेवलकमलुसो॥ ५॥ अथगुन
धिकोपमालछनं॥ दोहरा॥ अधिकनि
कृतेअधिकगुन। जौहांवर्निजतुहोइ। ता
सौंगुनाधिकोपमा। कहतसयानेलोइ।
६॥ वितरंगसेतरंगसंगएकएअनेकहैंसुरं
गअंगअंगमपैकुरंगमीतसे। एनिसंकअं
कजइवैससंककेसोदासएकलकरं
केवकलंकहीकोलीतसेवैपिवयेसु-
धाहिएसुधानिधीसकेरसेजुसाविकू
सुनीतएपुनीतवैंपुनीतसे। दृहिएदिए-
दिएविनोविनोदियेंनदेहिवेभएनहैन
होयहिगनइंदइंदजीतसे॥ १०॥ अथअ
तिसयोपमालछनं दोहरा॥ एकैकछुए
कहीविषें। सदाहोइरसएक॥ अतिसय
उपमाहोतितहा। कहतसुबुद्धिअनेक। ५५॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कवि ॥६३॥

127

केसौदासप्रगटप्रकाससौंअकासपुनि
ईसुरकेंसीसरजनीसुआवैरपिये। थल
थलजलजलअचलअमलअतिकौ
मलकमलवकुनाहिंनैअचल वरनवि
सेषिये। मुकुरकंगेरछकुनाहिनैअच
लुजसुवसुधासुधानत्रियअधरनिले
षिये। एकरसएकरूपजीकीगीतासीता
सुनितेरौसोवदनुतैसोताहीविषैदेषिये
॥११॥ अथउत्पेक्षितोपमालछनं॥ दोहरा॥
एकैदीपतिएककी। होइअनेकनिमाह
उत्पेक्षितउपमासुनौं। कहिकविनिकेन।
ह॥१२॥ न्यारोइतुमांनुमनमीननिकेमां।
निय। नुजानियनुसवहीसुकेसौनजना
इये। पंचबांनबांनिनिकेआंनआंनभां
तिमाङुवाछोपरिमानुविनुकैसेकैवता
ईए। केसोदासविलासकगीतुरंगरंगनि
कौरंगअंगनानिकूकेअंगननिगाइये
सीतानूकेनयननिकाईहमहीमैहैसु
झ्वदैनालिनषंजरीटहूमेंपाइयै॥१२॥
अथश्लेषोपमालछनं॥ दोहरा॥ जहां

६३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सरूपप्रयोगियै । सहूएकरी अर्थ । कैसो
तासौं कहत है । श्लेषोपमा समर्थ ॥ ५१ ॥ स
गुन सरस सब अंग राग रंजित है सुनहू
सुभाव डेंभाग वामपाइये । सुंदर सुवासु त
न कोमल अमल मनु षोडस वरष मय
द्दरष वढाइये । वलित ललित वास कैसो
हास सविलास सुंदरी सिंगारि जाइ गह
हन लाइये । चातुरी की साला मांझ आ
तुरकै नंदलाला चंपकी सी माला बाला
उर माइये ॥ ५२ ॥ अथ धर्मोपमालछणं ॥
दोहरा ॥ एक धर्म को एकु अंग । जहां जनि
जनु होइ । ताही सो धर्मोपमा । कहत स
यनि लोइ ॥ ५३ ॥ कुजरी उदर उरवा सुकि
विराजमान हार के सब मोन उपमान आ
नटा दियै । जटा निके वीचवीच गंगा जू के
जल बुंद कुंद की सी कली केसो हास म
नु मादियै । सुष की सी सिद्धि सिवा सोहै
साथ शिव जू के जावकु सो पाव कलि
लोरलागे पासो दियै ॥ ५४ ॥ अथ विपरी
तोपमालछनं दोहरा ॥ पूरव पूरगुननि के

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कवि॰ ॥६४॥ 129

तेईकहिजेहीन। तासोंविपरीतोपमा। के
सवकहतप्रवीन॥ ११॥ भूषितदेहविभू
तिदिगंबरनाहिनेअंबरअंगनवीनें। दू
रिकेसुंदरसुंदरीकेसवदूरिदरीनिमेंमं
दिरकीनें। देषियेंमद्दितदंडनिसोंभुजदं
डवुवाअसिदंडविहीनें। राजनिश्रीइंद्र
जीतकेवैरकुमंडलछाडिकमंडललीनें॥ १५॥ अथनिर्णयोपमालक्षणं॥ उपमा
अरुउपमेयकों। जहांगुनदोषविचार।
निर्णयउपमाहोतिहै। सवउपमनिकोंसा
॥ २७॥ एककहैअमलकमलमुषसीताजूकौ। एककहैंचंदमयआनंदकोकंदु
री॥ जोपैहोइकमलतोंतोनेंनमांझिसकुचे
रीचंदुजोतोवासरनिहोइदुतीमंदुरी॥
वासरहीकमलुरयनहीमेंचंदुमुखवा
सरहूरयनिविराजेजगवंदुरी। देषमुष
भावतनदेष्योइकमलचंदुतातेंमुषमु
षेसषिकमलेनचंदुरी॥ २६॥ अथला
लोनिकोपमालक्षणंदोहरा॥ लहन
लहिजुवरिनीयें। वुधिवलवचनवि। ॥६४॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लास । तासौ लाछण कौपमा । कहिजे के
सौदास ॥ २१ ॥ वासौ मृगलंछन कुं कहै तौ सौ मृ
गनैनी सब वासौं सुधीधर कुं सुधाधर
मानियें । वह द्विजराजु नैं द्विजराजि राजे
वह कलानिधि नूं कुं कला कलित बषा
नियें । रतनाकर कि के दौऊ के सब प्रकास
करन अंबर विलास कुवलय दित गानि
यें । वाके अतिसीतकर नूं कुं सीतासी न
कर चंद्रमासी चंद्रमुषि सब जग जानि
यें ॥ १७ ॥ अथ असंभावितोपमालछणं
दोहा ॥ जैसें भावन संभवै । तैसें करत
प्रकास । होत संभावित तहां उपमा के सौ
दास ॥ २२ ॥ जैसें अतिसीतल सुवास म
य जामहि हरी अमल अनल बुधि वलु
पहिचानिये । जैसें कौ नौ काल वस को
मल कमलु कौ सके सौदास के सौ राइ
कंटक से जानियें । जैसें विधु सधर मधु
र मधुमय हि माहें सौदरूप विषु विषमु
वषानियें । सुंदरि सुलोचनि सुवचनि
सुदंति तैसें तेरे मुष आषर पुरष रूपमा

का० ६५

131

नियै ॥ ८८ ॥ अथ विरोधोपमा लछनं दो
हरा ॥ जहं वस्तु उपमां उपमेय सों । आपुस मां
झ विरोधु ॥ सो विरोध उपमा कहत । के
सव जिन हिय प्रबोधु ॥ ८९ ॥ कोमल कमल
कर कमला के भूषन कों केसो रामरू
पनु सरद ससि पिगई है । ससि अति आम
लु अमल तम यमन मय सीता को वदनु
दोषिता कों मलिनाई है । सीता को वदन
सब सोभा को सदनु जाहि मोहतु मदनु
दुषकदन निकाई है । आधो पलु मा
धो जू के दोष विनु सोई ससि सीता के
वदन कूं कौहों तदुषदाई है ॥ ९० ॥ अथ
मालोपमा लछिनं वर्णनं ॥ सवैया ॥ मद
न मोहन को दो रूप को रूप ऊ केसो म
दनु वदनु जे मो जाहि जगु मोहिये । मद
नु वदन के सो सोभा के सदनु सो मजे
सो है कमल रुचि लोचन निपाहिये ।
केसो है कमलु जे मो आनंद को कंदु
सुनु केसो है सुकंदु चंदु उपमान टो
हिये । केसो है जु चंदु वद के सब ऊंव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

132

रवौंन्दसुनिश्रोनप्यारीजेमोतेरोमुषसो
हियो॥२०॥ अथपरम्परोपमालछनं॥दोह
रा॥जहांअभेदवर्णानियें।उपमाअरुउ
पमांन।तासोपरम्परोपमा।केसोकहत
सुजान॥२४॥चोरनवडनदृढनादिनेग
हस्तसिद्धवावेरनबुद्धिवंतनारिस्त्रैनन
रसे॥अंगीनअनंगतनउजेरनमेलेमन
स्यारत्तनसूरेरनथावेरनचरसे।द्रवेरन
मोटेरंकराजऊकेहेनजादिमरनअम
रअमृत्त्यापनेनपरसे।वेदकूंनमेदुका
छुपाइजतुकेसोदासहरजूसेहेरेहरिह
रिहेरेहरसे॥२१॥दोहा॥कोकिलसे
अतिकृसघन।करिनीसोगिरिराजु।म
गसूरोमृगराजसो।ऐसोचरनतुलाउ
२५॥ अथसंकीर्णोपमालछनं॥दोहरा॥
वंधुचारुवारासुकृतु।कल्पवृक्षप्रभु
जांनि।समरिपुसोदरआदिदै॥इनके
अर्थवर्षांनि २६॥सवैया॥सिंधुकोसो
वंधुकिधोंचारुहासरसकोकिकुंदन
कोवारिकिधोंमातिनकोमीतुहै॥क

कल्पकमलहंसकैंकिछीरनिधिछवि
प्रष्यहिमगिरिप्रभावप्रभगटपुनीतनु
है। अमलअमितअंगगंगाकेतरंगस
मसुधाकोसुबुधिरिपुरूपकोअभीतु
है। शिसिशिसिरदसदसपरमप्रकासमा
नकिधौंकेसोदासरामचंद्रजूकोगीतु
है॥२२॥ इतिश्रीमहिविधभूषनभूषिता
यांकविप्रियायांविशिष्टालंकारवर्णन
उपमालंकारवर्णनंनामचतुर्दशःप्रभाव
१४॥ अथवनिताप्रसंगोपमावर्णनं॥दोह
रा॥ सवितनाकेपरतापज्यों। वरनेकविता
अंग। कहेंयथामतिवरनित्यों। वनिता
केप्रसंग॥१॥ कहीजुपूरवपंडितनि। ता
कीजितनीजांनि। तितनीअवताअंग
की। उपमाकहेंवषानि॥२॥ सवभाषा
कीस्वामिनी॥ विबुधवचनजियजानि
ब्रजभूषनमनभावती॥ ताकी
सुरभाषातेंअधिकहै। ब्रजभासोंहित
ब्रजभूषनप्यारोसदा। मुषभूषनक
विलन॥४॥ नषतेंसिखलौवरनियेदे ॥६६॥

वीदीपतिदेषि। सिषनैंनपलैंमानुषीके
सौदासविसेषि॥५॥जगकेदेवीदेवकौं
श्रीहरिदेववषानि। तिन्हरिकीश्रीरा
धिका इष्टदेवताजानि॥६॥भूषिततिः
न्हकेभूषननि। त्रिभुवनपतिकेसंगति
नकेकेसौदासकविवरनतहेप्रसंग॥
७॥अथचरनोपमावर्णनं दोहरा॥उप
मांश्रोरसमांनसव इतनोभेदवषांनि
जावकजुतपदवरनियें मिहदीमंजु
तपांनि॥८॥अतिकोमलपदवरनियै
पल्लवकमलसमांन। जलजकमल
ज्यौंचरनकहि करकदिथलजप्रमांन
॥९॥अथजावकवर्णनं॥राजसजोगु
नकोप्रगट। प्रीतपछिकोभागु। रंगभू
मिजावककवरनिकोंपरागुअनुरागु।
१०॥सवैया॥कोमलअमलताकीरं
गभूमिकिधौंयहुसोभिजततुअंगनुः
किसोभाकेसदनको। अरुनदलनि
परकीनोकितरुनकोपुजीतोकिधौं
रजोगुनराजीवकेगनको। पलपल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कवि०
॥६१॥
135

प्रनयकरतकिधौंकेसोराइलागिर। हैयोपूर्वानुरागुपियमनको। श्रीरीछष भांनकुंवरितेरंपाइसोहेजावककोरं गुकिसुहागुसोतिजेंको॥१॥पदवर्ण नं॥सवैया॥गंगाजूकेजलमधिकंठ केप्रमांनपैठिजपिजपिमरमंत्रुग्रा नकुवढावही।केसोदासघामजलसी तसहैएकरसगेहैएकपांइककूचि तुनचलावही।कोमलअमलमयेसु षदसुवासुभयेकमलानिवासमनुत रपिभ्रमावही।पायोवरूप्रलपदुपदु मनिपदुमिनितेरेपदपदवीकोपदुपें नपावही॥२॥चर्णांगुलिवर्णनेसोहरा ग्री कुलिचंपककीकली।जीवनमा रिववान।तारारविससिसुमनमन म निनगनषनिसमान॥११॥सवैया॥चं पकलीदलफूलैभलीपरअंगुलिवा लकेरूपरसहे।सुषमुदेसलसैंनष योंजनोप्रीतमकेहगदेववसेहे।वा केअनोरवनेविछियानिवि भूषन।

॥६१॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

136

जोतिजराइगमैंहैं। केसवसोमसरोज
निउंपरऊपरकोपनैननत्रानकसैंहैं।
नूपुररक्षाजंत्रमन। लोचनगुनगुनहा
रजावककजसपावकमधुप। जानिकव
हनमार॥२२॥ गतिनिकेहारकिविहार
केपादरूहशिकिधौंप्रतीहाररतिपति
केनिलयके। हंसगतिनाइककिनायक
हेमयके गूढगुनगाइककिश्रवनसुदा
यककिमायकहेमयके। हाटकघटित
मनिस्यामलजटितपगनूपुरजुगलकि
धौंवाजैहैंविजयके केसवकमलमूल
अलिकुलकुनितकिकिधौंप्रतिधुनित
समनितनचयके॥२३॥ जहरिविनंती॥ जह
रिजयकंकनकलित। केसवदासमसुजा
न मालामालासुभसभा। सीमासमसो
पान॥२४॥ कोमलकमलसकूलनूपुरन
वलअलिकुलनिकीमालाकिधौंके
सवसुभाइकी। चरनसरोवरीसमीपवि
छियाकनककिधौंकलहंसनिकीवैठ
कबनाइकी। गजनिकीहंसनिकीजीति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कवि॰ ॥ ६८

137

गतिमेरीमतिवांधेजयकैकनकीसो
भासुषदाइकी। अमलसुमिलिमीठी
मदनसदनकीकिजममगेजुगयगेज
हरिजराइकी ॥५॥ उरूकरीकरकेरि
समकरभसोभसौंलीन। चक्रपीवथ
लपुलिनसम। वरनिनितंबनिपीन।
।४॥ कोमलकमलसुखिततेरेएजुगल
जानुमेरबलवीरजूकेवलहिहरतहैं
॥ सोरभसुभाइसुभरंभाकोसोदंतुअ
रूकेसबकरभजूकीसोभानिदरतहै
सोचिमाचिमंदरुचिसोचिसोचिसकु
चनिसुधिआयेसांडनिकीकोडरीक
रतहैं। कोटिरतिराजसिरताजब्रजरा
जकीसौंदेषिदेषिगजराजलाजनिम
रतहैं॥६॥ नितंबवर्णनं ॥ सवैया॥ चकू
आरचितचोरचाकचकचक्रमनसुंदर
मनहरमनहीनेहैं। दितिसुतभूपमघ।
टायवेकौंसुषरूषसुरनिवटाइवेकौं
केसबप्रवीनेहैं। सबहीकेमननिमथन
हरिजूकोमनमथिवेकौंमनमनमथ ॥६८॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हाथदीनैहैं॥सुचिरुचिसकुचसकेलि
केतरुनितेरेकाफूंनएचतुरनितंबचक्र
कीनैहै॥७॥कटिवर्णनं॥दोहरा॥कटि
अतिसूछमउदरदुतिचलदलउ
नमांनरोमलतासमसूमअलिचारु
चिटीनसमांन।१५॥सूतकीमिठाईजैसी
साधुकीसुगाईतैसीस्यारकीढिगाईऐसै
सीछीनछकूरितुहै।धीराकैसोहासुकै
सोहासदासकैसोसुषसूरकीसीसंकै
करंकअंकैसोचितुहै।सूमकैसोदान
अतिमूढकैसोग्यांनुगोरीगोरिकैसो
मानुमेरजानसमुदितहै।कोनहैकवा
रीवृषभांनकीकुमारीप्यारीतेरीकटि
निपटकपटकैसोहितुहै॥८॥रोमराजी
वर्णनं॥किधौंकांमबागवांनवईहैसिं
गारवेलिसींचिकैंवढाईनाभिकूपमनमा
हियै।किधौंहरिनैंनषंजरीटनिकेषेलि
वेकीभूमिकैसोहामनषपंकराहियै।
किधौंवलदलनदलनपियकोकपटजुर
छूटिवेकोमंत्रुलिषिलोचननिपाहियै।

सुंदर उदर सुभ सुंदरी की रोम राजी किधौं
चित चातुरी की चोरी चारु सो हियै ॥९॥
कुचवर्नं दोहरा ॥ चक्रवाक कुच वर्नियै
के सब कमल प्रमांन । सिवगिरि षट
म ग गुछ फल सुभ इभ कुंभ समांन ॥२॥
किधौं मनोहर मनि हार द्युति सरषे लै ।
जोवन करत कुंभ नदर सम है । मोहनी के
म ग किधौं इंदिरा के मंदिर कि इंदीवर
इंदुमुषी सोर भसर सम है । आनंद के कं
द किधौं अंग है अनंग ही के वाट न ज्यों
के सो दाम वर सम है । ऐरी मेरी कांन्ह जू
की प्यारी तेरे कुच किधौं रूप अन रूप
जात रूप के ककर सम हैं ॥१०॥ भुजोवर्ण
नं दोहरा ॥ भुज कर पंकज पल्लव नि
विस वल्लरी सुयाम । रतन नतारका कुसु
म सर । नष रुचि के सो दाम ॥११॥ के सो
दाम गोरे गोरे गोल कोम सृनल हर भा
मिनी के भुज मृनल भाइ से उतारे हैं । सो
भा सुष वरसन माषन से पर सत कंच
न सदर सत कवि न सुधारे हैं । वलय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

140

वलितवाकुंदषिरीफाहारिनाकुमानोम
नपासिवैकोंपासिसविचारैहै। मलिनमु
नालमुषपंकजदुरायेंदुषदेषोजाइछा
तिनिमेंछेदकरिडारैहैं॥११॥करभूषनव
र्णनं॥गजराविराजेगजमोतिनकेअति
नीकेजिनकीअजितजोतिकेसोदासमा
ईहै। वलयावलितकरकंचनकलितम
निलालकीललितपोंचीपेंचिनवनाईहै।
सेतपीतहरितफलकफलकतिलाल
स्यामलसुमिलिमेरेस्यामलैकोंभाईहै।
मानोंसरसोमकीकलासकेलिआप
नीयोंआपनेसषाकोसुषुपाइपहिराई
है॥१२॥नषअंगुलिवर्णनं॥गोरीगोरीअं
गुरीनिरातेसरूचिंनषआरअतिपैनेपै
नेंरचिरचिकीनेहैं। किधौंकेरतिजयले
षिवेकीलेषनासुरषकिधौंमीनरथसा
रथीकेनाइननदीनेहैं। किधौंकेसोदा
मपंचवानजूकेपांचोंवांनसकलभुव
नजिमवसिकरिलीनेहै। कंचनकीवलि
मनुसुंदरकलितमनकिधौंइकचंदके

महावरमैं भीने हैं ॥१३॥ महिंदीसंजुतपांनि वर्णनं ॥ राधिकारूपनिधांनकेपाननि ह्यानिसवैछितिकीछविछाई ॥ दीहल्म दीहनसछमथलगंहेहगगौरीकीदोरि गुराई ॥ मिहदीमयबूंदघनेतिनमैंमनमो हनीलाई ॥ इंद्रवधूल्मरविंदकेमंदिरइं दिराकोंजनोपूजनग्राई ॥१४॥ ग्रीववर्ण नं ॥ दोहरा ॥ कंठसुकंबुककपोतद्युतिके सोहासप्रमांन पीतकनककीपट्टिका वरननसकलसुजांन ॥१५॥ सवैया ॥ सुर नरप्राकृतकविभरीतिल्मारमटीमातु कीसुभारतीकीभारतीश्र्योभीकी ॥ कि धौंकेसोहासकलगानतासुजानताभ संकतासोवचनविचित्रताकिसारीकी विनाविनुपिकसुरसोभाकीत्रिरेषरु चिमनक्रमवचनकिपियचित्तचोरी ॥ की ॥ श्र्यबसोईकीसोमोहीश्र्यविकाऊ देषिदेषिल्मबुजनयनकंबग्रीवगोरी गोरीकी ॥१५॥ कंठभूषनवर्णनं ॥ लेति मालललालकोऊमालचित्रगोलग्रीव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लोलनैंनादेषिदेषिजातगर्वभागिकै॥
स्यामसेतपीतलाललंकंबुकंठकंठमाल
जातमांहीनेकहीरहीजुजोतिजागिकै
केसौदासअमपासवासुकेरहेमनो।
समतिरागिनीनिरागराजरंगरागिकै॥
स्वरकेप्रकासतैंनिवासुसोमजूकस्यो।
अनेकभांतिकीकिचौरहीमयूषलागि
कै॥९६॥अथपृष्टवर्णनं॥केसवकुवरदे
षीराधिकाकुचरिआजुसोवतिसुभाइ
गुदीकफूलीभांतिमलीकुदनिकी
कलीतनतनकतनककी।पीठिमेंतिर
कीप्रतिमूरतिविलोकियतिपूरतिनय
नजुगसूरतिवनककी।हरिमनुमथिब
कैंमानोमनमथ्थलिषेरूपकेरूचिरचौ
कपटिकाकनककी॥९७॥चिबुकवर्
णनं॥कज्जलमनरसछीटछबिरदन
राहकोआनु।फाककामसरचिबुकै।
को।स्यामलबुंदवपानु॥९८॥सोमनसिं
गारसकीसीछीटसोहेफांककामस
रकीसीकहेंजुगतिनजोरिजोरिराह

कैसोरदतुरह्योहैचुभिचंदमांगतमीको
सुहागुकिधोंडोरोगतितुतारितारिचतुर
विहारीजूकौचितुमौंचिकुटिरह्योचिं
यैतंकेसोहासलैतुचितुचारिचोरितन
कविचुकतिललैरपरमेरीसपिडारें
वारितरूनीतिलोतमांसीकोरिकोरि॥
१८॥अधरवर्णनं॥अधरबिंबपल्लववव
रनि। प्रगटप्रवालप्रमान।मुक्तादाडिमहुं
दमनि।हीरादसननसमान॥१८॥अरुन
अधरअतिसुबुधिसुधाकेधरकोमल
अमलदलदुतिछीनिलीनीहै।केस
वसुवासमंदहासजुतकौनकोमवि
दुमकगेरकदुविंबबुधिहीनीहै।मूछ
मसुरेषअतिसुधीसुधीसविसषचतु
रचतुरसुखरेषारचिकीनीहै।मानौंमें
नगुमरहारिनाहके नयनगुनकविग
निलीवीकहंविद्यागनिदीनीहै॥१९॥
दसनवर्णनं॥सछमसरेषसुधीसुवन
बतीसीमानौंलछनवतीसकूकीमूर
तिविसपिये।रानीदैरतीकरूचिसत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१४४

मवकिधोमसिमंडलमैंसुरनिकीम-
ताअवरेषियेकिधोंपियजुगतिअष
उत्ताकेथडेवकोंषंडनकोंकेसवतरकु
कुलिलेषियेदीनीदूनीकलाविधितेर
२ मुषचंदकोंसन्योंहीआकासचंद्रमंदडु
तिदेषिय॥२०॥हास्यवर्ननंदोहरा॥जो
तिजुन्हाईदामिनीदीपतिसुधाप्रकासु
महिमामोहमरीचिका।रुचिमाहनीसु
दामु॥२१॥किधोंमुषकमलमेंकमला
कीज्योतिकिधोंमृगलोचनमरीचिका
मरीचिकिधोंरूपकीरुचिररुचिरुचि
सोकुराईहे सारमकीसोभाकिदसनघ
नदामिनिकिकेसवचतुरचितहीकीचतु
राईहो ऐसीगोरीभोरीतेरीथोरीथोरीहां
सीमेरमोहनकीमोहनीकोमोहनीकि
गिराकीगुराईहे॥२२॥मुषवासकवर्ने
नंदोहरा॥मदनजीविकमुषजननि म
नमोहनीविलासु निपटकृपानीकप
टकीरतिसुषमामुखवासु २० किधों
नयाउदितअनंगजूकोअगुरसोर।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भिनु अंगरागु राषै देह दुषको। किधौं प
रिमल प्रेम पूरनावतंसनिको किधौं व
रषानी वनमाली के वपुषको। किधौं पा
इ प्रानपति उदय कमलु षिल्यो ताको गं
ध गंधु कि सुगंधु तेरे मुषको॥ २२॥ मुषरा
गवर्णनं॥ दोहरा॥ अरुनोदय राजीव मैं
अंगुरागु अरुरागु। रूप रूपरति राज मो
राज तु मुष मुष रागु॥ २॥ केसोदास राग
रागनीनि को कि अंगरागु किधौं व जे स
वत है संध्यामली भोर की। अरुन रदन व
कु वदन कुंदन किधौं वहई फूल कफूल
कति चकूं उरकी। किधौं भाषा भूषन की
मनिनिको चाक चषचोलनु चित चालि
तेरें चित चोर की। किधौं लागि रहो अनु
रागु नाह नैननि को किधौं रुचि राची तेरें
तरुनी तमोर की॥ २३॥ रसनावर्णनं॥ दोह
रा॥ रसना कोमल वरनियें। कोविद अ
मल अमोद लोल। केसव विदवी रसनि
की। सरस रसिक मृदु बोल॥ २२॥ देषत दी
आधक पलु बांधी जाति वाधा सब राधा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

146

नूकी रसना सरूपकी सी रानी है। आछी आ
छी वतनिकी जननी सी राजति है रसनी की
देवी किधौं चिपद्धिचानी है। केसोदास सक
ल सुवासु की हे सेज किधौं सकल सुजान
ताकी सिष सुषदानी है। किधौं मुषके जमे
सकतिको नैसे वेद जसविना निधानी है
॥२४॥ वाणी वर्णनं॥ दोहरा॥ वाणी वीनाव
नुञ्अलिसुकपिककिंनरगानुसोभनसु
नवकुञ्अर्थमय। केसववासुवषांनु॥२३॥
कांमकी दुराई किसुहाई सिषमाधुरी की
इंद्राके मंदिरकी मांईरुपजाति है। सुरन
की सोवरी किमादकी किसोदरीकिचातु
री की मात ञ्असी वातनि सजति है। रागर
जधानी ञ्अनुरागनिकी ठकुरानी माहेदधि
दानी केसोदास कोकिला लजति है। ऐरी
मेरी ब्रजनारी तेरी वरवांनी किधौं वानी।
ह्री की वीना सुषसुषमे वजति है॥२५॥ कप
रोल वर्णनं॥ दोहरा॥ मधुरमधूकके कपोलस
मकेसवदासप्रमान। तिलप्रसूनतनी
रसमसुकनासिकांसमान॥२४॥ किधौं

दो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दरिमा नोरथरथकी सुपथभ्रमिमीनर
थमनकूंकी मतिनसकतिछै। किधोंरू
प रूपनिकान्ह्रा सनुरूचिररूचिमिलिमृ
गलोचनमरीचिकामरीचिछै। किधोंस्रु
तिकुंडलमकरसरकेमोद्यसचितएतें
चितुचकचोंधिकेचलनतछै। गोरगोरगा
लन्ह्रातिन्ह्रमलन्ह्रलो मंतेरलनितका
पोलकिधोंमेंनकेमुकरहै॥२६॥ नासि
कावर्णनं॥ केसवसुवासुस्वाससिद्दन
कीगुहाकिधोंपरमप्रसिद्द सुभसोन
न सुवासिका। किंधोंमनसिजमनमी
नकीत्रिवेनीकिधोंकुंदनकी सीवलो
ललोचनविलासिका। मुकतालनलि
तपुरीललितमकुंदजीकीकिधोंसुर
सइजतिकासीकीप्रकासिका। त्रिभुव
नरूपताकोतुंगतायनिधिजाकेताइ
कीतरंगकितरूतिनेरीनासिका॥२७॥
नासिकामुक्तावर्नन॥दोहरा॥ केसव
आनंदकंदफलसुधाबुंदव्यकरंद
मनपतंगकोदीपुमनु। नकोमातीज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गवंद॥२५॥केसोदाससकलसुवासु
कानिवासुमषिकिधौंअरविंदमहबं
धुमकरंदको।किधौचंद्रमंडलमेंसोहे
तुअसुरगुरूकिधौंगोदचंदहीकेषेल
सुतचंदको।वाढेरूपगुनुकामुजिहि
छिनदूनो।किधौंसंघनुहेफलचंदआ
नंदकेकंदको।नाकनाइकानिकुंतेनी
कौनकमातीनाकमानोमनुतुरफिर
घ्योहेनंदनंदको॥२८॥अथलोचनवर्ने
नं॥दोहरा॥लोचनचारुचकोरसम।चा
तिककुमुदतुरंग।अंजनजुतअलिमी
नसर।षंजनकंजकुरंग॥२९॥पियमन
धूतकिधौंप्रेमरथसूतकिधौंभवरअ
भूतवपुवासकेसुरंगहे।वानमदभंज
नकिषलिवकेषंजनकिरंजनकुमार
कामदेवकेतुरंगहे।चितवतचकूंआर
चितचोरचोरमुषचंदकेचकोरकिधौंके
सवकुरंगहे।सोभासरलीनमीनकुव
लयरसचीननलिननवीनकिधौंनेनब
कुरंगहे॥२९॥अंजनवर्ननं॥दोहरा॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

विषसिंगाररसतूलतनपूरपातकला
ज।मनरंजनअंजनसबै।वरनतहैक
विराज॥२७॥किधोंरसराजरसरसित
असितकिधोंललितविसिषविषव।
लितसभालिके।किधोंजगुजीतिबेकों
राजारतिनाथहाथवाहनवनाइके।
मोदासचलचालिके।अनतघातपान
कुकिचितुचोरवेकोंनमुंदेषिवेकोंनं
दलालुलालिकरैकालिके।लागिर
हीलोकलाजपंजननयनकिधोंपि
यमनरंजनकिअंजनहैवालिके॥३०
भ्रू जुगवर्ननंदोहरा॥भ्रकुटीलतापल
लवधनुष।रेषाषडगअनूप।केसो
दाससुपाससम।वरनिअवनकरि
रूपः॥२८॥किधोंलागीपंकजकेअंक
पंकलीककिधोंकेसवमयंकअंकअं
किनसुभाइको।जंत्रहैसुहागकोकि
मंत्रअनुरागकोकिमंत्रिनिकोवीज
अधऊरधअभाइको।आसनुसिंगा
रकोकिकामकासरासनुहैसासनु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

150

लिख्यौ है गेम पूरन प्रभाइ कौ ॥ रोप रूष
वेष विष पीयूष वीस ष मय भामिनी
की भौ है किधौं भौ जु हाइ कौ ॥ ३१ ॥ कर्ण
वर्नन ॥ रागनि के आगर विराग के वि।
भाग कर मंत्र के भंडार गूढ रूढ के रवन
है। गपांन के विवर किधौं तन कतन कल
न कनक चोराह हरि रस अंच वन है। श्रु
ति ० नि के कूप किधौं मन के सुमन तरू प
किधौं के मैदा स रूप भूप के भवन है।
लाज के नयन किधौं नयन सचिव कि
।धौं नयन कटाछ सर लछि कि श्रवन
है ॥ ३२ ॥ दोहरा ॥ राग रवन भाजंन भवन
सोभन श्रवन पवित्र। के मै लोचन ला
ज के। मन के मंत्री मित्र ॥ ३३ ॥ अथ कनै
फूल वर्नन ॥ दोहरा ॥ मनिमनिमय
ताटंक जुग। ललित लछि परमांन त
रूनि तरूनि चल चक्र से के सरि कुसम
समांन ॥ ३४ ॥ पदरियि करन फूल देषी मैं
कुवरि एक सुन कुडु। वर कान्ह सो मा
सुष दांनियें ॥ तिन के तन की जो ति जी।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कवि.
॥७५॥

तीजो निवंत अतिके सब अनंत गतिके
सगर आनियें। मानो वा मेदव जूके वेर
को मको मेदव साधे सर संधान तिलछि
उन मानियें। दुकूं दिसि दुकूं भुज भ्रकु
टिकमान नानि कटाछ वान वेधत न जा
नियें॥३३॥ कुटिलावर्णनं॥ चलदल।
सकिधो नीतुरी जनु पताक मनमीन
सरस करस ज्याका सके। दीसतदीप
नवीन॥३१॥ पुटिल्ला कुचित मनि मोर
नचन कवन कनक कसल सरूचि
रूचिर रवन है। तन कतन कतन वर
लपत्ताका किधें थिर न रहत अनला
गत पवन है। तन कतन कतन तीतुरी
तरल गति मनकू पताक पति पीडति
पन है। कालिंदे के कूल कूल जात ज
ल केलि कहूं कालिंदी सरोह मेरे का
लीक रवन है। के मोहा समसुंदर रव
न व्रज सुंदरी के मानो मनभावत के
भावत भवन है॥३४॥ भालवर्णनं॥ दो
हरा॥ कनक पट्टिका समकहो। को।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

152

सवललितलिलाकू। सोभनसोभाकी
सभाकि। अर्धचंद्रिकाचारु॥३५॥केस
वन्नसोकुकिधोंसुंदरसिंगारलोकु क
नककेदारकिधोंआनंदकेकंदको॥
सोभाकोसुभाउकिधोंप्रभाकोप्रभाउ
देषिमोदहरिराउसपिनंदनसुनंदको।
किधोंचमकतिचारुगंगाकोपुलिनुकि
धोंचकचौध्योचितुमतिमंदकूअमंद
को। मजदेसुहागकीकिभागकीसभा
सुभागभामिनीकोभालुकिधोंभागुचा
रुचंदको॥३६॥ अलकवर्ननंदोहरा॥
अलकचिलकसोंवरनियें। स्यामलअ
मलसुपास। अतिचंचलअतिचारुअ
तिमृदुमकेसोदाम॥३७॥डारडोरडग
डीडिगुनतिमरिसुजमुनाजानि। जा॰
यामायाकोंमकी। कायाकुसलवषाउ
॥३८॥केसवकसाकिधोंअनंगकीसु
रंगमुषिलोचनकुरंगनिकीवालिहद
कतिहे॥पियमनुपासिवेकोंपासिसी॰
यसारीकिधोंउपमाकोंमेरीमतिभव

कवि०
॥७६॥
153

भटकतिहै। तरनितनूजाौषेलेषेलैताराना
थकिधौंहाथपरीतमीकीतहूनिभटक
तिहै। मुनिलोललोचननवलनेहनि
धिनीकीअलककिअलिकअलक
अटकतिहै॥ ७६॥ मुषमंडलवर्णनं॥ अ
मलमुकरसोमानियें। कोमलकमलस
मान। अकलंकितमुषवनिये। चारुचं
दपरिमानु॥ ७५॥ ग्रिहनिमैंकीनोप्रहुस
रनिदेष्योदहसिवसोकियासनकुजा
प्पाजुगचारप्योहै। तपनिमैंतप्योतपु
जलधिमेंजप्योजपुकेसोदासबपुमास
मासप्रतिगात्योहै। मुनिनंदनंदप्यारी
तेरमुषचंदसमचंदुपेनयाकोटिछंदक
रिहाय्योहै। उडगनईहजदीसअोषधी
सुभयोजदपिजगतईसमुधासोंसुधा
रुयोहै॥ ७६॥ अथकेसपासवर्ननं॥ दोहरा
भोरचोरसोंवालतमजमुनाकोजलमे
कु। मोरपछसमबारनिये। केसवकेस
सनेह॥ ७६॥ कोमलअमलचलचीकने
चिकनचारुचितयतेंचितुचकचौंधि

स

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यतुके सोदास ॥ सुनहिछबीलीराधाछो
डैतेंछुवैछचानिकोरसरकोरहैंसुभाइ
हीसदासुवास । सुनिकैप्रकासउपहास
निसिवासरकैंकीनोहैसुकीसीवसवा
सुजाइकैअकास । जदपिअनेकचंदसा
थमारपछतऊकामजीत्योएकचंदमुषि
राषेतेरेकेसपास ॥ ३७ ॥ सिरभूषनवर्णनं
जमुअनुरागरेषसुंदरसिंगारमैंकिमर
सामकरतमतेजतपबलमें । किधौंगि
रीगंगाजूकेपूरनिकीपूरीजानिनिकसि
चलीहैमिलिजमुनाकेजलमें । स्यामल
सुमिलसुभपा टिनिमैंचारुमांगअरुन
जलजसोभसोभेपलपलमें । मानोंकेसो
राइरूरेरूपजातरूपफूंकीकसिकेसो
दासलीककसौटीअमलमें ॥ ३८ ॥ अथ
सीसफूलवर्ननं ॥ किधौंअंधियारीरैनि
मधिआभाइंदकी । किधौंगुरुगिरकेसि
षरआनिदियाधर्‍योजमुनाकेजलप
रफांईअरविंदकी । कालीकेकपापक
लपरकेसोकापटुंमपदपंनगाकेमा

थकिधौंमनिहैफनींदकी।तेरेसीससी
सफूलऐसीभारेतआलीमानुनीके
पाइपरैंमूरतिगोविंदकी।।३ए।।वेणी
वर्णनं।।दोहा।।ऐसीवेनीवरनियें।के
सोदासवनाइ।असिनिसिजमुनाधार
अहि।अलिअवलीसुषपाइ।।३४।।चं
दनचढाइचारुकुंकमलगाइपीछैंकि
धौंनिसिनाथनिसिनैंदमोदुराईहै।।
किधौंवंदनछिरकिछीरसांपिनिज्यों
अलिअवलीसमीपसुधासाधआ
ईहै।किधौंरसराजरसधाराधरधाई
हैमेलिमालतीकीमालालालडोरी
गोरीगुहिवेनीपिकवेनी।।कीत्रिवेनी
सीवनाईहै।।३ए।।अथवेंदीवर्ननं।।वैं
दीवरनतविबुधसव।केसोललितल
लिलार।भागसुहागनरसमगा।रवि
शशिउदितउदार।।३ठ।।मांगफूलसि
रफूलसुभवेनीफूलवनाउ।रूपभू
पजगज्योतिजनुसरजप्रगटप्रभाउ
३ए।।अथसिरभूषनवर्णनं।।वेनीपि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

156

कवैनीकीसुनैननिवनाइगुही कंचन कुसमरुचिलोचननियोहिये। केसोरा मफेलिरही फूलिसीसफूलिदुतिफू। ल्योतनमनुमेरोन्याइहरिमाहिये। वेदा जगमतुजराइजस्योताकीजोतिजीतोहै न्याजितुउपमांनन्यानटोहिये। मानौरत्न पाउंडेनिपाउधारिन्यायेहाऊसाहनुसु दागुसिरभागुभालसोहिये॥४७॥ अथ अंगवासुवर्ननं॥ दोहरा॥ सहजसुवासु सरीरकी। आकरषनविधिजानु। अति अद्दष्टगनिदूतिका। इष्टदेवतामानु॥४८॥ अमलवदनकरनयनचरनकुचकपू रकुरंगमदकटाछनिवासुहै। नूपुरी कुटिलकचमेचकसुगंधमयकुंदका। लिका - दंतचंदकाकोहासुहै। कुंकुम फ़ुरीरकुंकुमानिकासास्वदनीरअब रविलासुहै। मनकरषनविधिकिधौं इष्टदेवताअद्दिष्टगतिदूतिकाकिसह जसुहासुहै॥४९॥ वसवर्ननं॥ किधौंइह केसवसिंगारकीहैसिद्धिकिधौंभाग

कवि·
॥७८
157

की सहेली कि सुहाग को सहाउ है । जो
वन की जाया कि धौं माया मनुमोहिबे की
काया कि धौं लाज की कि लाज ही को ॥
आउ है । लाष लाष भांतिनि के पिपुही
के अभिलाष पहेरें वनाइ कि धौं सोभा
को सुभाउ है । सारी जरकसी जगमगति
सरीर कि धौं भूषन जराउ ही की जोति ॥
को जराउ है ॥ ४२ ॥ अथ संकीर्ण अंगवर्ण
नं ॥ चंद के सो भाग भाल भृकुटी कमान
सी है मैन के से पैने सर नैननि विलासु
है । नासिका सरोज गंधवाकु से सुगंध ॥
वाकु दास्यो से दसन के सोवी जुरी सोह ।
सुहै । भाई ऐसी ग्रीव भुज पानु सो उद
र अरु पंकज से पाइ गति हंस की सी जा
सु है । देषी है गुपाल एक गोपिका मैं दे
वता सी सोने के सरीर सब सौंधे की ॥
सी वासु है ॥ ४३ ॥ संकीर्ण भूषन वर्णनं
बीछिया अनौट वांके घूघरू जराइ ज
री जेहरि छबीली छुद्रघंटिका की जालि
का । मूदरी उदार पौंची कंकन वलय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नीकी कंठ कंठ माल हार पैहिरै गुपालि
का। वेनी फूल सीस फूल मांग फूल कं
र्णफूल षुटिला तिलक कनक मोती व
नी वालिका। केसो दास नील वास जो
ति जग मगि रही देह धरैं देवि यति मा
नो दीपमालिका॥ ४४॥ अंग दीप्त वर्ण
न॥ दोहरा॥ कंचन कंचन के तुकी। च
पला चंपक चारु। कमल को सगोरोच
ना। त्रियतन दुति अवतारु॥ ४५॥ राधि
का अंग गुराई सी ओर गुराइ विरंचि व
नावन लीनी। केमन बुद्धि विवेक सो
एक अनेक विचारन मैं इगदीनी। वां
नि के ते सी वनी न वनावत केसव के
सकूं छ्वि गई ही नी लेत वकेसरि कुंद
न के तु की चंपक केद। निदामिनि की
नी॥ ४६॥ पूर्ण मूर्ति वर्णनं॥ चंद कला दुति
दामिनी। कनक सलाका देषि। दीप
सिषा औषधि लता। माला वाला लेषि
॥ ४७॥ तारा सी कां न्हतराय न संग आवे
द कला निसि चंद कला सी। दामिनि

कवि० ॥७९॥

159

सीघनस्यामसमीपलगेतनस्यामत।
माललतासी।सोनेकीसीकलसेतन
स्यामीदूरिभयेंतेंमिलैउरहारविहा
रप्रभासी।आधिकीऔषधिसीकहि
केसवकामकेधांममेंदीपसीषासी
॥४६॥षटपदी॥महिमादनमोहनीरू
पमहिमारुचिरूरी।मदनमंत्रकीसि
द्धिप्रेमकीपद्धतिपूरी।जीवनमूरिविचि
त्रकिधोंजगजीवमित्रकी।किधोंचित्त
कीवृत्ति।प्रितिअभिलाषचित्रकी।क
हिकेसवपरमानंदकी।आनंदशक्ति
किधोंधरधरनि।आधाररूपभवधरि
निकोकिराधाव्रजबाधाहरनि॥१॥इं
हिविधिवरनकुसमकलकवि।औरै
छविअंगअंग।कहीजथामतिजीय
जऊ।केसवपायप्रसंग॥४७॥इतिउप
मां॥अथजमकालंकारवर्णनं॥दोहा
आदिपादेकजमक।अव्ययेत॥सज
नीसजनीरदनिरषि।हरषिनचतइत
मोर।पिकपीऊचातिकरटनु।चितवि

॥७९॥

160

तवहिहरिकी ओर ॥ ४५ ॥ अथैकुसोरेच
रनजम । मानुकरतिसषिकौनसौं । हरि
तूंहरितूआहि । मानुभेदकौमलुहे मा
हिदिषिचितचाहि ॥ ४६ ॥ तीसरेचरनजम
कु । सोभतिसोभाअंगहिन । हीमतहय
हयसार । नररनवारनगुंजरत । देनेचिन
सेसार ॥ ४७ ॥ चौथेचरनकौअंतुजमक
राधाकेसरीकुवरकी । बाधाहरकुप्रवी
न नैंकसुनावकुकरिकृपा सोमनवीन
नवीन ४८ आदिअंतजमकु हरिके
हरिकेवलमनहि सुनिदृषभांनकुमा
रि गावकुकोमलमीतहे सुषकरताक
रतारि ४९ त्रिपदांजमकु सारससा
रसनयनिसुनि चंद्रचंद्रमुषिदेषि सु
निरमनीरमनीअतुर तिनिकेहरिसु
षलेषि ५० द्विपदादिमक आलिनी
आलिनीरजवसैं प्रतिवरवरनिपतंग
केमनमथमथमगामथतहरि वसेराधि
कासंग ५१ अथयानपादादिजमक
आपमनावतिप्रांनपति मांनिनिमा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

उनिचारु। परमसुजांनु सुजांनु हरि। अ
तुनचिंतविचारु॥५१॥ द्विपदांजमक॥
जिनहरिजगकोमनुहर्यौ वामचाह
गवाहि। मनसावाचाकर्मना हरिविनि
तावनिताहि॥५२॥ अथउत्तराधजम
क। आजुछबीलीछबिवनी। छोडि
छैलनिकेसंग। मिल्योतरुनितरुकि
निकरि। केसवकेसवअंग॥५३॥ त्रिय
जदाजमक। देषिप्रवालप्रवालहरि
मनमनमथरसभीन। पेलनिवहसुं
दरिगई। गिरसुंदरीदरीन॥५४॥ त्रिपदा
जमक। परमानंदपरमांनदहि। देष
तवनउपकंठ। यहन्यवलान्यवला
गिहै। मनुहरिहरिकेकंठ॥५५॥ चतुर
पदादिजमकु। नदीउरवसीउरवसी
मदनमदनवसिमत्त। सुरतरवरभ
रवरनजैपोनंदनंदन्यासक्त॥५६॥ आ
व्यपतजमनिसदा। जमकनिकीसुष
दानि। वरनोंइहिविधिजानि। कवोव्या
पतविकल्पना। जमकनिकीसुषदां

162

नि॥५८॥माधवतोवधराधिका।यावकुकाकु
कुमामाकु॥पूजितमाधवनेमसों गिरजाको
नरतारु॥५९॥ आअंतजमकु। सियास्व
यंवकुमांमजिन। जुवतिदेषेराम। तादिनतें
तिनसवतरुनि। नेनेस्वयंवकुधाम॥ ६०॥
आअंतजमकनिरंतरः। पापनसतयों
कहतही। रामचंद्रअवनीपु। द्दनीपुप्रफु
ल्लितदेषिज्यों। विरही विरहसमीपु॥ ६१॥
आदिअंतसांतरः। जेसेंछविरविचंद्रमां
कमलाकरमविलास। असेंहीसवसाधु
पा। कमलाकरनिउदास॥ ६२॥ परमत
रुनिसोंसाभिजे। परमेस्वरअरधंग। क
ल्पतनजेंसीलसे। कल्पह्रछकेसंग॥ ६३॥
दानेदंतज्योंसाभिजे। दीनरतिनकेहाथ
दानसहितज्योंराजही। मत्तगजनिके
माथ॥ ६४॥ चतुर्पदीजमकनरा॥ लोक
हिराषतसर्वदा। रामचंद्रअवनीपु कर
कनिवारननामुजग। नरवानरकोदी
पु॥ ६५॥ सुषकरदुषकरतेदहें सुषक
रवरनैंजांनिजमककहीकविराजस

नि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कवि
॥ ८३॥
163

व। कुषकरकहतवर्षानि॥ ५६॥ मानसरो
वर आपुनै। मानसमानसवाहि। मान
सहरिके मीनको। मानसवरनहितादि
॥ ५७॥ राजराजसंगईसद्विज। राजाराजस
मानु विषविषधरअरुसुरसरित विष
विषमनउरआनु॥ ५८॥ नगस्वरूप॥ प्र
मानमानबाचहीं अमानमानराचहीं। स
मानमानपावहीं। अविमानमानधावहीं
६०॥ कुमतिहारिसंहारिहव। हितहारनी
प्रहारि कहारिमातिविहारिवन। हरिम
नुहारिनिहारि॥ ६१॥ जोतुंसषीनकहूंक
छुचालहितोहों कहोंइकवातरसालहि
तोकहुंदेउवनीमनिमालहि माकहतें
मिलवैनरलालहि॥ ६२॥ जसैरचेजय
श्रीकरवालहि। ज्यों अलिनीजलजात
सनालहि। ज्योंवरषाहरषैविनुकाल
हि। त्योंद्रगदष्योइचाहैगुपालहि॥ ६३॥
सवैया॥ संदनुदीकनहातकुपीदीनहु
रिकैरसवकहुषकुंदनु। कुंदनुजानि
नहीजिनकीमतिनांसकहावतहैनं ॥ ८५॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

164

रमंदनु। फंदनुपंडुकेपूतनिकीरतिका टिकैरेमहिमादनिकंदनु। चंदनुचेरी कोंअंगचढावतदेवअदेवकहैजग वंदनु॥६४॥चौपही॥सुरतरवरमेंरंभा वनी।सुरतरवरमेंरंभावनी।सुरतरंगि नीकरकिंकिनी।सुरतरंगिनीकरकिं किनी॥६५॥श्रीकंठउरनवासुकिलस तुसर्वमंगलमार।श्रीकंठउरगवासु किलसतुसर्वमंगलमार॥६६॥सवै या॥दूषनदूषनकेजसभूषनभूषन। अंगनकेसबमोहैं।ग्यानसपूरनपूरन केपरपूरनभावनपूरनिजोहैं।जीपर मानंदकीपरमापरमानंदकीपरमाक हिकोहैं।पातुरसीतुरसीपतिकोअवरा तुलसीतुलसीपतिमोहै॥६७॥इहिवि धि।औरोजानिजोदुष्करजमकअने क।कहिजतुचितकवितुअव।सुनिजनु सहितविवेक॥६८॥इतिश्रीमहिविधि भूषनभूषीतायांकविप्रियायांचित्रा लंकारवर्णनंपंचदशमःप्रभावः॥

कवि०
॥८२॥
165

१५॥ इति श्रकार समाप्तः॥ अथ चित्रा लंकार वर्णनं॥ दोहरा॥ केसव चित्र स मुद्रमें। बूडत परम विचित्र। ताके बूंद क केकनैं। वरनतु हों मुनि मित्र॥१॥ अ धऊर्ध बिनु बिंदजुत। जति रस हीन अपार। बधिर अंध गन अगन के गनि जन अगन अविचार॥२॥ केसव चि त्रकवित्त में। इन के दोष न देषि। आष रमोह्टे पातम्हेर। विवध जुए के लेषि॥३ अनिरति मति गति एक करि। ब कुवि वेक जुत चित्त। श्रौं न होइ जति भंग मों वरनों चित्र कवित्त॥४॥ अथ निरोष्ठ क वर्णनं॥ दोहरा॥ पटतन लागे अ धर सों। अध रूप वरनु त्यों मंडि वरनौं एक विवर्नु अरू। औ रूप चव वर्हि मंडि ॥५॥ सवैया॥ लोक लीक लीका ला जलील लसनंद लाल लोचन ललि तलोल लली लाक निकेत दें। सोह नि कोसा चुन मकोचुका फूलाक फूकौ रे तमुष सषीताकोह्नौ हुषु देत दें। के

॥८२॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

166

सोदासकाहूसकनेरुकैसेकुकेकारिक। सअंगरगंरानेरंगअंतअनिसतदें। देषि देषिहारकीहरितताहरननैंनिदेषेना हीदेषतदैंहियहरैंलेतदैं॥१॥अथमा त्रारहित॥दोहरा॥एकैंसुरूजहांवरनि यें। अद्भुतरूपअवर्न। कहियेमात्रारहित यहै। मित्रचित्रआवर्न॥६॥ जगजगमग तभगतजनरसवसभवहरसदकरक रतअमलचर। कनकवसनतनअस नअनलवडवटदलवसनअसनथ थलकर। अजरअमरअजवरदचर नधरपरमधरममगचरनसरनपर। अ मलकमलवरवदनजसहरनमरनम दमदनकदनहर॥२॥अथएकाक्षरा दिशाह्ववर्णनं॥दोहरा॥एकआदिदेवर नवकु। वरनकुसवदवनाश। अपनेअ पनेंबुद्धिवल। समुझिकहतकविराइ ॥७॥गोगागंगागीयआ। सीधीहीभीभा नु। भूविस्वषजाधोंहिहिहह। नोनांसामुं। मानु॥८॥अथदक्षर। रमाऊमावानीस हरिहरविधिसंगवांम। छमादयासीतास

कवि
॥८३॥
167

नी कीनी रामी राम॥६॥ तीन अक्षर वर्नन

मीधर भूधर केसिहा॥ केसव जगत प्रमान। माधव राधव कंसहा। पूरन पुरष पुरान॥१०॥ अथ चतुराक्षर वर्ननं॥ सवैया

सीतानाथ सत्यनाथ रघुनाथ जदुनाथ ब्रजनाथ दीनानाथ वेदगाति। देवदेव दक्षदेव विश्वदेव व्यासदेव वेददेव वसुदेव दिव्यदेव देव दीनरति। रनवीर ब्रजवीर ब्रजवीर वलवीर खीर राम चंद्र चारुमति। रामापति रमापति रामापति राधापति रमपति रासपति रसापति॥३॥ अथ

षड्विंशत्यक्षरमय वर्णनं॥ दोहरा॥ अक्षर षड्विंशत सवे भाषा वर्नि वनाउ। एक एक घटिए कलगि। केसोदास सुनाउ॥११॥ चोरी माषन कूधु धिउ ढूंढत दधि गोपाल। दोरनु जल थल भटकै फिरि डगरत छवि सों लालु॥१२॥ पचीस वर्न वर्णनं॥ चरी चरन हाथ ले रीझि चढ्यो गात। विषु लुछित घर दंभ सों सुकृत वपुषन मात॥१३॥ अथ चोवीस अक्षर वर्णनं॥ अघ वकु सकट प्रलंबु हति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

168

मान्यौगजचानूर। धनुषभांजिभिदूदौरि। फूनिकंसमथिमदमूरु॥ अथतेईस अछर वर्णनं॥ सूधीजसुमतिनंदपुनि। भोरगोकुलनाथ। माषनुचोरीदूरहहु। पठयोकोन। केसाथ॥ २३॥ वाईस अछर वर्नन। हरिडिठवलगोविंदविभु। मायाकासीनाथ। लोकपविठ्ठलसंषधर। गरुरधजरघुनाथ। २२ अथइकाइस अछरवर्णनं॥ जैसेंतुमसव जगरचे। दयेकालकेहाथ। ऐसेंअवदुषवेलकेढिवल। केमेंकरदडिटनाथ। २१ वीस अछरवर्नन जाकेंजगसमुपाइसव॥ निपरपुरानपुकारि। मेरेचितवेचुभिरहे मधुमर्दनमुरिहारि॥ २०॥ उनईस अछर वर्णनं॥ कोजानैकोकहिगयो। राधासौंयहवात। करीजुमाषनचोरछलि। ऊतवडेपरमात॥ १९॥ अगारह अछरवर्ननं। जननजमायोनंदतरु। फूलतनंदकुमार। षेडतकसकतजीनअव। कपटकठोरकुगार॥ १८ सत्रह अछरवर्णनं॥ वालाषनगोरमदरे। वडेभयेहमचित्त। तिमकेसवहरिदेहक। जोनमिलैाअवमित्त॥ १७॥ सोरह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कवि
॥८४॥
169

अछरवर्णनं॥ तुमधरधरमदरानअति व लिमुकसेनंदलाल। जाकीमतितुमहीलगी कहाकरेसोवाल पन्नरहअछरवननं जोकोपंथदसुनें। दृढतंदोलतसोफ तोसिस्योजगुबृद्धिदे। वांकेअसुवनिमांफि॥१५ चौदहआंकवर्ननं। ढंकाढांकीहिनकरो। ढकाढकोअरुरैने। यामेंकेसोकोनसुपुषस्वरुपिकवैनि॥१४॥ तेरहआंकवर्ननं॥ कह्योपरीयामेंसुनो। मनुहीनोदरिदाथ। तादिनतेंवनवनफिरे। कोजानेंकिहिसाथ॥१३॥ तेरहआंकवर्णनं॥ कह्योपरीयामेंसुनो। मनुहीनोदरिदाथ। तादिनतेंवनवनफिरे। कोजानेंकिहिसाथ॥१३॥ बारहआंकवर्णनं॥ काहूवरनिकेंकहेजीजुरिगयोसनेहु। छूटेंतेंछूटेनहीं कछकैरोअबलेहु॥१२॥ इग्यारहअछरवननं बेसबसोदेकाल्हिकी। विसरीगोकुलनाथ। करीजुमांपनचोरठलि। उठतवेंडपरभात॥११॥ दसअछरवर्णनं। लेवाकेमनमांषनें। कहाकरोगेबात॥१०॥ नौअछरवेननं॥ खुंवनिचुगेअंगारगन। जाकोकरि

कठकाढूपेंजात जोकोउजियजानिहे २

170

जियजोरु सोईजौजोरेजियै। केसीकरिसु
चैकोरु॥ ९॥ अष्टाछरवर्ननं नैननिनैवहु
नैंकफूं कवलनैंननवनाथ। वालनिकेम
नसोदिलै वेचेमनमथदाथ॥ ८॥ सप्ताछ
रवर्ननं॥ रामकांमसवुसिवकेरे। विवुध
कांमवसिसाधि कांमरांमवरवसकेरे। के
सवश्री आराधि॥ ७॥ कटाछरवर्ननं॥ का
मनांहिनैंकामके। सवमोहनकेकाम। व
सिकीनानुसवनिको। कावामाकावांम॥ ६
पंचाछरवर्ननं॥ कमलनैंनकैनतमें। नैंननि
कोनोकोनानाम। कोंनकोनसोंनेसुके। मि
लैसुस्यामसकाम ५॥ चतुराछरवर्ननं॥ व
नमालीवनमेंमिलै। वनीनलिनवनमा
ल। नैंनमिलीमननांमिली। वेनैंनिमिली
नवाल॥ ४॥ तीनाछरवर्ननं। लगालगा।
लौंयोंलगी। लगेलागुलेलाहु। गेलेग
लगोपीलयों। पालागोगोपाल॥ ३॥ द्वैअछ
रवर्ननं॥ हरिहीरारहीहस्यो हेरीरहीहा।
हारि। हरहरहोंहाहाकरो। हरेहरेहरिरारि
॥ २॥ एकाछरवर्ननं। गोगागीगोगंगागज।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जीजैजीजीजीजाजि।रूरेरूरेनूरिहा।दा
हाकूंकूंदाहि॥१॥अथाछरवर्णनं॥केकी
कोकाकीकका।कोकूकाकोंकोक।लोलि
लालिलीलालली।लालालीलालोल
॥१॥एकाछरवर्ननं॥दोहा॥नीनैंनीनैंनें
निनें नोननेनेंनें।नानानानानुनैंन॥
नुनूनूनैनन॥२॥अथ वहि लीपिका अं
तर लापिका॥उत्तरुवरनन वाहिरा व
हिर्लीपिकाहोय।अंतरअंतरलापिका
यहजानेंसवकोइ॥३॥अछरूकोनुविक
ल्पके।जुवतिवसतिकिहअंग वलिरा।
जाकोनेंछल्यो।सुरपतिकेप्रसंग वलि
ध॥वामनवर्ननं॥अथअंतरालापिका॥
कोनजातीसीतासती।दईकोनकोंतात
कोनग्रंथवरनोहरी।रामायनअवदात
४॥अथगुपोतरलापिका।उत्तरजाको
अतिदुरयो दीजेकेसोदास।तासोंराहतु
नरकहे।वरनकुवुधिविलास॥५॥सवै
या॥धनतेंसिषलेंसुबुद्धकेसिगारीसिं
गारूनकेसवएकुव च्यो॥पहिरायमनो॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

172

हरहार हियें सब गातु सुषसमूह सच्यो । दर
साइसिरी करदयुनले कपिकें जरज्यों व
फूनाचन च्यो । सषिषान षवावति ही कि
हिं कारन को पुपियो पर नारिन च्यो ॥ ७ ॥ हा
स विलास निवास यों के सब केलि विधा
न विधानदुनी में । देवरजे गपिता सुत साव
रहे सुष ही में वात सुनी में । भाजन भोजन
भूषन भौंन भरे जस पावन देवधुनी में क्यों
सब जामिनि रावति कांमिनि कें न करें सु
भगान गुनी में ॥ ८ ॥ नाहनये नितनेहन
यो पर नारि ति के सब क्यों फून जीवे । नृ
प अन्नूप सुभूपर भूप सुआनंद रूप निही
गुन गावें । भौंन भरी सब संपति दंपति श्रीप
ति ज्यों सुषसिंधि में सोवें । देवसो देव रूप्रा
न सो पूतु सुको न दमासु दती जि हि रोवें ।
६ ॥ अथ एक अनेक उत्तर वर्णनं ॥ एक ही
उत्तर में जहां । उत्तर गूढ अनेक उत्तर एका
नेक यकु वरनत सहित विवेक ॥ १ ॥ उत्तर रू
एक समस्त में । व्यस्त अनेक नि जांनि । जो रि
आदि के वरनसों । क्रम ही वर्न वषांनि ॥ २ ॥
कहां सजन वावति कहा सुनि गोपी मोहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

।कवि॰
॥८६॥
173
हे

त। कहौंदायुकोनांमु। कवितमैंकहिजतु
कोहित। कोप्यारोजगमांझि। कहाछुतुला
गआवतु। कोवासरकोंकरतु। कहासं
सारहिभावतु। कहिकादिदेषिकायरक
पतु। आदिअंतरकौंसरतु। इहउत्तरके
सोदासहियसवैजगतुसोभाधरतु॥१॥
मिलेआदिकेचरनसों। केसोकहिउचा
रि उत्तरव्यस्तसमस्तको सोकरकीअनु
हारि॥७॥ कोसुभअरवरकवनजुवतिजो
घनिवसिकीनी। विषयसिद्धिसंग्राम। रा
मकहिकौनेदीनी। कंसराजदुवंस। वस
तकैसेकेसवपुर। कहुकौनजुवतिजग
जननिकी। कमलनयनसुठमवरनि
यवेदपुराननिमैंकही। सनकादिक
संकरतरूनि॥२॥ कोलकोदेधरीधराधी
रजधरमहि। तमारिकिहिसमलवल
देवजोरजवसों। जाचकहाजगुनगहि
परकेसोदासकोनेगायारामुपजुगीतसु
मरवसोंकहांकौनकुंतीमातावातवात
नेदवनसों। वांमग्रामपूरिकरिदेवकां
मपूरिकरिमोदहरामकौनसोंसंग्रामक ॥८६॥

174

सलवसै॥ ९॥ दोहरा॥ एकोएकुत्तजिवर
नवकु। जुगजुगवर्निविषानि। उत्तरुव्यस्त
गतागतनि। एकसमस्तनिआनि॥ १०॥ स
वैया॥ कैदरसकैसैलईलंककैहैंपीतप
टहोतकेसोदासकोनसोभिजेसभामेंज
न। भोगनिकोभोगवतुकौनेंगनेंभाववंत
जीतेकोजतिनिकोनुदेप्रमानकेवरन॥
कौनेंकरीसभाकोनुवरीअजीतजगगा
वेकहागुनीकैहैंभरेहेजुजंगतन। काहे
मोहेपसुकहाकेरतपीतपुईइजीतज
वसतकहोनवरंगराइमन॥ ११॥ दोहरा॥
केसोदासविचारिकै। नव्यपदारथआनि
उत्तरव्यस्तसमस्ततें। कुवोगतागतजांनि
॥ ११॥ सवैया॥ दासनिसोंपरसोंपरमांनि
सोंउपदेसुकहाकहिनेमवसेकहिनीति
तजेभय। आपुविषैंनसकैंचांकहिजेविनु
काहिभयेछितपालनिकेछय। प्याउको
वाल्याकहाजमकेसवकेआहिमधुकिया
जनमीजय॥ १२॥ कैग्रहिकेमधुहत्यो प्रेमु
[illegible]किंहिंपलुहतुप्रभुमनु। कहांकमल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

क॰प्रि
॥८७॥
175

कोग्रह सुनतमोहतकिमृगगन। कहा
वातसुषसिकविनकौतिककहिवर्नेन
किहिंसैयेपितुमातकह्योकविकेसवस
रवन॥१२॥दोहा॥ उत्तरव्यस्तसमस्तसैं
कुयोगतागतआनि। एकदीअर्थसमर्थम
ति। केसौदासवषांनि॥१२॥सोरठा। कंवव
सतकौसात। कोककहावकुविधिकहै
कोकहिजैसुरतांत॥कोकामीहितसुर
तरसु॥१३॥ अथसासनोत्तरलछनं। दोह
रा॥ तीनितीनिसासननिको। इकुइक
उत्तरुआनि। सासनउत्तरकहतनिहि। बुधि
जनताहिबषांनि॥१३॥कवित्तु॥चौकचा
रुकरिकपटारुधरिआरुवाधुधरि। सुनि
मोसुकरिषगु। षालिधरुसिंचहिनिचो।
लुवरि। दयकुदाइदेसुरुउदातुगुनगाउ
रंककौ। जानभाउसुवधाम। धाउधनला
उलंककौ। यहकहतमधुकरसाहिक
हंरह्योसकलदीवानुहवि। तवउत्तरके
सोदासदियघरीनपंन्यौजानुकवि॥१
४॥ अथप्रश्नोत्तर। दोहरा॥ जेईआष

॥८७॥

176

रप्रेम्नके।तईउत्तरजानि॥ इहिविधिप्रश्नो
तरसदा।करैसुबुद्धिनिधानु॥१४॥ कोकुव
डग्राहीसुभटु।कोऊमारूवनितिवंतु।कोका
हियससितैंदुखी।कोमलमनकोसंतु॥१५॥
कालिकाहिपूजेअली।कोकिलकंठबदनी
क।कोकहियकामीसदा।कालीकीहेली
क॥१६॥ अथगतागतलछन॥दोहा॥उधो
उलटोवांचिये।एकहीअर्थप्रमांन।कहत
गतागततहिकवि।केसोदाससुजांन॥१
७॥सवैया॥मासमसोहेसजेवनवीननवी
नवजेसहेसोमसमा।मारलतातिवनाउ
तिसारिरिसातिवनावितालरमा।मानव
हीरहिमोरदमोददमोदरमोहिरहीवन
मामालवनीवलकेसवदाससदावसके
लवनीवलमा॥१८॥दोहा॥उलटोसूधो
।वाचिये।औरहीऔरहीअर्थ।एकसवैया
मेंसुकवि।प्रगटतदोइसमर्थ॥१९॥सवैया
मेंननमाधवज्योंसरकेसवकेसवरेषसुवे
बसुवेसभवे।नैनवकीतविजीतरुनीरुचि
चीरसवेनिमकालफले।तेनसुनीजसभी
रभरीधरधीरबरीतिसुकानवहे।मैंनमनी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कविप्रि ॥८८॥ 177

गुरुचालिचलैसुभसावनमैंसरसीवलमैं २६ **अथमत्रगति॥** अश्वगति। त्रिपद कपाटबंधु। हारबंध। सर्वतोमुषवनेनन॥

अथत्रिपद॥ इडजीतसंगीतले किएराम रसलीन छुडगीतसंगीषलै भएकामव सदीन १९०॥ अश्वगति

ई	जी	स	त	कि	रा	र	ली
ड	त	गी	ल	ए	म	स	न
छु	गी	स	ष	न	का	ब	दी

अश्वगति

ड	ड	जी	त	स	गी	त	लै	कि	य	रा	म	र	स	ली	न
छु	ड	गी	त	सं	गी	ष	लै	भ	ए	का	म	व	स	दी	न

गोमत्रकाबंध॥

ई	डी	सं	त	कि	रा	र	ली	·
ड	त	गी	ले	ए	म	स	न	·
ड	त	गी	लै	ए	म	स	न	·
छु	गी	सं	ष	न	का	व	दी	·

कपाटबंध॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

178

अश्वगति

इ	इ	जी	त	सं	गी	त	ले	लै
कि	ए	रा	म	र	स	ली	न	[illegible]
छु	ढ्र	गी	त	सं	गी	घ	ले	
ल	ए	का	म	व	स	दी	न	

राजतिलंग
रसविरसस
ति सरसरा
समेव पगप
प्रतिद्रुतिवट
तिगतिवय
नवमनमति
देव सुरनर
वरनसुसव
धन विरच
तिमुचिरस

रा	जतिलं	ग	रसवि	र
स	अतिस	र	ससर	स
र	समेव	प	गपग	प्र
ति	द्रुतिव	ट	तिगति	व
य	नवम	न	मतिदे	व
सु	वरन	व	रनसु	सु
वे	धनवि	र	चतिस	चि
र	रसली	न	ननम	न
प्र	गटन	वी	नमति	न

लीननननमनप्रगटनमतिनवरंगराइप्रवी
न २

परमधर्महरिह रिहीकेसवसुनेनैंना
पुरान मनमन रहु जियज
जासुसुनत
नञीन

न री पु नो व स के ही

आ न व नै से सु ज य जि हु राम ध प

मनमनजानैना मैहरिहरि

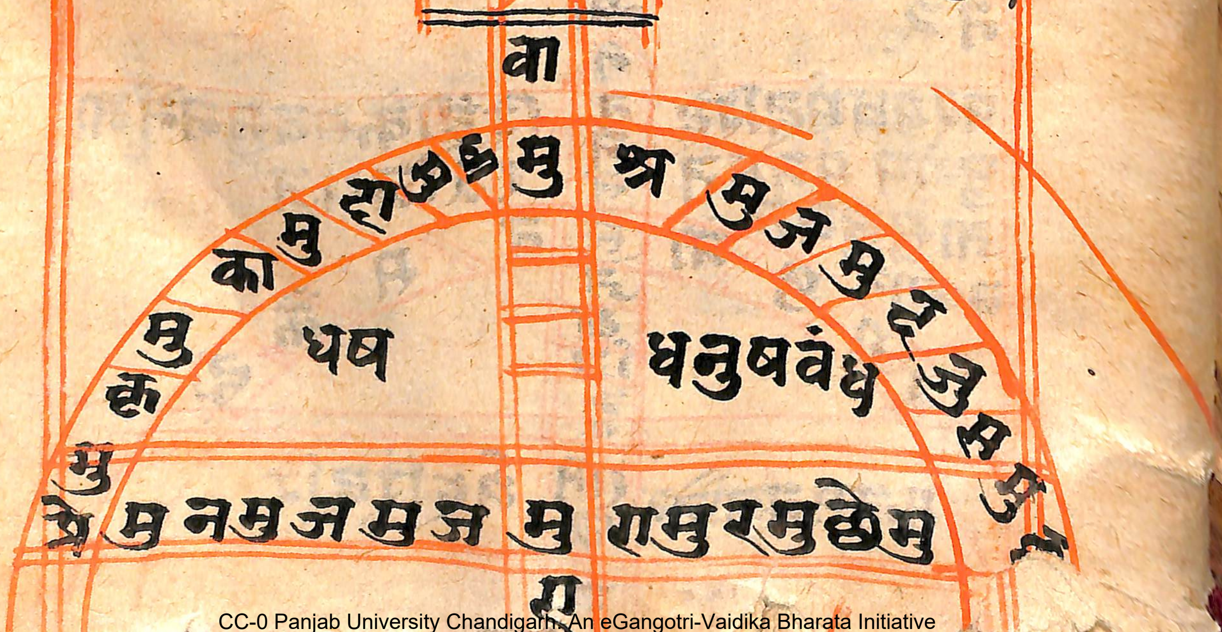
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

179



जामजरागेसुतो
नोहरहेअभया
दुषुदतरयाल
या जामजगेवुम
तमीततुगेयसया १
हमेंयावतदेषोवे
रामुरामुरमुछेमु
म अमुधामरा
मुनमुजमजम

हितुचोरटीकामम
मीतअमीतनको
कदावेतहीनद
मीतसवेसुवेसं
सत्पकहोकदाफ
ईजिनरेषीकया
छेमुसमुरमुज
सुकामुक्रमुत्रे
रम चमुवामु १



CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

180



रा	का	रा	ज
मा	स	मा	स
रा	धा	मी	त
सा	ल	सी	सु

रा का रा जै रा
का रा मा स
मा स स मा स
मा रा धा मी
त त मी धा रा
सा ल सी सु
सु सी ल स २

नरसरवश्रीसदातनमनसर
सरससुरवसिकरन नरकसिं
वरसुसकलसुषदुषदीनजी
वनमरन नरमनवजीनदीनि
रहसदयममतदरनन
रहतमतिमयजगतिकेस
वदासश्रीवरसरन् १

नु	त	मा	ध
व	मा	रं	गि
स्वां	त	हं	स
ह	र	ह	र

नुतमाधवमारंगीस्वांत
दंसहरदर रहरहसरं
तस्वांगिरंमाधवमातवः ।१। रामचमजना दाता मायात्मा
वनसंरव राजमानसमायासंवदास्मावन
तावर

रा	म	च	म
ज	ना	दा	ता
मा	या	या	व
न	सं	व	र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

181



हरिहरिहरि
रिहरिहोरि
डुरिफि
रिफि
रिक
रिक
प्रारि
मामि
रिजारि
पारिया
हाम्र
रितारि



रामरामरमुछेमुढमुममुद
मुजमुभमुधामुदामुकामुक्रमुप्रेमनमुजमु
जमुरमुभ्रमुवामु॥१॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative



मुरलीधरमुषद्दरमिमु
षसंमुषिमुषिश्रीधम
मुसुनिसारमनैंनामि
षंजीमुषपूजेकामु १



एद्धरिद्धरिद्धरिगरिद्धौरदु
रिफिरिफिरिकरिश्र्या
रिमरिमरिज्ञरिजरि
द्धारिपरिपरिद्धरिश्र्य
रितनारि १ कमलबंध



रामुरामुरमुछेमु
छमुसमुदमुदमु
जमुजमुदमुष्म
मुवामु॥ १
कमलबंधः

183

त्रिपद

ग	दे	न	दे	ग	प	स	स	म	धी
म	व	र	व	ति	र	ध	न	द	र
वा	दे	गु	दे	ग	प	३	र	हृ	धी

गम	नर	गति	सध	मद
देव	देव	पर	नर	धीरि
वाम	गुर	गति	कुध	हृद

गम	वन	देव	पित	मध	नम	धी
दे	र	ग	र	र	द	र
वाम	वगु	देव	पित	मध	[illegible]	धी

नद



गमदेवनरदेवगतिपरसधनरनमदधीर

वामदेवगुरुदेवगतिपरकुधरनरहृदधीर।

कामधेनुदेव्यादिअरु कल्पवृक्षपरजंत। वरनतकेसोदासकवि चित्रकवित्तअनंत॥१९॥
इहिविधिकेसवजाइकुं चित्रकवित्तअपार। बरननपंथबताइमैं दीनौंबुधिअनुसारि॥२॥
सुवरनजटितपदारथनि भूषनभूषितमांनि। कविप्रियादैकविप्रिया कविसंजीवनिजानि॥३॥
पलुपलुप्रतिअवलोकिबो सुनिबोगुनिबोचित्त। कविप्रियायौंरछियो कविप्रियाज्योंमित्त॥४॥
अनिलअनलजलमलिनतें विकलपलनितेंनित्त कविप्रियाऔंरछियौं कविप्रियाज्योंमित्त॥५॥
केसवआरदभावसुन सुवरनमयसुकमार। कवि[illegible]गकेजानिजकु मारदअंगसिंगार॥६॥
इतिश्रीमद्विविधभूषनभूषितायांकविप्रियायांचित्रालंकारवर्णनंनामषोडषप्रभावः १६ इतिकविप्रियासंपूर्णम् मीतीभाद्रवासुदि ५ संवत् १८८६॥लिषतंभटजीचुंनीलाल राजगढमध्येलिषायतकवरजीधर्ममूरति[illegible]विरदबकसजी श्रीगणेशायनमः

नं: ॥
62
184
PUNJAB UNIVERSITY LIBRARY
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

P. U. L.

Form 10

Date Loaned

This book was taken from the Library on the date last marked.

It can be retained for the period permitted by the rules governing the class of your membership.

A fine of one anna will be charged for each day the volume is kept overtime.

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

Form 20

PANJAB UNIVERSITY LIBRARY

1. Books may be retained for period not exceeding one month by Fellows, Members of the Faculties and Teachers of the University and Colleges and for not more than two weeks by other classes of members.

2. Books may be renewed on request at the discretion of the Librarian. This privilege does not apply to books issued with special permission of the Librarian, as well as periodicals.

3. In case the loan of the book is not renewed, failure to return the book in time will render the borrower to a fine from the date when book was due.

4. Dog-earing the pages of a book, marking or writing therein with ink or pencil, tearing or taking out pages, or otherwise damaging it will constitute an injury to a book.

5. **Any such injury to a book is a serious offence. Unless the borrower points out the injury at the time of borrowing the book, he shall be required to replace the book or pay its price.**

Help to keep the book fresh and clean.

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative